बी.एड. द्वितीय वर्ष

वाणिज्य शिक्षण

डॉ. प्रभात शुक्ल

शिक्षक शिक्षा विभाग
स्वामी शुकदेवानन्द महाविद्यालय,
मुमुक्षु आश्रम, शाहजहाँपुर, उ. प्र.।

अनुक्रमणिका

यूनिट 1 वाणिज्य शिक्षण में सहसम्बन्ध 1 – 3
Correlation of Commerce with Other Subjects

1. वाणिज्य विषय में सहसम्बन्ध का अर्थ
Meaning of Correlation in Commerce
2. अन्तःविषयक दृष्टिकोण की आवश्यकता और महत्व
Need and Importance of interdisciplinary approach
3. सहसम्बन्ध के प्रकार
Types of Correlation
4. वाणिज्य विषय का अन्य विषयों से सहसम्बन्ध
Correlation of Commerce with other subjects

यूनिट 2 वाणिज्य शिक्षण में मूल्यांकन 4 – 56
Evaluation in Teaching of Commerce

1. मूल्यांकन का अर्थ (**Meaning of Evaluation**)
2. मूल्यांकन के कार्य (**Functions of Evaluation**)
3. मूल्यांकन के सिद्धान्त (**Principles of Evaluation**)
4. मूल्यांकन का महत्व (**Importance of Evaluation**)
5. निबन्धात्मक परीक्षण (**Subjective/Essay Type Tests**)
6. वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का अर्थ (**Meaning of Objective Tests**)
7. दक्षता आधारित मूल्यांकन (**Competency Based Evaluation**)
8. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (**Continuous and Comprehensive Evaluation**)
9. मूल्यांकन के उपकरण (**Tools of Evaluation**)
10. मूल्यांकन की तकनीकें (**Techniques of Evaluation**)
11. अच्छे प्रश्न पत्र की विशेषताएँ (**Charateristics of a good questiona paper**)
12. मूल्यांकन प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका (**Role of Teacher in Evaluation Process**)

यूनिट 3 वाणिज्य शिक्षक 57 – 65
Teacher of Commerce

1. वाणिज्य अध्यापक एवं उसकी विशेषताएं और क्षमताएं
Teacher of Commerce and its Qualities and Competencies
2. वाणिज्य अध्यापक की योग्यता
Qualifications of Commerce Teacher

3. शिक्षा प्रणाली में शिक्षक की स्थिति
Place of Teacher In Educational System
4. आदर्श शिक्षक के गुण
Qualities of an Ideal Teacher
5. माध्यमिक विद्यालय में वाणिज्य शिक्षक की भूमिका तथा उत्तरदायित्व
Role and responsibilities of a commerce teacher in secondary school

यूनिट 4 वाणिज्य शिक्षण में प्रबन्धन 66 - 94
Managerial Aspects in Teaching of Commerce

1. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का अर्थ एवं परिभाषा
Meaning and Definition of Co-curricular Activities
2. पाठ्य सहगामी क्रियाओं का महत्व
Importance of Co-curricular Activities
3. पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रकार
Types of Co-curricular Activities
4. पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों का प्रबंधन
Management of Co-curricular Activities
5. वाणिज्य कक्ष/प्रयोगशाला का प्रबन्धन
Management of Commerce room/laboratory
6. समुदाय संसाधनों का प्रबन्धन और उद्योग-विद्यालय सम्बन्ध
Management of Community resources and industry-school linkages

यूनिट 5 वाणिज्य शिक्षण में समसामयिक मुद्दे और चुनौतियाँ 95 - 100
Contemporary Issues and Challenges in Teaching of Commerce

1. वाणिज्य एक व्यावसायिक विषय
2. **Commerce as a vocational subject**
3. वाणिज्य में अर्न्त-सांस्कृतिक दृष्टिकोण और मुद्दे
4. **Cross-cultural perspectives and issues in commerce**
5. वाणिज्य शिक्षण में विभिन्न चुनौतियाँ
6. **Various Challenges in teaching of commerce**

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची 101

वाणिज्य शिक्षण में सहसम्बन्ध
(Correlation in Commerce Teaching)

1. वाणिज्य विषय में सहसम्बन्ध का अर्थः
(Meaning of Correlation in Commerce):

शिक्षा जगत में सहसम्बन्ध की शुरूआत करने का श्रेय जर्मन शिक्षा शास्त्री जे. एफ. हरबर्ट (जॉन फ्रेड्रिच हरबर्ट 1776-1841) को जाता है। जिन्होंने आत्मबोध के सिद्धान्त (Principle of Apperception) का प्रतिपादन किया। उन्होंने बताया कि समस्त ज्ञान का विकास तब ही सम्भव हो सकता है जब कई विषयों को सम्बन्धित करके पढ़ाया जाये। जैसे वाणिज्य में पाँच वर्ष के उत्पादन को प्रदर्शित करने के लिए ग्राफ द्वारा दण्ड आरेख आदि के द्वारा समझाया जा सकता है तो वाणिज्य के साथ सांख्यिकी की जानकारी होने पर समझने में आसानी रहेगी।

हरबर्ट के शिष्य जिल्लर (Ziller) ने हरबर्ट के सिद्धान्त में संशोधन करके केन्द्रीयकरण का सिद्धान्त (Principle of Concentration) प्रस्तुत किया। इसमें उसने बताया कि किसी एक विषय को केन्द्र मानकर अन्य स्कूल विषयों का शिक्षण किया जाना चाहिए।

इसके उद्देश्य निम्न लिखित हो सकते है-

1. विद्यार्थियों को मुख्य विषय के साथ-साथ अन्य सहायक विषयों का ज्ञान प्रदान करना।
2. पाठ के विशिष्टीकरण के दोषों को दूर करना।
3. पाठ को सरल, बोधगम्य एवं रोचक बनाना।
4. विद्यार्थियों के श्रम एवं समय की बचत करना।
5. विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम के भार को कम करना।

2. अन्तःविषयक दृष्टिकोण की आवश्यकता और महत्व
(Need and Importance of interdisciplinary approach):

जब किसी विषय को व्यापक अर्थ में समझा या स्वीकार किया जाता है तो इस दृष्टिकोण को अन्तःविषयी दृष्टिकोण कहते हैं। इसमें किसी विषय के ज्ञान की विशेषता, सूक्ष्मता या गहनता के विपरीत ज्ञान की विभिन्न शाखाओं का विश्लेषण तथा संश्लेषण किया जाता है और उसका व्यापक अध्ययन किया जाता है। अर्थात अन्तःविषयक ज्ञान दो या दो से अधिक विषयों को स्वीकार करता है और उनका सम्पूर्ण में अध्ययन करता है जिससे विद्यार्थी को सम्पूर्णता में अध्ययन करने में आसानी रहती है। जैसे- वाणिज्य में अर्थशास्त्र, गणित, मैनेजमेन्ट का अध्ययन किया जाता है, जिससे उसको समझने में आसानी रहती है। अर्थशास्त्र में उपभोग, वितरण, उत्पादन आदि सभी प्रकार की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है और उसका निर्माण प्रबन्धन तथा लेखा जोखा वाणिज्य के अन्तर्गत किया जाता है। इसी प्रकार वाणिज्य में उद्योग व्यापार आदि के

अध्ययन में उत्पादन की विभिन्न मदों में होने वाले व्यय का हिसाब-किताब, यातायात में होने वाले व्यय, उत्पादन में लगने वाले सभी लेखों का ज्ञान बिना गणित के ज्ञान के सम्भव ही नही है। इसी प्रकार जब तक प्रबन्धन का ज्ञान नहीं है आप कोई भी व्यापार उचित प्रकार संचालित नहीं कर सकते।

3. सहसम्बन्ध के प्रकार- (Types of Correlation):

यह सहसम्बन्ध मुख्यतः निम्न दो प्रकार का होता है-

1. एक ही विषय में सहसम्बन्ध- जैसे वाणिज्य के साथ प्रबन्धन, बैंकिंग, व्यापार संचालन आदि का सम्बन्ध।
2. अन्य विषयों से सहसम्बन्ध- वाणिज्य के साथ अर्थशास्त्र, गणित, सांख्यिकी आदि का सम्बन्ध।

4. वाणिज्य विषय का अन्य विषयों से सहसम्बन्धः (Correlation of Commerce with other subjects):

4.1 वाणिज्य और अर्थशास्त्र में सहसम्बन्ध- (Correlation of Commerce with Economics):

वाणिज्य किसी भी देश की अर्थव्यवस्था और उसके व्यापार के बारे में अध्ययन करता है। वाणिज्य के अध्ययन के अन्तर्गत उत्पादन, उपभोग, बचत, विनिवेश, पूंजी निर्माण, विदेशी व्यापार से सम्बन्धित क्रियाएं सम्मिलित होती हैं। इस दृष्टि से वाणिज्य का क्षेत्र बहुत व्यापक माना जाता है। इसके अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों को व्यापार, उद्योग, बैंकिंग व्यवस्था, आयात-निर्यात लेखांकन आदि से सम्बन्धित क्रियाओं का ज्ञान प्रदान करना होता है ताकि विद्यार्थी किसी भी क्षेत्र में अपने जीवन का विकास करने के योग्य हो सकें।

अर्थशास्त्र के अन्तर्गत भी इन्हीं पक्षों का अध्ययन किया जाता है। यह मानवीय व्यवहार के बारे में अध्ययन करता है जो अधिक सामाजिक, राजनीतिक सन्दर्भों से जुड़ा होने के कारण अर्न्तक्रियात्मक पक्षों को उजागर करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह मनुष्य की धन सम्बन्धी क्रियाओं का अध्ययन करता है जो व्यक्ति के कल्याण के साथ साथ व्यापार, बैंकिंग, मांग-पूर्ति, बचत, विनिवेश आदि से सम्बन्धित पक्षों को अध्ययन में शामिल करता है। अर्थशास्त्र के अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य कृषि उत्पादन उद्योग, आर्थिक संवृद्धि और विकास आदि से सम्बन्धित माना गया है। ताकि किसी भी देश का आर्थिक विकास किया जा सके।

भारतीय और विदेशी व्यापार, मौद्रिक व्यवस्था, ग्रेशम का नियम, बैंकिंग व्यवस्था, साख सृजन, मौद्रिक एवं वित्तीय नीतियां, विभिन्न औद्योगिक संगठनों का स्वरूप और उद्योगों का विकास सभी दोनो ही विषयों के अन्तर्गत शामिल किए जाते हैं और एक विषय का अध्ययन दूसरे विषय

के अध्ययन में सहायता प्रदान करके विषयवस्तु के अवबोध को सरल तथा सफल बनाता है। इनको आधार मानते हुए कहा जा सकता है कि वाणिज्य और अर्थशास्त्र में घनिष्ठ सहसम्बन्ध है।

4.2 वाणिज्य और गणित में सहसम्बन्ध- (Correlation of Commerce with Maths):

सामाजिक जीवन में वाणिज्य एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मानव जीवन में प्रतिपल वाणिज्य का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। उत्पादन, लागत, निर्धारण, विज्ञापन, भावी योग का निर्धारण और तदनुसार उत्पादन की मात्रा का निर्धारण, लाभ अनुपात, लागत विधियाँ तथा लागत विश्लेषण, गतवर्षों के उत्पादन, वर्तमान लागत उत्पादन, लागत तथा लाभों की तुलना तथा इनका हिसाब-किताब रखना, व्यापार में सहायक यन्त्रों यातायात, संवाद, वाहन के साधन, बैंक और बीमा आदि की प्रगति का लेखा-जोखा रखना सब वाणिज्य के अन्तर्गत ही आते हैं।

वाणिज्य की इन सब महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं में गणनाओं का महत्व बढ़ता रहा रहा है और उसके लिए गणितीय ज्ञान अति आवश्यक है, बीजगणित के सूत्रों, प्रतीकों, रेखा चित्रों एवं समीकरणों के द्वारा वाणिज्य की गतिविधियों को संक्षेप में व्यक्त किया जाता है। हिसाब किताब रखना जिसे वाणिज्य में लेखा कार्य कहते हैं पूर्णतया गणित के ज्ञान पर निर्भर करता है। लाभ ज्ञात करना एवं उसकी तुलना करना गणितीय प्रक्रिया है। वर्तमान वाणिज्य युग में गणित का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है जैसे उत्पादन की मात्रा निर्धारित करने के लिए मांग का पूर्वानुमान गणितीय ज्ञान द्वारा ही सम्भव है। इसी प्रकार मूल्य का निर्धारण भी बिना गणितीय ज्ञान के सम्भव नहीं है। बीमा कम्पनी, यातायात का किराया प्रतिकिलोमीटर भाड़ा, विदेशी विनिमय दर यह सभी गणित के बिना सम्भव नहीं है। अतः कह सकते हैं कि वाणिज्य और गणित में परस्पर सहसम्बन्ध है।

4.3 वाणिज्य और प्रबन्धन में सहसम्बन्ध- (Correlation of Commerce with Management):

वाणिज्य और प्रबन्धन का घनिष्ठ सहसम्बन्ध है। वाणिज्य में उद्योग, व्यापार आदि का अध्ययन किया जाता है और प्रबन्धन में व्यापार का कुशल संचालन कैसे किया जाए इसका अध्ययन किया जाता है साथ ही बड़े तथा लघु उद्योगों में होने वाले सामान्य से सामान्य कार्य विधि जैसे उत्पादन, वितरण, निर्माण प्रक्रिया, यह सभी वाणिज्य के अन्तर्गत आते हैं और इनका संचालन प्रबन्धन के अन्तर्गत। अतः वाणिज्य और प्रबन्धन में परस्पर सहसम्बन्ध है।

वाणिज्य शिक्षण में मूल्यांकन
(Evaluation in Commerce Teaching)

1. मूल्यांकन का अर्थ (Meaning of Evaluation):

मूल्यांकन जीवन का आधार है और मूल्यांकन शिक्षण प्रक्रिया का अनिवार्य अंग माना जाता है। शिक्षार्थी जितने समय तक अपने शिक्षक के सम्मुख रहता है मूल्यांकन की क्रिया निरन्तर चलती रहती है। बालक का कक्षा में तथा कक्षा के बाहर व्यवहार, उसकी बातचीत, उसके कार्य करने का ढंग आदि मूल्यांकन हेतु सामग्री उपस्थित करते रहते हैं। शिक्षण की सफलता का मूल्यांकन भी बालक में अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तनों के द्वारा ही किया जा सकता है जिसमें शिक्षक यह देखता है कि निर्धारित शिक्षण उद्देश्यों के अनुसार बालक में किस स्तर तक परिवर्तन आये हैं। इसके लिये विभिन्न प्रकार के परीक्षण आयोजित किये जाते हैं जो प्राप्त उद्देश्यों की सीमा निर्धारित करते हैं। मूल्यांकन का आधार शिक्षण व परीक्षण का साथ-साथ चलना है।

दूसरे शब्दों में मूल्यांकन, व्यवहार परिवर्तनों को एकत्रित करने की प्रणाली है जिसके द्वारा इन परिवर्तनों की दिशाओं और सीमाओं का निर्णय लिया जाता है। यह शिक्षा जगत में शैक्षिक उपलब्धियों को जानने का अपेक्षाकृत नवीन प्रत्यय है।

1.1 मूल्यांकन की परिभाषाएँ (Definitions of Evaluation):

NCERT के अनुसार-'मूल्यांकन एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि उद्देश्य किस सीमा तक प्राप्त हुए। कक्षा में दिये गये अधिगम अनुभव कहाँ तक प्रभावोत्पादक रहे है, और कहाँ तक शिक्षा के उद्देश्य पूर्ण किये गये है।'

According to NCERT- "Evaluation is the process of determining the extent to which an objective is being attained the effectiveness of the learning."

टारगेसर्न तथा एडम्स ने मूल्यांकन को इस प्रकार से परिभाषित किया है 'मूल्यांकन का अर्थ है किसी वस्तु या प्रक्रिया का मूल्य निश्चित करना।' इस प्रकार शैक्षणिक मूल्यांकन से तात्पर्य है -'शिक्षण प्रक्रिया तथा सीखने की क्रियाओं से उत्पन्न अनुभवों की उपयोगिता के बारे में निर्णय देना।' शिक्षण एक वस्तु न होकर एक प्रक्रिया है। किसी प्रक्रिया का मूल्य निश्चित करने का आधार उसकी उपयोगिता अथवा महत्त्व होगा। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यवस्तु प्रमुख आधार स्तम्भ होते हैं जिनका केन्द्रबिन्दु बालक होता है जिसके इर्द-गिर्द सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया चक्कर लगाती है। सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया शिक्षार्थी के लिये कितनी उपयोगी रही, यही मालूम करने की प्रक्रिया मूल्यांकन होगी। शिक्षण की व्यवस्था बालक की आवश्यकताओं, रुचियों एवं अभिरुचियों को ध्यान में रखकर की जाती है और बालक में इन्हीं के अनुकूल कुछ सीखने के

अनुभवों (Learning Experiences) का विकास करने का प्रयत्न किया जाता है। मूल्यांकन प्रक्रिया की व्यवस्था इसी दृष्टि से की जाती है कि वांछित व्यवहारगत परिवर्तन की अनुकूलता एवं मात्रा की सीमा को मालूम किया जा सके।

क्विलेन तथा हन्ना के मतानुसार, 'विद्यालय द्वारा हुए बालक के व्यवहार परिवर्तन के विषय में साक्षियों के संकलन तथा उनकी व्याख्या करने की प्रक्रिया ही मूल्यांकन है।' इन्होंने सम्पूर्ण विद्यालय प्रक्रियाओं को ही मूल्यांकन का क्षेत्र माना है। बालक विद्यालय में प्रवेश करता है, अपने जीवन का पर्याप्त समय वहाँ व्यतीत करता है। कक्षा के अन्तर्गत तथा कक्षा के बाहर अनेकानेक बातों एवं वातावरण का उसके व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। उसके सोचने का ढंग, उसका आचार-व्यवहार, उसकी अवधारणाओं व अभिवृत्तियों पर प्रभाव एवं ज्ञानार्जन का मानसिक विकास पर प्रभाव सभी मिलकर उसके व्यक्तित्व पर एक अनूठा प्रभाव डालते हैं। ये सभी प्रभाव उसके अधिगम अनुभव एवं व्यवहारगत परिवर्तन बन जाते हैं जिनका मूल्यांकन कर विद्यार्थी की प्रगति की दिशा निर्धारित की जा सकती है। बालक के प्रत्येक प्रकार के व्यवहार परिवर्तन हेतु कुछ जाँच की जाती है जो उसके व्यवहार परिवर्तन की साक्षी बन जाती है। इनकी व्याख्या के द्वारा इन व्यवहार परिवर्तनों की सीमा व दिशा निर्धारित की जाती है। यह विभिन्न प्रकार की जाँच मापन कहलाती है जिनके आधार पर मूल्यांकन किया जाता है। मापन मूल्यांकन का ही एक अंग है। मापन द्वारा ही मूल्यांकन करना संभव है। मापन संख्यात्मक पक्ष है जबकि मूल्यांकन गुणात्मक पक्ष।

जगदीश नारायण पुरोहित ने मूल्यांकन को इस प्रकार परिभाषित किया है- 'मूल्यांकन शिक्षार्थियों के व्यवहारगत परिवर्तन विषयक साक्षियों का संकलन करने तथा परिवर्तन के स्तर, प्रकृति तथा दिशा के सम्बन्ध में निर्णय करने की प्रक्रिया है।'

कोठारी कमीशन (1966) ने मूल्यांकन की व्याख्या करते हुए कहा है कि, 'अब यह माना जाने लगा है कि मूल्यांकन एक अनवरत प्रक्रिया है, जोकि सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है तथा इसका शैक्षिक उद्देश्यों से घनिष्ट सम्बन्ध रहता है।'

उपर्युक्त परिभाषाओं का यदि विश्लेषण किया जाये तो निष्कर्ष इस रूप में निकलकर सामने आता है 'मूल्यांकन एक निर्णयात्मक प्रक्रिया है जिसमें शिक्षण प्रक्रिया की उपयोगिता उसके द्वारा बालकों में विकसित व्यवहार परिवर्तनों की जाँच के आधार पर निश्चित की जाती है व उसी के अनुकूल परिपक्व (Mature) निर्णय के माध्यम से शिक्षण-प्रक्रिया में सुधार हेतु दिशा दी जाती है।'

2. मूल्यांकन के कार्य (Functions of Evaluation):

शिक्षा में मूल्यांकन कई कार्य करता है। इनमें से कुछ सर्वविदित कार्य हैं विद्यार्थियों को ग्रेड एवं श्रेणी प्रदान करना, उनको वर्गीकृत करना, उनकी तुलना करना और उनकी कक्षोन्नति अर्थात अगली कक्षा में भेजना (उत्तीर्ण करना)। इसका प्रयोग पाठ्यक्रम के पूरा होने को प्रमाणित करने, प्रवेश या छात्रवृत्ति के लिए विद्यार्थियों का चयन करने और विभिन्न प्रयासों में उनकी भावी सफलता का पूर्वानुमान लगाने के लिए भी किया जाता है। तथापि, ये सत्रांत मूल्यांकन के विभिन्न उद्देश्य हैं। विद्यालय में मूल्यांकन का मूलभूत उद्देश्य शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाना है शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण सुधार लाना है और मूल्यांकन यह कार्य विद्यार्थी अधिगम, कक्षा शिक्षण पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम विषयवस्तु के औचित्य संबंधी प्रतिपुष्टि प्रदान करके करता है। जब विद्यार्थियों की

गैर-संज्ञानी (non-cognitive) क्षमताओं को विकसित करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है तब यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने में भी सहायता करता है।

मूल्यांकन के निम्नलिखित मुख्य कार्य हैं:-

(i) अधिगम में सुधार करना-

विद्यार्थियों की प्रगति का मूल्यांकन सीधे विद्यार्थी के सीखने-सिखाने में सुधार करने में योगदान देता है। यह कई तरीकों से किया जाता है।

मूल्यांकन क्रियाविधियाँ विद्यार्थी को यह स्पष्ट रूप से समझने में सहायता करती है कि वह क्या है, जिसे अध्यापक उसे सिखाना चाहता है। मूल्यांकन से प्राप्त प्रतिपुष्टि उसे उसकी प्रगति संबंधी मूर्त जानकारी प्रदान करती है। यह उसे भावी अधिगम गतिविधियों के लिए उसकी तैयारी के बारे में सूचित करती है। इस सतत मूल्यांकन के माध्यम से अध्यापक प्रत्येक अवस्था पर अधिगम की सीमा को जान सकता है। अधिगम में यदि कोई कठिनाइयाँ या अन्तराल हो तो समुचित सुधारात्मक उपाय किए जा सकते हैं। जो विद्यार्थी अच्छी प्रगति दर्शाते हैं उनके लिए संवर्धन (enrichment) उपाय किए जा सकते हैं। इस प्रकार मूल्यांकन, निदान और सुधार उपायों द्वारा शिक्षा को बेहतर बनाने में सहायक होता है। मूल्यांकन द्वारा अध्यापक विद्यार्थी के विकास पर सतत और नियमित रूप से नजर रख पाता है।

अधिगम का मूल्यांकन ही विद्यार्थियों को सीखने के लिए अभिप्रेरित करता है। यदि कक्षा में मूल्यांकन न किया जाए तो शायद विद्यार्थी पढ़ें ही न मूल्यांकन बच्चों में सकारात्मक प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ावा देता है और उन्हें अपनी श्रेष्ठता दर्शाने के लिए प्रेरित करता है।

इसके अतिरिक्त, मूल्यांकन के अन्य प्रयोग भी हैं जो माता-पिता के लिए उपयोगी है। परीक्षा परिणाम के माध्यम से माता-पिता अपने बच्चों की शिक्षा संबंधी कमजोरियों और शक्तियों (संभावनाओं) को जान सकते हैं। यदि विद्यालय में मूल्यांकन व्यापक (comprehensive) तरीके से किया जाए तो विद्यालय माता-पिता को उनके बच्चे के सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास के बारे में भी बता सकता है। इससे बच्चे की प्रगति के लिए अध्यापक और अभिभावक के बीच बेहतर सहयोग की भावना विकसित होती है। माता-पिता अपने बच्चे में कुछ विशेष कमी होने पर सुधार संबंधी उपाय कर सकते हैं।

(ii) शिक्षण में सुधार-

मूल्यांकन अध्यापकों की जवाबदेही को भी बढ़ावा दे सकता है। बच्चों के परीक्षा परिणामों से पता चल सकता है कि बच्चे का खराब निष्पादन, खराब शिक्षण, त्रुटिपूर्ण क्रियाविधि (defective methodology) के कारण है या अध्यापकों के कक्षा में अनुपस्थित रहने के कारण या सख्तीपूर्ण (callousness) शिक्षण के कारण है। इस तरह मूल्यांकन शिक्षण में सुधार करने के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में काम कर सकता है। अध्यापकों का व्यावसायिक विकास मूल्यांकन के माध्यम से प्राप्त होने वाली प्रतिपुष्टि से सीधे संबद्ध होता है। एक अध्यापक अपने द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम के आधार पर ही प्रतिष्ठा व ख्याति प्राप्त करता है। यदि विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम अच्छे व वांछनीय नहीं होते तब अध्यापक अपने शिक्षण की विधि को

बदलने या अपनी शिक्षण सामग्री को बेहतर बनाने, अपने ज्ञान को अद्यतन (update) करने, पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (refresher courses) करके कई उपागमों का अन्वेषण करने पर विचार कर सकते हैं ये उपाय स्वतः उसका व्यावसायिक विकास करने में सहायक होंगे।

(iii) पाठ्यचर्या या विषयवस्तु का नवीनीकरण-

मूल्यांकन से विषयवस्तु की प्रभाविता के संबंध में भी जानकारी मिलती है। विद्यार्थियों की परिपक्वता का स्तर विषयवस्तु के अनुरूप पर्याप्त विकसित होने के कारण पाठ्यचर्या के अंतर्गत कई ऐसे विषयवस्तु हो सकते हैं जो विद्यार्थियों को कठिन लग सकते हैं। अतः ये उन्हें सरलता से आत्मसात् नहीं कर पाते और इस तथ्य का पता मूल्यांकन तथा उसकी प्रतिपुष्टि द्वारा ही लगाया जा सकता है। विभिन्न विद्यार्थियों के मूल्यांकन की प्रतिपुष्टि द्वारा यदि यह निरंतर पाया जाता है कि पाठ्यचर्या का कोई विशिष्ट क्षेत्र उनके लिए उपयुक्त नहीं है तो उसमें सुधार किए जा सकते हैं। ऐसी जानकारी पाठ्यक्रम के पूर्व निर्धारित लक्ष्यों के औचित्य का पता लगाने में भी सहायक होती है। इस तरह मूल्यांकन पाठ्यचर्या में संशोधन करने का आधार प्रदान कर सकता है।

(iv) गैर-संज्ञानी क्षमताओं का विकास-

आज के विश्व में बौद्धिक शक्तियों का विकास पर्याप्त नहीं है। सामाजिक बुद्धि, भावात्मक बुद्धि और व्यक्तित्व के शारीरिक पहलुओं का विकास भी अब उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना मानसिक बुद्धि का विकास महत्व रखता है। शिक्षा का प्रमुख सरोकार मानव व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है और ऐसा विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक क्षमताओं के साथ-साथ उनकी गैर-संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास करके किया जा सकता है। यह केवल तभी सुनिश्चित किया जा सकता है कि जब विद्यालय विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के इन पहलुओं का मूल्यांकन करने की पद्धति को अपनाता है। व्यापक मूल्यांकन में मानव व्यक्तित्व के गैर-विद्यालयी क्षेत्रों जैसे विद्यार्थियों की सामाजिक व्यक्तिगत विशेषताएँ (गुण), रूचियाँ, अभिवृत्तियाँ, मूल्य और शारीरिक वृद्धि का मूल्यांकन शामिल है और वर्तमान शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में इनका निरंतर विकास व मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

जैसा कि अग्रवाल (1988) ने अवलोकन किया कि भारतीय संदर्भ में गैर-विद्यालयी क्षेत्रों के मूल्यांकन से विद्यार्थियों के न केवल छिपे हुए व अज्ञात गुणों का पता चलता है बल्कि यह उन्हें भविष्य के लिए भी तैयार करता है। ऐसे गुण, विशेषताएँ, अभिवृत्तियाँ और मूल्य हैं जिन्हें जीवन में सफलता अर्जित करने के लिए विकसित करना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, नियमितता, समय की पाबंदी, अनुशासन, पहल करने की प्रवृत्ति, परिश्रम और सहयोग ऐसे गुण हैं जो व्यावसायिक जीवन में महत्व रखते हैं। अन्य लोगों के लिए सम्मान-भावना, सत्यता, भावात्मक स्थायित्व के गुण खुशहाल निजी जीवन के लिए अपेक्षित अध्यापक को विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों, रुचियों, मूल्यों और सामान्य बनावट के बारे में जानकारी होना महत्वपूर्ण है क्योंकि वह इस जानकारी का प्रयोग विद्यार्थियों की शिक्षा सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर करने और उनकी शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ावा देने के लिए कर सकते हैं। विद्यार्थियों की शिक्षा सम्बन्धी समस्याएँ अक्सर उनके व्यक्तित्व से संबद्ध होती हैं। ये विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों, मूल्यों और रुचियों से प्रभावित

होती हैं। उदाहरण के लिए, यदि अध्यापक यह जानता है कि सचिन की खेलकूद में रुचि है तो उसके पठन को सुधारने के लिए वह खेलकूद से जुड़ी पत्रिकाएँ पढ़ने के लिए दे सकता है। इसी तरह अध्यापक अपने विद्यार्थियों की रुचियों और अभिवृत्तियों का सदुपयोग कर सकते हैं (मेहरस) एवं लेहमैन, 1987)।

3. मूल्यांकन के सिद्धान्त (Principles of Evaluation):

(1) मूल्यांकन का सीधा सम्बन्ध शैक्षिक उद्देश्यों से होता है, अतः सर्वप्रथम शैक्षिक उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना चाहिए। फिर उनकी प्राप्ति के लिए उपर्युक्त उपकरणों या प्रविधियों का चयन करना चाहिए। उपर्युक्त उपकरणों के अभाव में स्वयं इसके निर्माण का प्रयास करना चाहिए। मूल्यांकन के निर्धारित उद्देश्यों के अनुसार ही मूल्यांकन उपकरणों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

(2) मूल्यांकन की प्रत्येक विधा तथा उपकरण का प्रयोग करते समय उनकी उपयोगिता के सम्बन्ध में मूल्यांकनकर्ता को पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। इनकी विशेषताओं एवं सीमाओं को ध्यान में रखते हुए ही इन्हें उपयोग में लाना चाहिए ।

(3) मूल्यांकन को अन्त (End) न समझकर इसे दूसरी वस्तुओं या प्रत्ययों की प्राप्ति का साधन मानकर चलना चाहिए।

(4) मूल्यांकन प्रक्रिया में निर्णय एवं मूल्य अत्यन्त आवश्यक हैं अतः शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर वस्तुनिष्ठ एवं परिपक्व निर्णय होना चाहिए।

(5) मूल्यांकन प्रक्रिया में त्रुटियों से बचने के लिए अत्यन्त सावधानीपूर्वक कार्य करना चाहिए।

(6) मूल्यांकन के द्वारा शिक्षण प्रक्रिया के विभिन्न स्तरों पर सुधार लाने का प्रयास करना चाहिए।

4. मूल्यांकन का महत्व (Importance of Evaluation):

अधिगम की प्रक्रिया को जाँचने के लिए शिक्षण के पश्चात् मूल्यांकन (Evaluation) एक महत्वपूर्ण चरण होता है। इसके द्वारा अनेक बिंदुओं की जाँच की जाती है। ये बिंदु निम्नानुसार है

1. मूल्यांकन द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति कहाँ तक हो सकी है।
2. मूल्यांकन द्वारा यह निश्चित किया जाता है कि किन विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो पायी है जिससे उसे ठीक करने के लिए उपचारात्मक शिक्षण किया जाये।
3. कक्षा में छात्रों का स्तरीकरण (Ranking) करने में भी मूल्यांकन महत्वपूर्ण प्रक्रिया मानी गयी।
4. मूल्यांकन कक्षा शिक्षण में प्रयुक्त होने वाली शिक्षण विधियों की उपयोगिता तथा कमजोरियों का पता लगाने में सहायक होता है।

5. मूल्यांकन के आधार पर विद्यार्थियों की वैयक्तिगत भिन्नता (Individual Differences) को समझने में भी सहायता मिलती है।
6. मूल्यांकन पाठ्यक्रम के परिमार्जन एवं परिवर्तन में भी सहायक होता है।
7. मूल्यांकन शिक्षकों एवं विद्यार्थियों दोनों को ही पुनर्बलन (Reinformcement) तथा पृष्ठ पोषण (Feed back) देने का कार्य करता है।
8. यह विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नता एवं सामूहिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता करता है।
9. यह अध्यापक की शिक्षण-कुशलता तथा सफलता की जाँच करने में सहायक है।
10. मूल्यांकन मापन (Measurment) के अनेक दोषों को दूर करने में सहायक है।
11. विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास (Over all Development) को गतिशील बनाए रखने में मूल्यांकन महत्वपूर्ण है।
12. यह विद्यार्थियों की रुचियों, समझदारी, वृत्तियों, कुशलताओं, गुणों आदि जाँच करने में सहायक है।
13. यह पाठ्यक्रम में परिस्थिति एवं आवश्यकतानुसार संशोधन के आधार प्रस्तुत करने में सहायक है।
14. यह शिक्षण की उपयोगिता की जाँच करके उसे विद्यार्थियों के छात्रोपयोगी बनाने में सहायक है।
15. मूल्यांकन कक्षा में शिक्षण विधियों की उपयुक्तता की जाँच करने में सहायक होता है।
16. यह विद्यार्थियों की प्रगति (Progress) तथा वर्गीकरण के लिए आवश्यक आधार प्रस्तुत करने में सहायता करता है।
17. यह विद्यार्थियों की समस्याओं को समझने में उन्हें सहायता प्रदान करने में सहायक होता है।
18. यह विद्यार्थियों की कमजोरियों एवं अधिगम कठिनाईयों को समझने एवं मार्गदर्शन देने में सहायक है।
19. यह पाठ्यक्रम में वर्तमान आवश्यकतानुसार उचित संशोधन करने के लिए ठोस आधार प्रस्तुत करने में सहायक होता है।
21. यह विद्यार्थियों को भविष्य के लिए उचित व्यावसायिक निर्देशन देने में सहयोग प्रदान करने में सहायक होता है।
22. मूल्यांकन शिक्षकों की शिक्षण विधियों के प्रभाव एवं परिणामों की जाँच के अवसर उपलब्ध कराने में सहायता करता है।
23. यह विद्यार्थियों की सामाजिक एवं संवेगात्मक समस्याओं का निदान करने में सहायक होता है।

5. निबन्धात्मक परीक्षणः
(Subjective/Essay Type Tests)

यह परीक्षण सर्वाधिक प्रचलित परीक्षण है। इस परीक्षण का निर्माण शिक्षक द्वारा किया जाता है। इनमें प्रश्नों का उत्तर निबन्ध के रूप में देना होता है। इसलिए इनको निबन्धात्मक परीक्षण कहा जाता है। हमारे देश में निबन्धात्मक परीक्षा के साथ लघु उत्तरीय एवं अति लघु उत्तरीय तथा बहुविकल्पीय प्रश्नों का प्रचलन है। इसमें छात्रों को कुछ प्रश्न दिये जाते हैं जिनका उत्तर उनको निर्धारित समय में देना होता है।

5.1 निबन्धात्मक परीक्षण के गुण या विशेषताएँ
(Merits or Characteristics of Essay Type Test):

निबन्धात्मक परीक्षण के गुण या विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

(1) सभी विषयों के लिए उपयोगी है। सभी विषयों में इसका उपयोग किया जा सकता है।

(2) परीक्षण में उत्तर देने एवं भाव व्यक्त करने की स्वतन्त्रता रहती है। भाव स्वतन्त्रता से छात्रों के ऊपर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं होता है।

(3) शिक्षकों को प्रश्नों की रचना करने में सरलता रहती है। वे थोड़े से समय में ही प्रश्नों की रचना कर सकता है। आवश्यकतानुसार बोल भी सकता है और प्रश्न भी लिख सकता है।

(4) बालकों को उत्तर देने में सुगमता रहती है। साथ ही उन्हें किसी विशेष प्रकार के निर्देश देने की आवश्यकता नहीं होती है।

(5) परीक्षा के द्वारा छात्रों के तथ्यात्मक ज्ञान की परीक्षा ली जा सकती है।

(6) परीक्षा के द्वारा छात्रों की विभिन्न योग्यताओं की परीक्षा ली जा सकती है। जैसे-विचार संगठन, विवेचन और अभिव्यक्ति सम्बन्धी चिन्तन एवं तार्किक लेखन।

(7) शिक्षक निबन्धात्मक प्रश्नों के माध्यम से बालकों की वास्तविक प्रगति का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। वह उनके उत्तरों को पढ़कर उनसे सम्बन्धित विषयों में उनकी उपलब्धियों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

5.2 निबन्धात्मक परीक्षण के दोष
(Demerits of Essay Type Test):

निबन्धात्मकपरीक्षा प्रणाली के अनेक दोष हैं जिसके कारण यह अनुपयुक्त प्रतीत होती है। इस परीक्षा प्रणाली के निम्नलिखित दोष हैं।

(1) सीमित प्रतिनिधित्व (Limited Representation)– इस परीक्षा प्रणाली का दोष यह है कि यह विषय का सीमित प्रतिनिधित्व करता है। सम्पूर्ण विषय से प्रश्न नहीं पूछे जाते हैं। विषय से सम्बन्धित अनेक भाग ऐसे होते हैं जिनसे एक भी प्रश्न नहीं पूछा जाता है। इसी निर्बलता का लाभ उठाकर परीक्षार्थी बहुत थोड़े प्रश्नों का चयन करके परीक्षा देते हैं।

(2) वैधता का अभाव (Lack of Validity)– वैधता का तात्पर्य है कि परीक्षा उन गुणों, तथ्यों और कुशलताओं की जाँच करें जिसकी जाँच करना उसका उद्देश्य है। अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि निबन्धात्मक परीक्षा विषय के ज्ञान की अपेक्षा विद्यार्थियों की भाषा शक्ति एवं लेखन शक्ति की जाँच करती है।

(3) विश्वसनीयता का अभाव (Lack of Reliability)– निबन्धात्मक प्रणाली द्वारा प्राप्त अंकों पर विश्वास नहीं किया जा सकता है। एक ही छात्र की उत्तरपुस्तिका को दो शिक्षकों द्वारा जाँचे जाने पर अन्तर मिलता है। कुछ समय के अन्तराल के पश्चात् ली गयी परीक्षा के अंकों में अन्तर पाया जाता है। अतः इस प्रकार की परीक्षा को विश्वसनीय नहीं कहा जा सकता।

(4) भविष्यवाणी का अभाव (Lack of Predictability) – छात्रों के विषय में किसी प्रकार की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है क्योंकि अंकों की प्राप्ति, रटने की शक्ति, लेखन शक्ति, अभिव्यक्ति, सुलेख, उपयुक्त भाषा पर निर्भर करती है।

(5) अंकों में विविधता (Variability in Marks) – इस प्रणाली द्वारा जो परीक्षा ली जाती है उनमेंविविधता पायी जाती है। इस सम्बन्ध में स्टार्च एवं इलियट (Starch and Illiot) ने बताया कि जब 142शिक्षकों से अंग्रेजी की उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करवाया गया तो उनके द्वारा प्रदान किये गये अंक 50 और98 के बीच थे।

(6) आत्मनिष्ठता (Subjectivity) – इस प्रणाली में आत्मनिष्ठता पायी जाती है क्योंकि वस्तुनिष्ठ परीक्षण के समान इसमें उत्तर पुस्तिकाओं के अंकन के लिए उत्तर तालिका नहीं होती है, जिसके आधार पर परीक्षक उत्तर पुस्तिकाओं का अंकन कर सके। निबन्धात्मक परीक्षा प्रणाली में विभिन्न परीक्षक एक ही प्रश्न के भिन्न-भिन्न अंक देते हैं। कुछ परीक्षक आलसी होने के कारण उत्तर पढ़ते नहीं हैं।

(7) अंकन में अधिक समय (More Time in Scoring) – उत्तर लम्बे होने के कारण अधिक समयतथा शक्ति की आवश्यकता होती है। स्टालनकर (Stalanker) ने Educational Measurementमेंलिखा है-'भली प्रकार लिखे गये निबन्धात्मक प्रश्न का ठीक मूल्यांकन दीर्घकालीन और कठिन कार्य है और इसे उचित प्रकार से करने के लिए बुद्धि, परीक्षण एवं धैर्य की आवश्यकता होती है।' इन सब दोषों के होते हुए भी इसकी उपादेयता को नकारा नहीं जा सकता है। ऐलिस के शब्दों में, 'निबन्धात्मक परीक्षाएँ छात्रों को मौलिकता का अवसर प्रदान करती हैं एवं तर्क शक्ति की जाँच करने के लिए भी इनका प्रयोग अपेक्षाकृत सरल है।'

6. वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का अर्थ (MEANING OF OBJECTIVE TESTS):

वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का विकास करने का श्रेय जे. एम. राइस (J. M. Rice) को है। उसने इन परीक्षणों की रचना, प्रयोग और अंकन आदि के सम्बन्ध में मौलिक कार्य किये। इन कार्यों से प्रभावित होकर स्टार्च एवं. इलियट (Starch and Elliot) ने अध्ययनों के आधार पर इसकी उपयोगिता को सिद्ध किया।

वस्तुनिष्ठ परीक्षण वह परीक्षा है, जिनमें विभिन्न परीक्षक स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करने के पश्चात् एक ही निष्कर्ष पर पहुंचते हैं। गुड के अनुसार, 'वस्तुनिष्ठ परीक्षा साधारणतया सत्य. असत्य उत्तर, बहुसंख्यक चुनाव, मिलान या पूरक प्रकार के प्रश्नों पर आधारित होती है जिनके सही उत्तरों का उत्तर तालिका की सहायता से अंकन किया जाता है। यदि कोई तालिका के विपरीत होता है, तो उसे गलत मान लिया जाता है।'

6.1 वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के प्रकार (Kinds of Objective Tests):

वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के निम्नलिखित प्रकार हैं

(1) सरल पुनः स्मरण टेस्ट,
(2) सत्य/असत्य टेस्ट,
(3) बहुसंख्यक चुनाव टेस्ट,
(4) मिलान टेस्ट,
(5) रिक्त स्थान टेस्ट।

(1) सरल पुनः स्मरण टेस्ट (Simple Recall Test)– परीक्षार्थी को उत्तर स्वयं स्मरण करके लिखनेपड़ते हैं।

निर्देश– निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके समक्ष दिये गये कोष्ठकों में लिखिए

(i) भारत कब स्वतन्त्र हुआ। ( )
(ii) उत्तर प्रदेश के राज्यपाल कौन हैं? ( )
(iii) भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे? ( )
(iv) रामचरितमानस की रचना किसने की थी? ( )

(2) सत्य/असत्य टेस्ट (True/False Test)– इसमें परीक्षार्थी को सत्य/असत्य में उत्तर देने होते

निर्देश– कथन यदि सही हो तो सत्य और गलत हो तो असत्य लिखिए

(i) शिवाजी का जन्म 1605 में हुआ था। ( )
(ii) गाँधी जी की मृत्यु मुम्बई में हुई थी। ( )
(iii) कामायनी की रचना जयशंकर प्रसाद ने की थी। ( )
(iv) भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू थे। ( )

(3) बहुसंख्यक चुनाव टेस्ट (Multiple Choice Test) – इस टेस्ट में परीक्षार्थी को दिये हुए अनेकउत्तरों में से सही उत्तर का चुनाव करना होता है।

निर्देश- निम्नलिखित कथनों के अनेक उत्तर दिये गये हैं जिनमें एक सही है। सही उत्तर को रेखांकितकीजिए।

(i) पंजाब की राजधानी (दिल्ली, लखनऊ, चंडीगढ़, जयपुर) है।

(ii) महावीर स्वामी ने (ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, इस्लाम धर्म) चलाया था।

(iii) महात्मा गाँधी की मृत्यु (1932, 1947, 1948, 1950) में हुई थी।

(iv) भारत में प्रधानमन्त्री के पद पर (राजीव गाँधी, मोरारजी देसाई, मनमोहन सिंह, नरेन्द्रमोदी) सुशोभित हैं।

(4) मिलान टेस्ट (Matching Test) – इस टेस्ट में परीक्षार्थी को दो पदों में मिलान करके सही पदकोष्ठक में लिखना पड़ता है।

निर्देश- कुछ घटनाएँ दी हुई हैं। उनके सामने अव्यवस्थित रूप से उनसे सम्बन्धित तिथियाँ दी हुई हैं।

सही का मिलान कीजिए

(i) पानीपत का प्रथम युद्ध	1784 ई.
(ii) राणा प्रताप की मृत्यु	1680 ई.
(iii) शिवाजी का अन्त	1597 ई.
(iv) पिट्स का इण्डिया बिल	1526 ई.

(5) रिक्त स्थान टेस्ट (Fill in the Blank Test) – इस टेस्ट में परीक्षार्थी को वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति करनी होती है।

निर्देश- निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

(1) भारत के राष्ट्रपति ..... हैं।

(2) उत्तर प्रदेश की राजधानी ..... है।

(3) द्वितीय विश्व युद्ध ..... में हुआ।

(4) गीतांजलि के लेखक ..... है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षणों की विशेषताएँ (Characteristics of Objective Type Tests)

अपनी विशेषताओं के कारण वस्तुनिष्ठ परीक्षा प्रणाली के प्रचलन में दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं

(1) **वैधता (Validity)**: वस्तुनिष्ठ परीक्षण उसी निर्धारित योग्यता का मापन करता है जिसके लिए उसका निर्माण किया गया है।

(2) **वस्तुनिष्ठता (Objectivity)**: इस प्रणाली में वस्तुनिष्ठता इतनी अधिक होती है कि अंक प्रदान करते समय परीक्षक के व्यक्तिगत निर्णय, विचार, धारणा, मानसिक स्तर, मनोदशा के लिए कोई स्थान नहीं है।

(3) **विश्वसनीयता (Reliability)**: इसमें विश्वसनीयता अपनी चरम सीमा पर पायी जाती है क्योंकि किसी भी व्यक्ति द्वारा अंक प्रदान किये जाएँ, अंकों में कोई अन्तर नहीं आता है।

(4) **विभेदीकरण (Discrimination):** इसकी प्रमुख विशेषता है- विभेदीकरण की क्षमता। इसका अर्थ है कि यह परीक्षण प्रतिभाशाली एवं मन्द बुद्धि बालकों के भेद को स्पष्ट कर देता है।

(5) **धन की बचत (Economy of Money):** इसमें धन की बचत इसलिए होती है क्योंकि इसमें उत्तरपुस्तिका में बहुत कम पेज होते हैं तथा उत्तर जाँचने में कम समय लगता है।

(6) **समय की बचत (Economy of Time):** प्रश्नों का उत्तर देने में कम समय लगता है तथा कमसमय में अधिक प्रश्नों का उत्तर दिया जा सकता है।

(7) **विस्तृत प्रतिनिधित्व (Extensive Sampling):** प्रत्येक प्रश्न पत्र में प्रश्नों की संख्या इतनी अधिक होती है कि कोई पाठ्यवस्तु अछूती नहीं रह जाती है। इस प्रकार यह प्रणाली का विस्तृत प्रतिनिधित्व करती है।

(8) **एक संक्षिप्त उत्तर (One Short Answer):** इसमें एक प्रश्न का केवल एक ही संक्षिप्त उत्तर हो सकता है। अतः छात्रों को अपने उत्तर के विषय में कोई भ्रम नहीं रह जाता है।

(9) **उत्तर की सरलता (Easy Answering):** इस प्रणाली में उत्तर देना सरल होता है। इसका कारणहै कि छात्र हाँ या नहीं लिखकर सत्य या असत्य में से एक पर निशान लगाकर एक या दो शब्दों को रेखांकित करके और इसी प्रकार के अन्य सरल कार्य करके उत्तर दे सकते हैं।

(10) **छात्रों का सन्तोष (Student's Satisfaction):** इस प्रणाली में छात्रों को ठीक अंक मिलते हैं। इससे उन्हें न केवल सन्तोष होता है अपितु अधिक परिश्रम करने की प्रेरणा भी मिलती है।

(11) **छात्रों के लिए उपयोगी (Useful for Students):** इस प्रणाली में उत्तर पुस्तिकाओं को जाँचनेमें बहुत कम समय लगता है एवं शीघ्र ही उत्तर पुस्तिकाएं छात्रों को लौटा दी जाती हैं। छात्र अपनी अशुद्धियों से अवगत होकर उनके सम्बन्ध में शिक्षक से विचार-विमर्श कर लेते हैं। इस प्रकार यह प्रणाली छात्रों के लिए उपयोगी है।

(12) **अंकों में समानता (Uniformity in Marks):** छात्रों को समान अंक मिलने के कारण अंकों में समानता होती है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के दोष (Demerits of Objective Test)

वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के निरन्तर प्रयोग से इसके कुछ दोष सामने आए जिसके कारण शिक्षाविद् इसे अहितकर समझने लगे। ये दोष निम्नलिखित हैं

(1) अनुमान को प्रोत्साहन।
(2) भाव प्रकाशन की असमर्थता।
(3) भाषा एवं शैली की दुर्बलता।
(4) श्रेष्ठमानसिक शक्तियों की जाँच असम्भव।
(5) केवल तथ्यात्मक ज्ञान की जाँच।
(6) विवादग्रस्त तथ्यों एवं समस्याओं की अवहेलना।
(7) अधिक धन की आवश्यकता।
(8) शिक्षक पर अत्यधिक भार।

वस्तुनिष्ठ परीक्षण में तुलना (Comparision between Essay Type and Objective Type Tests)

क्र. सं.	निबन्धात्मक परीक्षण (Essay Type Test)	वस्तुनिष्ठ परीक्षण (Objective Type Test)
1	प्रश्नों की रचना सरल होती है।	प्रश्नों की रचना कठिन होती है।
2	समय कम लगता है।	समय अधिक लगता है।
3	प्रश्नों की संख्या कम एवं उत्तर लम्बे होते हैं।	प्रश्नों की संख्या अधिक एवं उत्तर छोटे होते हैं।
4	सीमित पाठ्यक्रम से प्रश्न होते हैं।	पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न बनाये जाते हैं।
5	उत्तर की भाषा महत्वपूर्ण होती है।	भाषा को कोई महत्व नहीं दिया जाता है।
6	उत्तर निश्चित नहीं होता है।	उत्तर निश्चित होता है।
7	वस्तुनिष्ठता, वैधता एवं विश्वसनीयता का अभावहोता है।	उत्तर में वस्तुनिष्ठता एवं वैधता होती है।
8	फलांकन करना कठिन होता है। इनका निश्चित उत्तर नहीं होता है।	फलांकन सरल होता है। इनका उत्तर निश्चित होता है।
9	उपलब्धि मापन, चयन एवं वर्गीकरण के लिए उपयोगी होते हैं।	निष्पादन एवं निदान के लिए उपयुक्त है। बुद्धि और अभिक्षमता मापन में उपयोगी हैं।

7. दक्षता आधारित मूल्यांकनः
(Competency Based Evaluation)

वैबस्टर की 'थर्ड न्यू इन्टरनैशनल डिक्शनरी' के अनुसार दक्षता शब्द का अर्थ है प्रकार्यात्मक रूप से पर्याप्त होने का गुण या अवस्था; अथवा पर्याप्त निर्णय क्षमता, कौशल या शक्ति अर्थात् योग्यता या सामर्थ्य क्षेत्र का होना।

यदि कोई व्यक्ति दिए गए कार्य को सफलतापूर्वक कर सकता है तो हम उसे उस कार्य के लिए दक्ष मानते हैं। इसलिए दक्षता किसी व्यक्ति को दिए गए कार्य को सफलतापूर्वक करने के सामर्थ्य की ओर संकेत करती है। कार्य को कुछ ऐसी प्रक्रियाओं या उत्पादों की दृष्टि से भी स्पष्टतः परिभाषित किया जा सकता है जिनके लिए निःसंदेह कुछ तथ्यों/सिद्धांतों, कौशलों, ज्ञान के अनुप्रयोग, आदतों तथा अभिवृत्तियों के ज्ञान तथा समझ की आवश्यकता होगी। इस प्रकार दक्षता के प्रत्येक विवरण में दो बातें होंगी। (क) कार्य अथवा विषय-वस्तु की प्रकृति (ख) अपेक्षित निष्पादन का उल्लेख। उदाहरण के लिए 'शिक्षार्थी 1 से 6 तक की संख्या के अंकों को पहचानता है' की दक्षता के विवरण में 1 से 6 तक की संख्या कार्य या विषय-वस्तु की प्रकृति है और 'शिक्षार्थी पहचानता है' निष्पादन कथन है।

शिक्षा की प्रक्रिया के प्रत्येक चरण में विद्यार्थियों में अधिगमदक्षता का विकास होता है। इसके लिए उनका मूल्यांकन रचनात्मक तथा विकासात्मक दृष्टिकोण से किया जाता है। मूल्यांकन का यह तरीका दक्षता आधारित मूल्यांकन (Competency Based Evaluation) पर आधारित होता है ।

इसके द्वारा यह ज्ञात करने का प्रयास किया जाता है कि छात्रों ने क्या-क्या सीखा और उनके व्यवहार में कौन-से परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं ? दक्षता आधारित मूल्यांकन के द्वारा विद्यार्थियों के रचनात्मक कौशलों का आंकलन किया जाता हैं। इसके विपरीत छात्रों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में होने वाले परिवर्तनों को आकलित करने के लिए व्यापक मूल्यांकन प्रयोग में लाया जाता हैं।

हम कह सकते हैं कि दक्षता आधारित मूल्यांकन, व्यापक मूल्यांकन का केन्द्र बिंदु है, किन्तु आकार के स्वरूप से व्यापक मूल्यांकन की अपेक्षा छोटा है ।

अर्थात दक्षता आधारित मूल्यांकन से तात्पर्य है कि छात्रों की दक्षता पर आधारित न्यूनतम अधिगम की जाँच/विश्लेषण करना है, जिससे छात्रों की दक्षता ग्राह्यता को सुनिश्चित किया जा सके ।

दक्षता आधारित मूल्यांकन में दक्षता के कथनों को अधिक महत्त्व दिया जाता है। मूल्यांकन से संबद्ध सभी गतिविधियों उन्हीं से निर्देशित होती हैं। दक्षता आधारित मूल्याकन के अंतर्गत किसी परीक्षण प्रश्न की उपर्युक्तता के निर्णय की कसौटी यह है कि क्या उससे निर्धारित दक्षता का सफलतापूर्वक मूल्यांकन हो सकता है। उदाहरण के लिए यदि हम कक्षा में 'शिक्षार्थी 1 से 9 तक की संख्याओं को पहचानता है' दक्षता का परीक्षण करना चाहते हैं तो हमें निम्नलिखित दो चरण अपनाने होंगे।

क्रियाकलाप 1

(i) श्यामपट्ट पर 4, 7, 2, 9, 3, 1, 8, 6, 5 संख्याएं लिखना।
(ii) मेज पर पैंसिलें, चॉक, बोतलों के ढक्कन आदि कुछ वस्तुएँ रखना।
(iii) शिक्षार्थियों से एक-एक करके किसी संख्या विशेष को देखने, उसे पहचानने तथा मेजउतनी वस्तुएँ उठाने के लिए कहना जितनी उस अंक द्वारा परिलक्षित हो रही हों।
(iv) भिन्न वस्तुएँ लेकर अलग-अलग शिक्षार्थियों द्वारा इन कियाकलापों को दोहरवाना।

क्रियाकलाप 2

(i) मेज के एक ओर, फ्लैश कार्ड रखना जिन पर 1 से 9 तक के संख्याएं लिखी हों।
(ii) मेज के दूसरी तरफ अन्य फ्लैश कार्ड रखना जिन पर 1 से 9 तक की संख्या में किसी वस्तु के चित्र बने हों।
(iii) एक-एक करके शिक्षार्थियों को एक निश्चित संख्यांक वाला फ्लैश कार्ड उठाने के लिए कहना तथा वस्तुओं के समूह का उससे मेल खाता दूसरा कार्ड भी उठाने के लिए कहना।
(iv)इन क्रियाओं को भिन्न फ्लैश कार्डों के साथ अलग-अलग शिक्षार्थियों से दोहरवाना।

दक्षता आधारित मूल्यांकन पत्रक

विषय : गणित कक्षा : 1/2/3/4/5

विद्यालय का नाम : .....

क्रम संख्या शिक्षार्थी का नाम दक्षता संख्या प्र.सं. 1234

मौखिक तथा लिखित परीक्षाओं के परिणामों के अभिलेखन के लिए पृथक-पृथक पत्रक प्रयोग किये जाते हैं। कभी-कभी एक निश्चित दक्षता का मूल्यांकन 3 या 4 उप प्रश्न वाले एक मुख्य किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में यदि शिक्षार्थी 3 में से 2 या 4 में से 3 प्रश्नों का शुद्ध उत्तर देता है तो मूल्यांकनकर्ता को सही (✓) का चिन्ह लगाना चाहिए। अन्य स्थितियों में किसी विशिष्ट दक्षता को जाँचने के लिए अधिक प्रश्नों की आवश्यकता होती है।

उदाहरण के लिए

प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 2 के छात्रों को 1 से 100 तक की गिनती का अभ्यास कराते हैं और उन्हें गिनतियों की संख्या को लिखना सिखाते हैं, तो निम्नलिखित दक्षताएँ सम्मिलित होती है। -

1. संख्याओं की धारणा (संकल्पना)
2. संख्याओं की पहचान।
3. संख्याओं को लिखना।
4. संख्याओं को लिखने का निश्चित क्रम

इनमें पूर्णरूपेण दक्षता प्राप्त करना ही अधिगम है । इस अधिगम की जाँच हेतु शिक्षक दक्षताधारित मूल्यांकन का सहारा लेते हैं। दक्षताधारित मूल्यांकन के द्वारा शिक्षक उन कारणों का पता भी लगा लेते हैं, जिनके कारण बालक अपेक्षित स्तर तक सीख पाने में असमर्थ हैं। इसलिए शिक्षकों को कक्षा में समय-समय पर दक्षता आधारित मूल्यांकन करते रहना चाहिए, जिसमें छात्रों की दक्षता आधारित स्थिति का ज्ञान हो सकें और अधिगम को सुदृढ़ बनाया जा सकें ।

इस बात का ध्यान रखा जाए कि दक्षता आधारित शिक्षण अधिगम का उद्देश्य शिक्षार्थी को निर्धारित दक्षता में पूर्णदक्षता का स्तर प्राप्त करने में सहायता देना है। इसलिए पूर्णदक्षता अधिगम उपागम में निष्पादन का वांछनीय स्तर 80 प्रतिशत मान लिया जाता है। (आदर्श रूप से यह 100 प्रतिशत होना चाहिए)। इसी प्रकार दक्षता आधारित परीक्षण का उद्देश्य यह अभिनिश्चित करना होता है कि किसी निर्धारित दक्षता में बच्चों ने किस सीमा तक पूर्णदक्षता अर्जित कर ली है। आदर्शतः कहें तो इसके लिए असंख्य प्रश्नों को तैयार करने की आवश्यकता होगी, परन्तु व्यवहार में प्रति दक्षता 3 से 5 (परीक्षण प्रश्न) पर्याप्त माने जाते हैं। दक्षता आधारित मूल्यांकन में प्रयोग किए जाने वाले परीक्षण प्रश्नों के विकास में अत्यधिक सावधानी बरती जानी चाहिए।

किसी अच्छे दक्षता आधारित मूल्यांकन कार्यक्रम में निम्नलिखित बातें होनी चाहिएः

(क) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के साथ समाकलित सतत अनौपचारिक मूल्यांकन

(ख) इकाई परीक्षणों के रूप में सामयिक मूल्यांकन, जिससे शिक्षार्थियों के निष्पादन में इस प्रकार सुधार लाया जा सके वे अन्ततोगत्वा पूर्णदक्षता स्तर तक पहुँच सकें।

(ग) प्रस्तावित दक्षताओं में निर्धारित निष्पादन स्तरों से शिक्षार्थियों की निष्पतियों की तुलना केलिए संकल्पनात्मक मूल्यांकन

(घ) वर्ष के प्रारम्भ तथा अंत में निष्पादन पूर्व तथा निष्पादनोपरांत परीक्षण का प्रावधान।

दक्षता आधारित मूल्यांकन की मुख्य विशेषताएँ-

जैसा कि नाम से ही पता चलता है, दक्षता आधारित मूल्यांकन में दक्षता का एक महत्वपूर्ण स्थान होता है क्योंकि प्रसंगगत दक्षता को ध्यान में रखते हुए ही मूल्यांकन की गतिविधियों की प्रकृति प्रकार तथा मूल्यांकन की प्रक्रिया की आयोजना की जाती है। उदाहरण के लिए यदि निर्धारित विषय में किसी दक्षता में मौखिक, लिखित या दोनों प्रकार के अधिगम प्रतिफल समाहित हैं। तो मूल्यांकन भी तद्नुसार होगा। इसमें दक्षता के सभी पक्षों के मूल्यांकन के लिए पर्याप्त संख्या

में परीक्षण पदों/प्रश्नों की अपेक्षा होगी। शिक्षार्थियों को उत्तर देने के लिए अपेक्षित समय दिया जाता है। इस प्रकार मूल्यांकन के परिणामों की शिक्षार्थियों की विभिन्न क्षमताओं में निष्पादन को स्पष्ट करने के लिए तथा नैदानिक एवं उपचारात्मक शिक्षण में सहायक अर्थपूर्ण सूचनाओं को प्राप्त करने के संदर्भ में व्याख्या की जा सकती है।

दक्षता आधारित मूल्यांकन की मुख्य विशेषताएँ नीचे प्रस्तुत की जा रही हैं-

(i) इससे यह निर्धारित करने में सहायता मिलती है कि किसी बच्चे ने विशिष्ट दक्षताओं में से कौन सी दक्षताएँ प्राप्त कर ली हैं।

(ii) यह उन क्षमताओं की सूची बनाने में सहायता करता है जिन्हें शिक्षार्थियों ने प्राप्त कर लिया है या प्राप्त नहीं किया।

(iii) इस परीक्षण की सहायता से बच्चों को पूर्ण दक्ष, अंशतः दक्ष या अदक्ष के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

(iv) इससे पर्याप्त बड़ी संख्या में परीक्षण प्रश्नों द्वारा दक्षता के सभी पक्षों का मूल्यांकन करसकते हैं।इससे उन संयोग त्रुटियों को दूर किया जा सकता है जो परिणामों को प्रभावित कर सकती हैं।

(v) इसके आधार पर शिक्षण अधिगम के लिए उपर्युक्त युक्तियाँ सोची जा सकती हैं।

(vi) इसके द्वारा अनुदेशात्मक प्रक्रिया तथा मूल्यांकन के लिए व्यवस्थित कार्यविधि सुनिश्चित की जा सकती है।

(vii) इसकी सहायता से व्यक्तियों या व्यक्ति समूहों के लिए नैदानिक या उपचारात्मक शिक्षण की योजना बनाने के लिए पर्याप्त मार्गदर्शन प्रदान किया जा सकता है।

8. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकनः (Continuous and Comprehensive Evaluation)

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन विद्यालयी शिक्षा में मूल्यांकन सुधारों पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 की संस्तुतियों को अपनाते हुए सतत् और व्यापक मूल्यांकन योजना का प्रयोग किया जा रहा है। सतत् और व्यापक मूल्यांकन एक विद्यालय आधारित मूल्यांकन है जो बच्चे के विकास से जुड़ी विद्यालय क्रियाओं के सभी पहलुओं को समाहित करता है। सतत् और व्यापक मूल्यांकन दो शब्दों सतत् और व्यापक शब्दों से मिलकर बना है। सतत् शब्द का अर्थ मूल्यांकन में निरंतरता और आवर्तता से है। सतत् मूल्यांकन में निरंतरता बनाये रखने के लिए शिक्षक पूरे सत्र के दौरान शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थी के कार्य के निष्पादन का आंकलन औपचारिक और अनौपचारिक दोनो प्रकार से करता रहता है।

सतत् और व्यापक मूल्यांकन से संबंधित दूसरा शब्द है ''व्यापक''। व्यापक शब्द से यहाँ अभिप्राय है कि विद्यार्थी के कार्यों के निष्पादन का मूल्यांकन, शैक्षणिक और सहशैक्षणिक दोनों क्षेत्रों में विभिन्न उपकरणों और तकनीकों की सहायता से करना है। सतत् और व्यापक मूल्यांकन दोहरे उद्देश्यों पर बल देता है। एक ओर यह मूल्यांकन में सतत् और व्यापक रूप से अधिगम के

मूल्यांकन पर तथा दूसरी ओर व्यवहार के परिणामों पर आधारित है। जिस प्रकार अधिगम एक सतत् प्रक्रिया है उसी प्रकार मूल्यांकन को भी सतत् और विकास प्रक्रिया के रूप में माना गया है इसमें अधिगम के तीनों क्षेत्र : संज्ञानात्मक, भावात्मक तथा मनोगत्यात्मक आते हैं। संज्ञानात्मक क्षेत्र में बच्चे की संज्ञानात्मक योग्यताएँ जैसे ज्ञान, समझ, प्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण, सृजनात्मकता आदि का मूल्यांकन करते हैं। भावात्मक क्षेत्र के अंतर्गत व्यवहार, अभिप्रेरणा, अभिरुचि मूल्य आदि गुणों का मूल्यांकन करते हैं और मनोगत्यामक क्षेत्र के अंतर्गत हाथ से काम करने के कौशलों जैस हस्तलेखन, चित्र बनाना आदि योग्यताओं का मूल्यांकन करते हैं। सतत् और व्यापक मूल्यांकन में विद्यार्थी के शैक्षणिक और सहशैक्षणिक दोनों क्षेत्रों में निष्पादन का मूल्यांकन किया जाता है।

व्यापक मूल्यांकन (Comprehensive Evaluation)-

दक्षता आधारित मूल्यांकन प्रतिदिन कक्षा में शिक्षण के अंतर्गत छात्रों में दक्षता सिखाने के बाद उसका मूल्यांकन किया जाता है, किन्तु छात्रों की दक्षता के लिए अतिरिक्त उनमें संज्ञानात्मक पक्ष, भाव पक्ष तथा क्रियात्मक पक्ष भी सम्मिलित होते हैं, जिनका मूल्यांकन दक्षताधारित विधि से सम्भवः नहीं होता है। इसलिए छात्रों के चहुंमुखी विकास हेतु व्यापक मूल्यांकन की आवश्यकता होती है ।

व्यापक मूल्यांकन की दृष्टि से छात्रों में निम्नलिखित पक्षों पर ध्यान दिया जाता हैं-

1. वैयक्तिक एवं सामाजिक सद्गुण - इसके अंतर्गत समयबद्धता, नियमबद्धता, नैतिकता, उत्तरदायित्व की भावना, स्वच्छता एवं सहयोग, सत्यनिष्ठता, नियमितता, समाज सेवा आदि गुण सम्मिलित हैं ।

2. पाठ्यक्रम सम्बन्धी क्रियाएँ- इसके अंतर्गत वादविवाद, खेलकूद, भाषण, नाटक, तैरना, स्काउटिंग तथा कार्यानुभव आदि क्रियाएँ सम्मिलित हैं, जिनका मूल्यांकन अति आवश्यक होता है।

3. स्वास्थ्य विवरण- इसके अंतर्गत लम्बाई, भार, स्वास्थ्य तथा शारीरिक विकास आदिसम्मिलित है।

4. छात्र की अभिरूचियाँ-इसके अंतर्गत साहित्य, संगीत, कला तथा प्रकृति दर्शन सम्मिलित है।

5. अभिवृत्तियाँ- इसके अंतर्गत समाजवाद, धर्म निरपेक्षता, राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकतासम्मिलित हैं।

सतत् मूल्यांकन (Continuous Evaluation)

सतत् मूल्यांकन योजना को निरंतर मूल्यांकन योजना भी कहते हैं सतत् मूल्यांकन का आशय उस परीक्षण से है, जिससे छात्र के अध्ययन एवं उपलब्धियों का प्रतिमाह लेखा-जोखा लिया जाता है सतत् मूल्यांकन पद्धति में आमतौर पर सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को दस इकाइयों में विभक्त कर दिया जाता है। प्रत्येक माह उस इकाई का अध्यापन कराने के बाद स्वाभाविक रूप में परीक्षण किया जाता है, जिसका व्यवस्थित अभिलेख रखा जाता है। प्राथमिक और पूर्व माध्यमिक कक्षाओं में सतत् मूल्यांकन पद्धति कहीं-कहीं प्रचलित हैं, किंतु यह उस रूप में नहीं है, जैसा कि सतत्

मूल्यांकन के मौलिक स्वरूप में होना चाहिए। इससे मात्र ज्ञानार्जन के शैक्षिक कौशल का ही मूल्यांकन किया जाता है। शैक्षिकेत्तर उपलब्धियों का कोई मूल्यांकन नहीं किया जाता है ।

कक्षोन्नति का एकमात्र साधन वार्षिक परीक्षा और उसके परिणाम होते हैं। इस प्रथा के परिणामों से सभी भली-भाँति परिचित हैं। सत्रान्त में विद्यार्थियों द्वारा चुनिन्दा पाठ्यांशों की पढ़ाई स्पष्टतः शैक्षिक लाभ के विपरीत है। सम्पूर्ण स्कूल संकल्पना के कार्यक्रम में अंतनिर्हित सतत् मूल्यांकन इस समस्या का एक सम्भावित समाधान है सतत् मूल्यांकन के माध्यम से छात्र की योग्यता तथा अयोग्यता के बारे में नियमित रूप से उपयोगी तथ्यों का संकलन सम्भव हो सकेगा। इन तथ्यों का प्रयोग एक ऐसे उपचारात्मक शिक्षण यंत्र तथा समृद्ध शिक्षण के रूप में किया जा सकेगा, जिससे कि छात्रों के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का अधिकतम विकास किया जा सके और शिक्षा के उद्घोषित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके इस पृष्ठपोषण (फीडबैक) से न केवल विद्यार्थी को मापन, वर्गीकरण एवं प्रमाणीकरण में सहायता मिलेगी, अपितु उसकी कार्यकुशलता एवं सफलता के स्तर को सुधारने की तथा इस प्रकार के रचनात्मक मूल्यांकन के द्वारा उसके अधिकतम विकास की व्यवस्था को भी सक्षम बनाया जा सकेगा । इस प्रकार सतत मूल्यांकन के परिणाम हमें शीघ्र प्राप्त हो सकेंगे और सतत् व्यापक मूल्यांकन स्वयं लक्ष्य न होकर, लक्ष्य को प्राप्त करने का एक साधन मात्र होगा। विद्यार्थी परीक्षा के भय से मुक्त हो सकेंगे तथा सहज भाव से मूल्यांकन हेतु तत्पर बनेंगे।

सतत् मूल्यांकन सार्थक ज्ञान के लिये निदान एवं उपचार का पथ प्रशस्त करता है यदि एक शिक्षक अपने ज्ञान एवं कार्यकुशलता की सहायता से मूल्यांकन का प्रयोग विद्यार्थी के ज्ञानार्जन की कठिनाइयों और उनके कारणों का निदान करने के लिये कर सके तो वह उचित उपचारात्मक साधन अपनाकर उसके प्रगति में रुकावट एवं क्षति को कम कर सकता है और इस तरह उसे अधिकतम ज्ञान प्राप्त करने में सहायता कर सकता है । सार्थक ज्ञान का अर्थ है विद्यार्थी की वांछनीय कार्यक्षमताओं एवं योग्यताओं का विकास, जिससे कि वह भविष्य में अधिकतम लाभ प्राप्त कर सके । सार्थक ज्ञान कई तथ्यों पर निर्भर करता है, जैसे विद्यार्थी की रूचि, शिक्षा का स्तर, ज्ञानार्जन के लिए उपलब्ध समय एवं शिक्षा से लाभ उठाने की क्षमता।

सतत् मूल्यांकन का आयोजन (Effort of Continuous Evaluation)

परीक्षाएँ हमारी शिक्षा व्यवस्था पर बहुत अधिक प्रभाव डालती हैं। ऐसा विशेष रूप से इसलिये होता है, क्योंकि अधिकांश रूप में परीक्षाओं द्वारा विद्यार्थियों की सफलता का मापन किया जाता है इस मापन का उद्देश्य विद्यार्थियों का वर्गीकरण प्रमाणीकरण और श्रेणीकरण होता है। विद्यार्थियों की कमजोरी के निदानीकरण, शैक्षिक योजना की कुशलता के मूल्यांकन और ज्ञानार्जन आदि को सुधारने एवं निर्देशन करने में परीक्षा का जो महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है, उसकी लगभग पूर्ण रूप से उपेक्षा की जाती है। परिणामस्वरूप समस्त शैक्षिक कार्यक्रम परीक्षापरक हो गया है। शिक्षकों के पास कोई और विकल्प ही नहीं है, सिवाय इसके कि वे किसी न किसी ढंग से विद्यार्थियों को परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए तैयार करें। इस स्थिति को सुधारने के लिये सतत् मूल्यांकन प्रक्रिया के अंतर्गत एक संभावित ढंग शिक्षण एवं परीक्षा में इकाई पद्धति का प्रयोग हो सकता है। शिक्षण एवं परीक्षा में इकाई पद्धति के प्रयोग से इस समस्या का समापन निकालने

की क्षमता है, क्योंकि इससे शिक्षण अधिक उपयोगी एवं लक्ष्य आधारित हो सकता है और विद्यार्थियों की कमजोरियों के निदान तथा शैक्षिक उपचार एवं चुनिन्दा पढ़ाई को प्रोत्साहित भी किया जा सकता है। इससे मूल्यांकन को सम्पूर्ण शिक्षण और ज्ञानार्जन का अभिन्न अंग बनाने में सहायता मिलेगी, रटाई की अपेक्षा ज्ञानवर्द्धन को प्रोत्साहन मिलेगा तथा शैक्षिक निवेश की प्रक्रिया स्वरूप में सुधार होगा।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की आवश्यकता और महत्त्व

सतत् और व्यापक मूल्यांकन एक ऐसी मूल्यांकन पद्धति है जिसने हमारी परम्परागत मूल्यांकन पद्धतियों की अनेक कमियों को दूर किया है। पंरपरागत मूल्यांकन पद्धति की प्रकृति सीमित है जबकि सतत् और व्यापक मूल्यांकन में विद्यार्थी के विभिन्न विषयों में शैक्षणिक योग्यताओं को मापने के साथ ही साथ सहशैक्षणिक योग्यताओं जैसे कि व्यवहार,मूल्य,अभिवृत्ति, जीवन कौशलों आदि का आंकलन किया जाता हैं। ये योग्यताएं बच्चों में परीक्षा के बोझ को कम करके उनको सकारात्मक व्यवहार के लिये प्रेरित करती हैं। सतत् और व्यापक मूल्यांकन का शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बहुत महत्व है क्योंकि यह बच्चे के समग्र विकास पर बल देती है। यह बच्चों को मिलजुल कर एक सहज वातावरण में काम करने का मौका देती है। इससे विद्याार्थी के अंदर परीक्षा का भय कम हो जाता है। विद्यार्थी भय मुक्त वातावरण में अपनी योग्यतायें विकसित करता है और विद्यालय छोड़ने की दर भी कम हो जाती है। सतत् और व्यापक मूल्यांकन पूरे वर्ष चलता रहता है इसे मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया जाता है।

1. रचनात्मक मूल्यांकन
2. योगात्मक मूल्यांकन
3. निदानात्मक मूल्यांकन

1. रचनात्मक मूल्यांकनः

(Formative Evaluation)

पहली बार सन् 1967 में माइकेल स्क्रीबेन ने पाठ्यचर्या मूल्यांकन के क्षेत्र में रचनात्मक मूल्यांकन की अवधारणा का प्रयोग किया। स्क्रीबेन (1991) इसे अग्रलिखित रूप में परिभाषित किया रचनात्मक मूल्यांकन सामान्यतः किसी विद्यार्थी के विकास या सुधार के दौरान संचालित किया जाता है तथा यह कार्यक्रम के विद्यार्थियों के लिए सुधार तक प्रायः एक से अधिक बार संचालित किया जाता है। यदि हम परिभाषा का विश्लेषण करते हैं, यह स्पष्ट है कि रचनात्मक मूल्यांकन संचालित करने का प्रयोजन विद्यार्थी के अधिगम प्रगति का पर्यवेक्षण करना है, इसका संचालन अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति हुई है या नहीं इसके लिए भी किया जाता है। रचनात्मक मूल्यांकन में प्रमुख शब्द अधिगम की प्रवीणता या अधिगम प्रगति है। रचनात्मक मूल्यांकन अनुदेशनात्मक प्रक्रिया के दौरान किया जाता है। इसे आंकलन की द्वितीय अवस्था के रूप में समझा जाता है जिसे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान संचालित किया जाता है। इसे अनुदेशन के बहुत आरंभ से किया जाता है तथा पाठ्यक्रम के अंत तक निरंतर रहता है।

रचनात्मक मूल्यांकन के उदाहरण हैं: शिक्षकों के नियमित कक्षाकक्ष अवलोकन, इकाई अंत परीक्षा, मासिक परीक्षा, त्रैमासिक परीक्षा, अर्द्ध वार्षिक परीक्षा, आदि। यह अनुदेशनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति तथा कार्यक्रम की प्रभावकता के विषय में भी जानने हेतु विषयों में विद्यार्थियों की प्रगति के विषय में शिक्षक प्रतिपुष्टि प्रदान करता है। रचनात्मक आंकलन शिक्षण के रचनात्मक उपागम में अधिक लोकप्रिय है। इसका उपयोग विद्यार्थियों के उनके अधिगम में वृद्धि कराने हेतु किया जाता है। वर्तमान संदर्भ में रचनात्मक आंकलन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के साथ समाकलित किया जाता है। रचनात्मक आंकलन विद्यार्थियों की सतत् विकास की आवश्यकताओं को पूरा करता है। रचनात्मक आंकलन सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का एक अभिन्न भाग है। यह नैदानिक मूल्यांकन हेतु आँकड़े भी प्रदान करता है।

रचनात्मक आंकलन कक्षा में ही किए जाते हैं। इससे प्राप्त जानकारी बच्चे के अधिगम व शिक्षक के शिक्षण, दोनों को ही सूचित करती है। इससे बच्चे को अपने अधिगम के बारे में और शिक्षक को अपने शिक्षण के बारे में फीडबैक मिलता है। यह आंकलन शिक्षक को बताता है कि बच्चे ने अवधारणा को ठीक से सीखा या नहीं, शिक्षण-प्रक्रिया कक्षा की जरूरतों को पूरा कर पा रही है या नहीं या शिक्षण की कार्यनीति में किसी संशोधन की जरूरत तो नहीं आदि। यूँ तो रचनात्मक आंकलन कई तरीकों से किया जा सकता है और उनमें से एक कार्यनीति सामूहिक गतिविधि हो सकती है। उदाहरण के लिए सीता नामक एक प्राथमिक शिक्षिका समूह को कुछ ऐसी चीजें देती हैं जैसे-गेंद, बक्से, पिरामिड, चकती (डिस्क), त्रिकोण और वर्ग आदि। फिर वे हर समूह के बच्चों से कहती हैं कि वे कोई-सी भी दो चीजें चुनें और उनकी समानताओं और असमानताओं का पता लगाएँ। हर समूह चीजों की समानताओं और असमानताओं पर चर्चा करता है और उसे लिख लेता है। जब बच्चे चर्चा तथा अवलोकन करके अपनी अवधारणात्मक समझ को लिख रहे होते हैं तो सीता कक्षा का चक्कर लगाती रहती हैं। अपने इस अवलोकन का उपयोग वे अन्य गतिविधियों को दर्ज करने के लिए करती हैं जैसे कि बच्चों ने अपने काम को समूह में कैसे बाँटा, कैसे काम किया, अवधारणा के बारे में समूह ने चर्चा कैसे की आदि। बाद में वे बच्चों की लिखित सामग्री इकट्ठा करती हैं। अगले दिन रचनात्मक एवं योगात्मक आंकलन समूह की लिखित सामग्री की प्रतियाँ बनाती हैं और समूह को देकर उनसे उसकी अवधारणा, हस्तलेख और स्वच्छता का विश्लेषण करने को कहती हैं। फिर हर समूह अपनी समीक्षा को पूरी कक्षा के सामने प्रस्तुत करता है। उनके रिकार्ड से सीता को यह पता चल जाता है कि कक्षा को उस प्रकरण को सीखने में कौन-सी दिक्कतें पेश आ रही हैं और फिर वे अपनी अगली कक्षा में इन कठिनाइयों को सम्बोधित करने की योजना बनाती हैं। जिस बच्चे ने गतिविधि में भाग नहीं लिया, वे उससे बातचीत करती हैं और उसके कमजोर प्रदर्शन के कारण का पता लगाती हैं तथा उपचारात्मक कक्षा लेती हैं। इस गतिविधि के माध्यम से सीता ने अधिगम के रूप में आंकलन के मूल्य पर प्रकाश डाला है। इस प्रकार की प्रक्रिया में अवलोकन के माध्यम से शिक्षक हर बच्चे की अवधारणात्मक समझ को रिकार्ड करते हैं और साथ ही उन्हें यह भी पता चलता है कि किन बच्चों को सीखने में मुश्किल होने के कारण उनकी मदद की आवश्यकता है। हर बच्चे की जानकारी मिलने के बाद वे फीडबैक देते हैं और अधिगम सम्बन्धी इन कठिनाइयों के समाधान के लिए अपने शिक्षण की योजना बनाते हैं। सीता यह बात समझती हैं कि अधिगम की इस कमी को

पूरा किए बिना अगले प्रकरण या टापिक पर जाने से अवधारणाओं के निर्माण में कोई मदद नहीं मिलेगी। जिन बच्चों को वह प्रकरण सीखने में मुश्किल हुई, उनके लिए वे उपचारात्मक कक्षाएँ चलाती हैं।

रचनात्मक आंकलन के माध्यम से सीता ने साथियों के आंकलन के महत्त्व को भी समझा है। रचनात्मक आंकलन कक्षा में किया जा सकता है-इसे बताने के लिए यह एक उदाहरण था। इसे संचालित करने के और भी कई तरीके हैं। हर बच्चा अलग तरीके से सीखता है, इसलिए अगर उसके आंकलन के लिए शिक्षक विभिन्न साधनों का प्रयोग करे तो वह अधिक प्रभावी होगा जैसे कि-

विद्यार्थी साक्षात्कारः इसमें बच्चों से प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से देने की अपेक्षा की जाती है। ये प्रश्न-श्रृंखलाएँ उनकी समझ के विस्तार और गहराई का अनुमान लगाने के लिए एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं।

अवलोकनः कक्षा में चक्कर लगाते हुए शिक्षक काम में लगे हुए बच्चों का अवलोकन करते हैं और उनके काम में उन्हें दिशा निर्देश देते हैं व उनकी मदद करते हैं। इससे शिक्षक को समूह या व्यक्तिगत कार्य को समग्र रूप में समझने में मदद मिलती है।

प्रश्न पूछनाः कक्षा में आमतौर पर इस विधि का प्रयोग किया जाता है। शिक्षण की प्रक्रिया के दौरान प्रश्न पूछने से शिक्षक को बच्चे के ज्ञान की जानकारी मिलती है। इससे शिक्षक व बच्चे दोनों को तत्काल फीडबैक मिल जाता है और शिक्षण में बदलाव के लिए गुंजाइश भी रहती है।

चर्चाएँः कक्षा में चर्चा शुरू करने के लिए शिक्षक मुक्त प्रश्न पूछ सकते हैं और बच्चे उस पर विचार-विमर्श कर सकते हैं। इसका उद्देश्य समीक्षात्मक सोच और रचनात्मक सोच के कौशलों का विकास करना है।

अगर शिक्षक रचनात्मक आंकलन का प्रयोग शिक्षण केढाँचे के रूप में करें तो बच्चों के साथ उनकी बातचीतके तरीके में बदलाव आएगा। यह आंकलन अधिगम कासुगमीकरण करता है, शिक्षक को अपना शिक्षण बच्चोंकी जरूरतों के अनुसार समायोजित करने के लिएफीडबैक देता है, बच्चों को उनके अधिगम के बारे मेंफीडबैक देता है और प्रकरण में बच्चे की सामने आनेवाली कठिनाइयों का निदान करता है। संक्षेप में हमयह कह सकते हैं कि रचनात्मक आंकलन अधिगम 'केलिए' है।

2. योगात्मक मूल्यांकनः
(Summative Evaluation)

योगात्मक मूल्यांकन विद्यार्थियों के अंतिम व्यवहार को जानने हेतु संचालित किया जाता है। योगात्मक मूल्यांकन में प्रमुख शब्द प्रमाणपत्र होता है। योगात्मक मूल्यांकन संपूर्ण पाठ्यक्रम की समाप्ति के पश्चात् संचालित किया जाता है। योगात्मक मूल्यांकन में प्रदत्त प्रतिपुष्टि स्वभावतः अंतिम होती है तथा जिसे विद्यार्थी के व्यवहार को परिष्कृत करने हेतु उपयोग नहीं किया जा सकता है क्योंकि यह एक सत्र की समाप्ति पर संचालित किया जाता है। योगात्मक मूल्यांकन के आधार पर विद्यार्थी प्रमाणपत्र प्राप्त करते हैं या अगली कक्षा हेतु प्रोन्नत किए जाते हैं। योगात्मक

मूल्यांकन में प्रयुक्त विभिन्न तकनीक एवं उपकरण मौखिक या अमौखिक परीक्षण तथा शिक्षक निर्मित या मानकीकृत परीक्षण होते हैं।

सभी प्रकार की मूल्यांकन विधियों में कुछ समानताएं और विभिन्नताएं होती हैं। समानता यह है कि सभी अधिगम के आंकलन से सम्बन्धित हैं। सभी को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के विभिन्न चरणों के दौरान संचालित किया जाता है। परंतु वे अपने उद्देश्यों, प्रक्रियाओं, प्रमाणों को एकत्रित करने में प्रयुक्त तकनीकों एवं उपकरणों, प्रतिपुष्टि करने की प्रक्रियाओं, प्रकार्यों, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की समयावधि तथा भावी उद्देश्यों हेतु अपने उपयोग के रूप में भिन्न होते हैं।

स्कूल में योगात्मक आंकलन में ज्यादा प्रत्यक्षता होती है। यह एक ग्रेड या इकाई या सत्र के अन्त में अधिगम के परिणामों की जाँच करता है। इससे यह जानने में मदद मिलती है कि शिक्षण एवं अधिगम के लक्ष्यों को किस हद तक प्राप्त कर लिया गया है। Kellough and Kelloughशिक्षण और अधिगम को उन पारस्परिक क्रियाओं के रूप में देखते हैं जो एक-दूसरे पर निर्भर होती हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं।

विद्यार्थियों, शिक्षकों, माता-पिता और स्कूल के अधिकारियों के लिए यह जानना महत्त्वपूर्ण है कि अध्ययन के दौरान बच्चों ने कितना सीखा है। जो आंकलन किसी कोर्स, इकाई या सत्र के अन्त में किया जाता है और जिससे मिली जानकारी को ग्रेडिंग या प्रमोशन के लिए प्रयोग में लाया जाता है, उसे योगात्मक आंकलन कहते हैं। यह तब होता है जब शिक्षक बच्चे के काम की अन्तिम प्रस्तुति का आंकलन करते हैं। मुख्य रूप से इसका सम्बन्ध अधिगम के परिणामों से है न कि शिक्षण कीयोजना से और यह अधिगम का आंकलन है।

योगात्मक आंकलन में शिक्षक द्वारा पढ़ाई गई सब बातों को शामिल करना होता है तथायह रचनात्मक आंकलन पर भी चिन्तन करता है।इस प्रकार योगात्मक आंकलन का मुख्य प्रयोजन कोर्सके पाठ्यक्रम के अधिगम के साथ-साथ बच्चे के ज्ञान,कौशलों व समझ की थाह लेना है। अधिगम की राहोंमें आगे बढ़ते समय योगात्मक आंकलन इस बात कोजानने के लिए भी किया जाता है कि बच्चे ने पाठ्यक्रमद्वारा नियत मानकों को प्राप्त किया है या नहीं। विविधप्रकार के योगात्मक आंकलनों को करने से शिक्षक अपने बच्चे के अधिगम को समझ पाते हैं। योगात्मक आंकलनों के अनेक रूप हैं जैसे-

पेपर पेंसिल टेस्टः विद्यार्थियों से किसी इकाई, सत्र याकोर्स के अन्त में टेस्ट लिखने को कहा जाता है।

लिखित कार्यः विद्यार्थियों से किसी टॉपिक या गतिविधिया घटना के बारे में लिखने को कहा जाता है और इस

कार्य के साथ एक रूब्रिक भी दिया जाता है।

मौखिक कार्यः शिक्षक विद्यार्थियों से कोई कहानी याघटना या टॉपिक सुनाने को कहते हैं और बच्चे द्वारा

हासिल किए गए कौशलों और क्षमताओं की जाँच करतेहैं।

मानक टेस्टः बोर्ड व प्रवेश परीक्षा जैसी परीक्षाओं कीशर्तों को पूरा करने के लिए विद्यार्थी विषय-सामग्री से

सम्बन्धित मानक टेस्ट लिखते हैं। योगात्मक आंकलनमें यह बात महत्त्वपूर्ण है कि ऊपर बताए गए सभीप्रकार के आंकलनों से मिली जानकारी को विद्यार्थियोंकी उपलब्धि या ग्रेडिंग या प्रमोशन के लिए प्रयोग मेंलाया जाए।

रचनात्मक मूल्यांकन शिक्षण अधिगम के साथ-साथ निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इसका प्रयोग रचनात्मक वातावरण में नियमित रूप से छात्रों की प्रगति जानने के लिए किया जाता है। शिक्षक कक्षा में अनौपचारिक रूप से बच्चे के प्रदर्शन पर नजर रख कर उसे प्रतिपुष्टि और पुनर्बलन प्रदान करता है। इस मूल्यांकन का महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि बालक अपना मूल्यांकन स्वयं भी कर सकता है। इसके मुख्य उपकरण अवलोकन, साक्षात्कार, चेकलिस्ट आदि हो सकते हैं। इसके लिये प्रश्नमंच, परियोजनाएँ, समूह चर्चा, वाद-विवाद आदि युक्तियों का प्रयोग कर सकते हैं। इसकी मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(1) इसका उद्देश्य अधिगम के लिये मूल्यांकन है।
(2) यह छात्रों को प्रतिपुष्टि प्रदान करता है।
(3) इसका स्वभाव उपराचात्मक होता है।
(4) विद्यार्थियों को अपनी कमियाँ सुधारने के लिए एक मंच प्रदान करता है। विद्यार्थी की सहभागिता पर बल देता है।
(5) छात्रों के निष्पादन का विश्लेषण कर शिक्षक अध्यापन शैली में परिवर्तन कर सकता है।
(6) विद्यार्थी अपनी क्षमताओं को स्वयं पहचान कर उनमें सुधार कर सकता है।
(7) यह अनौपचारिक/औपचारिक दोनों प्रकार से हो सकता है।
(8) रचनात्मक मूल्यांकन की वह प्रक्रिया है जिससे विद्यार्थी में भाषा के विभिन्न कौशलों का विकास हो सकता है।
(9) यह प्रक्रिया विद्यार्थी केन्द्रित है।

एक निश्चित अवधि के पश्चात् वर्ष में दो/तीन बार योगात्मक मूल्यांकन किया जाता है। इसके द्वारा यह जाना जाता है कि छात्र ने कितना सीखा। इसके आधार पर छात्रों को ग्रेड देकर क्रमोन्नति दी जाती है। इसकी प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

(1) इसके द्वारा अधिगम का मूल्यांकन किया जाता है।
(2) छात्रों को ग्रेड प्रदान किया जाता है।
(3) निश्चित समयावधि में वर्ष में 2/3 बार यह मूल्यांकन होता है।
(4) यह एक पारंपारिक विधि है।
(5) अधिकतर योगात्मक मूल्यांकन पेपर-पेंसिल परीक्षण द्वारा होता है।
(6) योगात्मक मूल्यांकन सार्वजनिक जीवन में उपलब्धियों में एक पहचान बनाता है।
(7) यह उत्पाद केन्द्रित होता है।

योगात्मक आंकलन एवं रचनात्मकआंकलन दोनों एक-दूसरे के सहायक हैं और उन्हेंसाथ में ही देखना चाहिए। कुछ परिस्थितियों में वे एकसे ही दिखाई दे सकते हैं, पर उनके उद्देश्य व समयउनके लेबल को निर्धारित करते हैं। के बर्क की पुस्तक'बैलेंस्ड असेसमेण्ट मॉडल' इन दोनों

आंकलनों कीतुलना इस प्रकार से करती है : रचनात्मक आंकलनप्रशिक्षण के उन पहियों के समान हैं जो बच्चों को स्कूलके पार्किंग स्थल में साइकिल चलाने का अभ्यास करनेऔर आत्मविश्वास जुटाने में सहायता देते हैं। प्रशिक्षणके पहियों को हटा देने के बाद उन्हें योगात्मक आंकलनका सामना करना पड़ता है ताकि वे अपनी मंजिल कीओर केवल दो पहियों पर सवार होकर चल सकें। लीशुलमैन ने आंकलन को 'अपर्याप्तता का मेल' कहा हैक्योंकि उनका मानना था कि एक या दो उपकरणोंका उपयोग करके किसी की क्षमताओं का आंकलनकरना सम्भव नहीं है। इसे तो रचनात्मक आंकलनएवं योगात्मक आंकलन की कई आंकलन रणनीतियोंका मिला-जुला रूप होना चाहिए जो बच्चे की शक्तियों,कमजोरियों, रुचियों, कौशलों और अभिप्रेरण के बारे में सूचित करें।

3. निदानात्मक मूल्यांकनः
(Diagnostic Evaluation)

यह मूल्यांकन रचनात्मक मूल्यांकन के साथ किया जाता है। इसका प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों के सीखने या पढ़ने में कमजोर होने के अर्न्तनिहित कारणों का पता लगाना होता है। कई बार इसकी आवश्यकता शिक्षण से पूर्व भी होती है जिससे विद्यार्थी की सही स्थिति का ज्ञान हो सके और उसके आधार पर आगे उसको पढ़ाया जा सके।

नैदानिक मूल्यांकन अध्यापक को विद्यार्थियों का उनकी दक्षता के अनुसार वर्गीकृत करने में सहायता करता है। जिससे उनकी योग्यतानुसार पढ़ाने के लिए कार्यक्रम बनाये जा सकें।

9. मूल्यांकन के उपकरणः
(Tools of Evaluation)

विद्यार्थियों की शैक्षणिक योग्यताओं को मापने के लिए हम प्रायः उपलब्धि, बुद्धि, अभिरूचि आदि जैसे परीक्षणों का उपयोग करते हैं किंतु अधिकांश सह-शैक्षणिक योग्यताओं को मापने के लिए हम निर्धारण मापनी सूची. परीक्षण सूची, अनुसूची प्रश्नावली आदि जैसे उपकरणों का उपयोग करते हैं। सामान्य भाषा में, आप एक उपकरण को किसी भी चीज को मापने के एक उपकरण के रूप में समझ सकते हैं। शिक्षा में, उपकरण शब्द विद्यार्थियों की विविध विशेषताओं को मापने के लिए प्रयुक्त होता है।

1. निर्धारण मापनी (Rating Scale)

यह महत्वपूर्ण उपकरणों में से एक है जो मनोविज्ञान एवं शिक्षा के क्षेत्र में विस्तृत रूप से प्रयुक्त होती है। यह किसी भी स्थिति, विचार, वस्तु, चरित्र, व्यक्ति या विशेषताओं पर विद्यार्थियों की मनोवृत्तियों का आंकलन करने के लिए प्रयुक्त होती है। एक निर्धारण मापनी में विचारों को विविध स्तरों जैसे अत्यधिक सहमत और असहमत, अत्यधिक संतुष्ट, संतुष्ट एवं असंतुष्ट आदि में दिया जाता है। एक निर्धारण मापनी हमेशा -विषम अंकों जैसे 3 अंकों, 5 अंकों, 7 अंकों या 9 अंकों में तैयार की जाती है। यह विषम संख्या बिन्दुओं में होता है क्योंकि एक निश्चित मध्य मापन बिन्दु केवल तभी संभव होगा जब मापनी विषम बिन्दुओं में हो। आपने अवश्य अवलोकित

किया होगा कि बहुत से लोगों में अपने विचारों को मध्य रेटिंग में रखने की मनोवृत्ति होती है। निर्धारण मापनी को विभिन्न श्रेणियों में प्रयुक्त किया जा सकता है। विद्यालयों में प्रयुक्त होने वाले निर्धारण मापनियों की सबसे सामान्य श्रेणियाँ इस प्रकार हैं:

(i) आंकिक निर्धारण मापनी (Numeric Rating Scale): इस प्रकार की निर्धारण मापनी में विभिन्न डिग्रियों में अंक निर्धारित किए जाते हैं। इसलिए इसे आंकिक निर्धारण मापनी कहा जाता है। एक आंकिक मापनी में एक अवलोकनकर्ता को निश्चित अंकों का एक क्रम आपूर्ति की जाती है। मदों के अनुसार नियत किए गए अंक निश्चित अर्थ/व्याख्या रखते हैं। नीचे दिए गए उदाहरण को देखें:

प्रश्न: आप अपनी कक्षा में सुधीर के व्यवहार को कैसा मानते हैं? (इस उदाहरण में सुधीर एक विद्यार्थी है)

9 - सर्वाधिक खुश
8 - अत्यधिक खुश
7 - मध्यम खुश
6 - किंचित खुश
5 - उदासीन
4 - किचित नाखुश
3 - मध्यम नाखुश
2 - अत्यंत नाखुश
1 - सर्वाधिक नाखुश

9 बिन्दु पैमाना के बजाय आप 3 बिन्दु 5 बिन्दु या 7 बिन्दु मापनी अपना सकते हैं। एक5 बिन्दु पैमाना में आप निम्नलिखित अभिलक्षणों को रख सकते हैं:

5 - सर्वाधिक खुश
4 - मध्यम खुश
3 - उदासीन
2 - मध्यम नाखुश
1 - सर्वाधिक नाखुश

आंकिक निर्धारण मापनी बनाने एवं लागू करने में सरलतम है। यह परिणामों के रखरखाव के संदर्भ में भी सरलतम है। फिर भी अन्य प्रकार के पैमानों के पक्ष में आंकिक मापनी प्रायः अस्वीकार कर दिए जाते हैं क्योंकि ऐसा विश्वास किया जाता है कि वे विविध पक्षपातों एवं त्रुटियों से ग्रस्त हैं।

(ii) आलेखीय निर्धारण मापनी (Graphical Rating Scale): आलेखीय मापनी एक लोकप्रिय और बहुत अधिक प्रचलित निर्धारण मापनी है। इस मापनी में निर्धारण करने वाले की सहायता के लिए विविध संकेतों के साथ ऊर्ध्वाधर एवं क्षैतिज सीधी रेखा दिखाई गई है। यह रेखा या तो इकाइयों में टुकड़े में या सतत है। यदि रेखा टुकड़ों में है तो अलग-अलग मामलों में इकाइयों की संख्या बदल सकती हैं। हम इसे दिए गए उदाहरण से समझने की कोशिश करते हैं।

प्रश्नः कक्षा में शिक्षक कितने प्रभावी थे?

1	2	3	4	5
बहुत प्रभावी	मध्यम प्रभावी	औसत	मध्यम निष्प्रभावी	बिल्कुल निष्प्रभावी

प्रश्नः शिक्षा की सेमेस्टर प्रणाली विद्यार्थियों को नियमित तौर पर उनके अध्ययन में लगे रहने को प्रोत्साहित करती है।

1	2	3	4	5
अत्यधिक सहमत	सहमत	अनिर्णित	असहमत	बिल्कुल असहमत

उपर्युक्त दोनों उदाहरण 5 विन्दु निर्धारण मापनी में प्रस्तुत किए गए हैं। इस प्रकार के मदों में स्कोर करना परीक्षण में दिए गए निर्देशों के अनुसार होता है। यदि यह सकारात्मक मद है तो उत्तर के अत्यधिक सकारात्मक डिग्री को अत्यधिक प्वाइंट दिए जाते हैं और नकारात्मक मद को कम प्वाइंट उदाहरणार्थ एक सकारात्मक मद में, अत्यधिक सहमत को 5 प्वाइंट, सहमत को 4 अनिर्णित को 3, असहमत को 2 और बिल्कुल असहमत को 1 दिया जा सकता है। नकारात्मक मदों के मामले में यह उल्टा हो जाता है।

निर्धारण मापनी की सीमाएँः निर्धारण मापनी की निश्चित सीमाएँ हैं। उनमें से कुछ पर इस प्रकार चर्चा की गई हैः

1. **उदारता की त्रुटिः** रेटिंग (निर्धारण) करने वालों के बीच एक स्थिर प्रवृत्ति होती है कि जिन्हें वे अच्छी तरह से जानते हैं या जिनसे वे निकटता से सम्बन्ध रखते हैं उन्हें दूसरे की अपेक्षा अधिक रेटिंग देते हैं। रेटिंग करने वाले ऐसे लोगों को 'आसान रेटर' कहा जाता है। कुछ रेटर आसान रेटिंग की भावना के प्रति जागरूक होते हैं और फलस्वरूप जितना रेट करना चाहिए उससे कम करते हैं। ऐसे रेटर मुश्किल रेटर कहे जाते हैं। सदस्यता त्रुटि किसी भी कारण से बहुत अधिक या बहुत कम रेटिंग करने के लिए एक रेटर की सामान्य एवं संगत प्रवृत्ति को दिखाता है ।

2. **केन्द्रीय प्रवृति की त्रुटिः** अधिकांश रेटर व्यक्ति को पैमाना पर अत्यधिक रेट करने पर संकोच करते हैं, इसके बजाय ये पैमाने के मध्य का अनुकरण करते हैं। अतः परिणाम अप्रभावी हो जाते हैं।
3. **परिवेशीय प्रभावः** यह एक ऐसी विकृति है जो एक व्यक्ति के अंतर्गत विशेषताओं के समूह को धुंधला कर देती है। रेटर व्यक्ति की विशेषताओं के बारे में एक सामान्य राय विकसित करता है और विशिष्ट विशेषताओं पर उसकी रेटिंग प्रभाव से प्रभावित होती है। इससे यह जिन विशेषताओं की रेटिंग करता है उनके बीच एक झूठी सकारात्मक सहसम्बन्ध में परिणत हो जाता है।
4. **तार्किक त्रुटिः** यह इस तथ्य के कारण होता है कि निर्णयकर्ता जिन विशेषताओं को एक-दूसरे से तार्किक रूप से संबद्ध अनुभव करते हैं उनके लिए समान रेटिंग देते हैं।
5. **वैषम्य त्रुटिः** यह रेटर की उस प्रवृत्ति के रण होता है जिसमें पर दूसरों को स्वयं की दिशा से विपरीत रेटिंग करता है।
6. **सामीप्य त्रुटिः** यह देखा गया है कि एक रेटिंग पर सुदूर की विशेषताओं की अपेक्षासमीपस्थ विशेषताओं को उच्च रेटिंग होती है जबकि उनकी वास्तविक समानता लगभग समान होती है। इस त्रुटि को कुछ सीमा तक समान विशेषताओं को पृथक रखकर एवं भिन्न विशेषताओं को एक साथ निकट रखकर दूर किया जा सकता है।

2. प्रश्नावली (Questionare):

प्रश्नावली एक युक्ति है जो एक व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह को दिए गए कुछ मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक शीर्षकों पर प्रश्नों की एक श्रृंखला को समाविष्ट करता है। इसे कुछ समस्याओं के खोज के अंतर्गत रखकर आंकड़े प्राप्त करने के उद्देश्य से दिया जाता है। प्रश्नावली एक सामान्य उपकरण है जिसे हम शिक्षक प्रायः एक स्थिति, परिस्थिति या प्रभावी अभ्यास से आँकड़ों का संग्रह करने के लिए प्रयोग करते हैं।

प्रश्नावली हितधारकों से आँकड़ों के संग्रह करने के लिए तैयार किए गए प्रश्नों की प्रकृति के संदर्भ में वर्गीकृत किया जा सकता है। ये मुक्तांत या अमुक्तांत हो सकते हैं। मुक्तांत प्रश्नावलियों वे हैं जहाँ उत्तर देने वालों के पास उत्तर देने के सीमित तरीके होते हैं जैसे हाँ या नहीं या पूर्व परिभाषित उत्तरों के बीच से उत्तर सही या गलत का निशान लगाकर देते हैं। जबकि मुक्तांत प्रश्नावलियों में उत्तर देने वाले साझा करने स्पष्ट करने एवं अपने विचार रखने के लिए मुक्त होते हैं। हम मुक्त एवं बंद प्रश्नों के कुछ उदाहरणों पर चर्चा करते हैं।

मुक्तांत प्रश्नों (Open ended questions) के उदाहरण

1. भारत के इतिहास में स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाइयों में से किसी एक का वर्णन कीजिए।
2. भारत छोड़ो आंदोलन पर एक निबंध लिखें।

अमुक्तांत प्रश्नों (Closed ended questions) के उदाहरण

भारत छोड़ो आंदोलन कब हुआ था?

(क) 1941, (ख) 1942, (ग) 1943, (घ) 1944

अन्य वर्गीकरण के अनुसार, प्रश्नावली संरचित एवं असंरचित हो सकते हैं। एक संरचित प्रश्नावली में निश्चित मूर्त एवं निर्देशित प्रश्न होते हैं जबकि असंरचित प्रश्नावलियाँ प्रायः साक्षात्कार निर्देश के लिए प्रयुक्त होती हैं जो अनिर्देशात्मक है। विस्तृत रूप से फैले स्रोतों से सूचना संग्रह करने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला एक महत्वपूर्ण उपकरण है एवं तब प्रयुक्त किया जाता है जब तथ्यात्मक सूचना वांछित होती है।

प्रश्नावली के लाभः प्रश्नावली के कुछ लाभ निम्न प्रकार से दर्ज किए गए हैं:

1. उत्तरों को एक मानकीकृत तरीके से संग्रहित किया जाता है।
2. प्रश्नावलियाँ साक्षात्कारों की अपेक्षा निश्चित रूप से अधिक वस्तुनिष्ठ होती हैं।
3. सूचना संग्रह करने में सापेक्षिक रूप से तीव्र होती है।
4. एक विशाल समूह से संभाव्य सूचना संग्रहित की जा सकती है।

प्रश्नावलियों की सीमाएँ: यद्यपि, प्रश्नावली विस्तृत रूप से प्रयुक्त होने वाला एक उपकरण है परंतु इसकी कुछ निश्चित सीमाएँ भी हैं जिन्हें निम्न प्रकार से दर्ज किया जा सकता है:

1. बच्चों या निरक्षरों के साथ प्रयुक्त करना आसान नहीं है।
2. उत्तर देने वाले लिखित उत्तर देने को सहमत नहीं हो सकते हैं।
3. कभी-कभी जटिल एवं निर्णायक शीर्षकों पर प्रश्न बनाना मुश्किल होता है।
4. उत्तर देने वाले अपनी समझ के अनुसार प्रश्नों की व्याख्या करते हैं।
5. बाह्य कारक उत्तरों को प्रभावित कर सकते हैं।

3. अनुसूची (Schedule):

एक अनुसूची भी प्रश्नावली के रूप में निर्मित की जाती है। अनुसूचियाँ प्रश्नावली की अपेक्षा अधिक थकाउ होती हैं। अनुसूचियाँ अधिकांशत व्यवहार के प्रभावित क्षेत्र के स्व प्रतिवेदन का आंकलन करने के लिए समायोजन, व्यक्तित्व की विशेषताओं, रूचियों एवंमूल्यों को मापने के लिए प्रयुक्त की जाती हैं। यह प्रश्नों या कथनों की एक श्रृंखला से बना होता है जिसे व्यक्ति के लिए उत्तर हाँ या नहीं एवं सहमत एवं असहमत द्वारा दिया जाता है। इसे प्राथमिकताओं को प्रदर्शित करने या विषय के विशिष्ट व्यवहार का वर्णन वाले मदों को बनाने के लिए कुछ समान तरीकों से भी उत्तर दिया जा सकता है।

अनुसूची में, कथन प्रथम पुरुष में रखे जाते हैं। जैसे मैं सोचता हूँ कि तुलनात्मक रूप से मैं अन्य की अपेक्षा अधिक तनाव में हुँ। प्रश्नावली में एक प्रश्न मध्यम पुरुष में होता है। जैसे- क्या आप सोचते हैं कि आप अपने आसपास के लोगों की अपेक्षा अधिक तनाव में रहते हैं। अनुसूची शब्द दूसरे अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। जैसे विविध सामग्रियों की सूची कार्यालय कक्ष में

उपलब्ध है या वस्त्रों की सूची धोबी को दी गई है आदि, परंतु शैक्षणिक मूल्यांकन में एक विद्यालय या कक्षा-कक्ष स्थितियों में अनुसूचियाँ ऊपर वर्णित संकल्पनाओं के लिए प्रयुक्त होती हैं।

अनुसूची के प्रशासन के लिए दिशा-निर्देश इस प्रकार हैं:

1. शिक्षक को मुद्रित निर्देशों को विद्यार्थियों को बहुत स्पष्टता से वर्णित करनाचाहिए।
2. शिक्षकों को विद्यार्थियों को स्पष्ट करना चाहिए कि आँकड़ों को गुप्तरखा जाएगा।
3. सूची या प्रश्नावली को भरने के तरीके से संबद्ध कोई शंका हो तो शिक्षक को इसेदूर करना चाहिए।
4. उत्तर के प्रति प्रेरक मनोदशा तैयार करने के लिए शिक्षक को समय-समय परसावधानियाँ रखनी चाहिए।

4. परीक्षण सूची (Test List):

कॉल (1997) के अनुसार, परीक्षण सूची एक सामान्य युक्ति है जो सामग्रियों की एक तैयार सूची को धारण करती है जो पढ़ाए जाने वाली समस्या से संबद्ध होने के नाते शिक्षक द्वारा तैयार की जाती है। प्रत्येक सामग्री के पश्चात् अवलोकनकर्ता द्वारा उपस्थित एवं अनुपस्थित प्रदर्शित करने के लिए स्थान दिया गया होता है। परीक्षण के समय हाँ या नहीं लिखकर सामग्रियों की संख्या के प्रकार को उपयुक्त शब्द या संख्या द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

तथ्यों से संबद्ध आँकड़ों का संग्रह करने एवं तदनुसार कार्य करने का एक व्यवस्थित एवं तीव्र विधि परीक्षण सूची है। एक बहुत सरल उदाहरण नीचे दिया गया है:

उदाहरणार्थ

क्या विद्यालय भवन अग्निरोधी है?	हाँ/नहीं
क्या विद्यालय ने वर्षा जल संग्रह नीति अपनाई है?	हाँ/नहीं
क्या विद्यालय भवन भूकंपरोधी है?	हाँ/नहीं

यह ध्यान देने योग्य है कि परीक्षण सूची पर संग्रहित उत्तर एक तथ्य के रूप में है न कि किसी निर्णय में है। शैक्षणिक सर्वेक्षण, विद्यालय के पुस्तकालय की परीक्षण, प्रयोगशाला, खेल सुविधाएँ, विद्यालय भवन, पाठ्यपुस्तकों आदि की परीक्षण के लिए तथ्यों को एकत्रित करने में यह एक अच्छा उपकरण है। आपके विद्यालय में अन्य सुविधाओं की परीक्षण के लिए भी इसे प्रयुक्त किया जा सकता है।

परीक्षण सूची कक्षा कक्ष की निर्देशात्मक गतिविधियों जैसे विद्यार्थियों के कार्य व्यवहारों का अध्ययन कक्षा कक्ष निर्देशों का पर्यवेक्षण, शिक्षक-शिष्य सम्बन्ध आदि में भी लागू होती हैं।

5. साक्षात्कार अनुसूची (Interview Schedule):

साक्षात्कार एक संप्रेषण या संवाद है जिससे एक साक्षात्कारकर्ता साक्षात्कार देने वाले से आमने सामने की स्थिति में शाब्दिक रूप से उत्तर देता है। एक साक्षात्कार इलैक्ट्रानिक मीडिया के

माध्यम से भी आयोजित किया जा सकता है। इसे फोन या इंटरनेट का उपयोग कर स्काइप पर भी किया जा सकता है। यह एक व्यक्ति या उसके पड़ोस के बारे में अपेक्षित आँकड़ों का संग्रह करने की एक सामान्य तकनीक है। साक्षात्कार अनुसूची एक उपकरण है जिसकी सहायता से साक्षात्कार आयोजित किया जाता है।

साक्षात्कार अनुसूची को जिस उद्देश्य के लिए संरचित किया गया है, उसके आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। यदि यह शोध परिकल्पना का समाधान करता है तो यह शोध साक्षात्कार अनुसूची है, यदि यह रोग विषयक उद्देश्य के लिए है तो यह एक रोग विषयक साक्षात्कार अनुसूची है।

संरचना के आधार पर साक्षात्कार अनुसूचियों को संरचित या असंरचित साक्षात्कार के रूप में वर्गीकृत किया गया है:

1. एक संरचित साक्षात्कार अनुसूची वह है जिसमें अपनाई जाने वाली प्रविधि मानकीकृत होती है और साक्षात्कार से पहले ही निर्धारित होती है। साक्षात्कार देने वाले के सामने उसी प्रकार के प्रश्न प्रस्तुत किए जाते हैं और साक्षात्कार देने वाले के लिए निर्देशों की शब्दावली विशिष्ट होती है।
2. असंरचित साक्षात्कार अनुसूची में प्रश्नों की श्रृंखला पहले से निर्धारित होती है किंतु साक्षात्कारकर्ता प्रश्नों का पुनर्गठित करने, समय एवं साक्षात्कार के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए पूरी तरह मुक्त होता है।

6. अवलोकन अनुसूची (Observation Schedule):

आंकलन का पहला अभ्यास है अवलोकन जिसे हम अपने कक्षा कक्ष में करते हैं। प्रत्येक अवलोकित घटना, अभिव्यक्ति तथा प्रतिक्रिया शिक्षकों के लिए उपयोगी आँकड़ा है। अतः अवलोकन हमारे लिए एक प्रभावी उपकरण है। अवलोकन वह प्रक्रिया है जिसमें एक या अधिक व्यक्ति अवलोकन करते हैं कि वास्तविक जीवन स्थिति में क्या हो रहा है और वह पूर्व नियोजित योजना के अनुसार संगत घटनाओं को दर्ज एवं वर्गीकृत करते हैं। यह नियंत्रित एवं अनियंत्रित दोनों स्थितियों में व्यक्ति के खुले व्यवहार का मूल्यांकन करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है (कौल, 1997)

अवलोकन अनुसूचियाँ, गणनाएँ, तथ्य, सामग्रियाँ अथवा अन्य आँकड़े हैं. अवलोकन प्रक्रिया के अन्तर्गत अवलोकित किए जाते हैं। प्रश्नावलियों के समान अवलोकनों को भी संरचित एवं असंरचित अवलोकन के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। इसे सहभागी एवं असहभागी अवलोकन के रूप में भी वर्गीकृत किया जा सकता है। यदि किसी मामले में अवलोकित होने वाली चीजें उपयुक्त रूप से परिभाषित, रिकार्डिंग की शैली, अवलोकित सूचना, अवलोकन की मानकीकृत स्थितियाँ और अवलोकन के संगत आँकड़ों का चयन उपयुक्तता से परिभाषित है तो यह एक संरचित अवलोकन है (कोठारी एवं गर्ग, 2014) और अनुसूची एक संरचित अवलोकन अनुसूची है। दूसरी तरफ जब ये सब चीजें अवलोकन के पूर्व निर्धारित पहलू नहीं है तो ऐसी अवलोकन अनुसूचियाँ असंरचित अनुसूचियाँ है।

अवलोकन के गुणः

अवलोकन के कुछ गुण निम्नलिखित हैं:

1. अवलोकन के माध्यम से आँकड़े प्राकृतिक व्यवस्था में संग्रहित किए जाते हैं।
2. अवलोकित आँकड़े प्रत्यक्ष होते हैं।
3. चूँकि आँकड़े प्रत्यक्ष होते हैं अतः अवलोकन करते समय हम सह-सम्बन्ध कर सकतेहैं कि क्या कहा गया है और क्या दिखाया गया है।
4. सूचना प्रदान करने की लोगों की इच्छा या योग्यता पर विश्वास नहीं करता है।

अवलोकन के दोषः

अवलोकन के निम्नलिखित दोष भी हैं:

1. अवलोकन यदि योजनापूर्वक नहीं किया गया तो यह प्रामाणिक सूचना नहीं प्रदान करेगा।
2. अवलोकनकर्ता का पूर्वाग्रह आ सकता है।
3. जब व्यक्ति यह जानता है कि वह अवलोकित हो रहा है तो उसके व्यवहार में परिवर्तत आ सकता है और वह वास्तविक समस्याओं को साझा नहीं कर सकता।

सारणी : विविध उपकरणों की शक्तियाँ एवं कमियाँ

उपकरण	शक्तियाँ	कमियाँ
परीक्षण	• कम खर्चीला • मानक प्रश्न • व्यावसायिक परीक्षण तकनीकी गुणों में मजबूत होते हैं। • वस्तुनिष्ठ परीक्षण स्कोर करने में आसान हैं। • मानकीकृत परीक्षण सभी विषयों एवं कक्षाओं के लिए एक समान प्रक्रिया प्रदान करता है।	• नियम अनुपर्युक्त हो सकते हैं। • मानकीकृत परीक्षण अधिक विस्तृत एवं सामान्य भी हो सकते हैं। • मानक स्कोर विभिन्नताओं को विकृत कर सकते हैं। • मानकीकृत परीक्षण वैधता की झूठी समझ दे सकते हैं। • स्थानीय स्तर पर विकसित कार्य प्रायः तकनीकी रूप से कमजोर उत्सुकता देते हैं। • जो पढ़ एवं लिख सकते हैं उन्हीं के लिए हैं।
मापनी	• प्रशासन में कम समय लेते हैं। • रेटर के लिए रूचिकर है। • न्यूनतम प्रशिक्षण द्वारा किए जा सकते हैं। • अनुप्रयोग की विस्तृत सीमा	• बनाने में समय लेते हैं। • पद यदि वैध निर्मित नहीं है आँकड़े गलत सूचना दे सकती है। • कुछ रेटरों के लिए उत्तर देने में तीन से अधिक प्वाइंट वाले पैमाने मुश्किल हैं।
प्रश्नावली*	• मितव्ययी • गुमनाम हो सकते हैं। • मानक प्रश्न एवं एक समान प्रक्रिया • प्रायः अंकन में आसान • उत्तरों के बारे में सोचने के लिए समय प्रदान करता है।	• मेल की गई प्रश्नावली की उत्तर दर। • परीक्षण एवं स्पष्ट करने में अयोग्य। • मुक्तांत पदों का अंकन। • जाली एवं सामाजिक वांछनीयता। • जो लिख एवं पढ़ सकते हैं उनके लिए। • पूर्वाग्रह से ग्रसित या अनेकार्थक • उत्तर का समुच्चय

उपकरण	शक्तियाँ	कमियाँ
अनुसूचियाँ	• थकाऊ • स्व-प्रतिवेदन प्रभावी व्यवहार के आंकलन के लिए उपयुक्त • तब प्रयुक्त होता है जब तीव्र पुनरावलोकन अपेक्षित है।	• केवल तब उपयोग की जा सकती हैं जब वस्तुओं को सूचीबद्ध करना अपेक्षित है। • व्याख्याओं का अभाव • गलत तैयारी में अनुसूचियों के अनिवार्य तत्वों का अभाव हो सकता है।
जाँच सूची	• सरल युक्ति • उपयोग में आसान • आँकड़ों का तीव्र संगह • व्यवस्थित	• उत्तर में सीमित • एक पक्ष के लिए सीमित • तथ्यात्मक • तब उपयोगी है जब अन्य उपकरणों के सहयोग में प्रयुक्त हो।
साक्षात्कार*	• नमनीय • अनुकूलन योग्य • अन्वेषण एवं स्पष्ट करने की योग्यता • अशाब्दिक व्यवहार को शामिल करने की योग्यता • उच्च उत्तर दर • नहीं पढ़ने वाले के साथ प्रयुक्त	• महँगी प्रक्रिया • समय लेने वाली • साक्षात्कारकर्त्ता पूर्वाग्रह से ग्रस्त • गुमनाम नहीं • विषय के प्रभाव • साक्षात्कारकर्त्ता के अभिलक्षणों का प्रभाव • प्रशिक्षण की आवश्यकता • अग्रणी प्रश्न
अवलोकन* अनुसूची	• स्वाभाविक व्यवहार को पकड़ता है। • सामाजिक वांछनीयता, उत्तर के समुच्चय, एवं विषय के प्रभावों को कम करता है। • तुलनात्मक रूप से परोक्ष • कम स्पष्ट अवलोकनों के लिए विश्वसनीय	• महँगी प्रक्रिया • समय लेने वाली • विषय पर अवलोकनकर्त्ता का प्रभाव • प्रेक्षक पूर्वाग्रह ग्रस्त • प्रशिक्षण की आवश्यकता • जटिल व्यवहार एवं उच्च प्रभाव वाले अवलोकनों के लिए विश्वसनीयता कठिन • अन्वेषण एवं स्पष्ट करने में अयोग्य • प्रायः गुमनाम नहीं • उच्च प्रभाव वाले अवलोकनों की व्याख्या

(स्रोत : मैकमिलन एवं सुमैकर, 2006)

सभी उपकरणों की अपनी अच्छाइयाँ एवं कमियाँ भी हैं। सभी प्रकार के मापन के लिए एकमात्र उपकरण उपयोग के लिए उपयुक्त नहीं हो सकता है। एक परीक्षण सूची का उपयोग कर एकत्रित किए गए आँकड़ों को एक मापनी से प्राप्त आँकड़ों के लिए संभव नहीं हो सकता, साक्षात्कार से प्राप्त आँकड़ें भी कभी-कभी अवलोकन से भिन्न होते हैं।

7. उपाख्यानात्मक रिकार्ड (Anacdotal Record):

प्रत्येक शिक्षक (अभिभावक, मित्र, संबंधी आदि भी) अपने विद्यार्थियों का दैनिक आधार पर अवलोकन करते हैं और इन अवलोकनों को उनकी अपनी समझ या दूसरों की समझ के लिए निर्देशक के रूप में दर्ज किया जा सकता है जो बाद में विद्यार्थियों का सामना करेंगे। अनौपचारिक अवलोकनों द्वारा दर्ज किया गया एक विद्यार्थी के ऐसे रिपोर्ट उपाख्यान के रूप में (न केवल वर्तमान बल्कि अतीत का भी जो है, बचपन, नर्सरी के दिनों आदि का) जो अभिभावकों, सहोदरों, मित्रों एवं साथी समूहों द्वारा दर्ज किए जाते हैं वे उपाख्यान मूलक रिकार्ड कहलाते हैं।

उपाख्यात्मक रिकार्ड किसी के व्यवहार के अवलोकन के लिए साधन प्रदान करते हैं। घटनाओं का एक रिकार्ड एक विश्वसनीय आँकड़ा है जो जब से बना है और जब हम इसे देखना

चाहते हैं तब तक यह अपरिवर्तित रहेगा। ऐसे रिकार्ड, का एक समुच्चय स्थायी साक्ष्य प्रदान करता है जिस पर में मूल्य निर्धारण किया जा सकता है। एक बच्चे के व्यवहार के अवलोकन का एक रिकार्ड बनाना, एक तात्कालिक रिकार्ड है, जबकि मस्तिष्क में व्यवहार ताजा रहता है जो विश्वसनीय होता है, क्योंकि यह स्मृति की विकृतियों एवं सीमाओं को समाप्त करता है। एक ऐसे रिकार्ड को तुलनात्मक रूप से प्रत्यक्ष एवं क्रियाओं के वस्तुनिष्ठ रिपोर्ट को प्रदान करने के लिए अभ्यास के साथ प्रयुक्त किया जा सकता है।

ये रिकार्ड दो उद्देश्यों को पूरा करते हैं। पहला उद्देश्य है अपने विद्यार्थियों को उनकी समझ विकसित करने और उनकी सहानुभूतिपूर्ण अर्न्तदृष्टि बढ़ाने के दृष्टिकोण के साथ पढ़ाने में आपको अभ्यास देना है। दूसरा उद्देश्य है कि यह एक व्यक्ति के व्यवहार के निश्चित पहलुओं की अनौपचारिक एवं प्रायः गुणात्मक तस्वीर प्रदान करता है। यह व्यक्तिगत समस्याओं के सामाजिक कार्यान्वयन या समायोजन का एक प्राथमिक पहलू है। एक कमरे में एक बच्चे का अन्य बच्चों के साथ अंतःक्रिया आक्रमकता या निष्कासन घटित होते हैं जो समूह में बच्चे की भूमिका और इस पर उसकी प्रतिक्रिया पर प्रकाश डालता है जो रिकार्ड के लिए अच्छी सामग्रियाँ हैं। व्यक्ति के तनाव, उनका अनुकूलन, दैनिक मनोदशा, मानसिक स्थिति या विशेष दशा एवं समायोजन आदि बुरे रिकार्ड हैं।

उपाख्यात्मक रिकार्ड पर्याप्त विवरणों के साथ एक बच्चे के जीवन की एक घटना का सटीक/तथ्यात्मक रिपोर्ट होना चाहिए ताकि यह उनके व्यवहार का एक सार्थक साक्ष्यहो।

एक अच्छे उपाख्यानात्मक रिकार्ड की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

1. यह किसी घटना का सटीक विवरण प्रदान करता है।
2. यह घटनाओं को एक अर्थ देने के एक उपयुक्त प्रणाली का वर्णन करता है।
3. यदि यह दर्ज करने वाले द्वारा मूल्यांकन या व्याख्याओं को सम्मिलित करता है तो यह व्याख्या विवरण से पृथक हो जाती है और इसकी अलग स्थिति स्पष्टतः चिहिन्त होती हैं।
4. घटना बच्चे के व्यक्तिगत विकास या सामाजिक अंतःक्रियाओं से जुड़ती है।

8. विद्यार्थी पोर्टफोलियो एवं रूब्रिक (Student Portfolio and Rubric):

एक पोर्टफोलियो एक उद्देश्यपूर्ण व्यवस्थित संग्रह और विद्यार्थी के कार्य का मूल्यांकन है जो अधिगम उद्देश्यों की प्रगति के दस्तावेज है। पोर्टफोलियों का उपयोग वर्षों से विविध क्षेत्रों जैसे वास्तुकला, कला एवं पत्रकारिता में निष्पादन के आंकलन के प्राथमिक विधि के रूप में किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में पोर्टफोलियो का उपयोग विशेषतः पठन एवं लेखन कौशलों के आंकलन में तीव्रता से किया जा रहा है (मैकमिलन एवं शुभेकर, 2006, पृ. 193)। एक पोर्टफोलियो (एक क्षेत्र में विद्यार्थी के कार्य का संग्रह है जो वृद्धि, आत्मचिंतन एवं उपलब्धि को दिखाता है) कार्य का एक व्यवस्थित संग्रह है। जिसमें प्रायः चल रहे कार्य, पुनरावृत्तियों, विद्यार्थी का आत्म-विश्लेषण और चिंतन सम्मिलित होते हैं जिसे विद्यार्थियों ने सीखा है (पोहेम, 2008)।

पोर्टफोलियो विद्यार्थी के कलात्मक या लिखित कार्य को समाविष्ट करता है। विद्यार्थी को पोर्टफोलियो में वर्णित प्रत्येक प्रविष्टि या उसके महत्व को भी अवश्य सम्मिलित करना चाहिए। वे इसमें आलेख, आरेख, तस्वीर या डिजिटल स्लाइड शो, पावर प्वाइंट प्रस्तुति आदि को सम्मिलित कर सकते हैं। वे विद्यार्थियों के पठन, उनके कार्य, निबंध या कविता के असंपादित एवं अंतिम प्रारूपों की रिकार्डिंग पुस्तकों की सूची, एक विशेष प्रकरण के संदर्भों, सहपाठी की टिप्पणियों, वीडियो टेप, प्रयोगशाला रिपोर्ट और कम्प्यूटर कार्यक्रमों को भी सम्मिलित कर सकते हैं। किसी क्षेत्र में पढ़ाई गई एवं आंकलित की गई कोई चीज जो अधिगम को निरूपित करते हैं सम्मिलित की जा सकती है (पोहेम, 2008)।

कुछ सामान्य पोर्टफोलियो एवं उनके उद्देश्य इस प्रकार हैं:

(i) वृद्धि पोर्टफोलियो

1. एक समय में हुई वृद्धि एवं बदलावों को दिखाना।
2. स्व-मूल्यांकन एवं लक्ष्य निर्धारण जैसी प्रक्रिया कौशलों को विकसित करने मेंसहायता करना।
3. शक्तियों एवं कमजोरियों को पहचानना।
4. विकास को अनुगमन करना

(ii) प्रदर्शन-मंजूषा पोर्टफोलियो

1. वर्ष/सेमेस्टर/त्रैमासिक सेमेस्टर के अंत पर विद्यार्थियों की उपलब्धियों को दिखाना।
2. विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा सर्वोत्तम कार्य के नमूने को तैयार करना।
3. पसंदीदा, सर्वोत्तम या सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्यों का विद्यार्थी के संप्रत्यय को दिखाना।
4. भविष्य के प्रयासों के लिए एक विद्यार्थी की वर्तमान अभिरूचियों को संप्रेषितकरना।

(iii) मूल्यांकन पोर्टफोलियो

1. ग्रेडिंग के उद्देश्य से विद्यार्थियों की उपलब्धि का दस्तावेज तैयार करना
2. विद्यालय द्वारा निर्धारित मानकों के प्रति प्रगति का दस्तावेज तैयार करना
3. एक विशेष खण्ड या अधिगम समूह के समुदाय में विद्यार्थियों को उपयुक्तता से रखना।

पोर्टफोलियो निर्माणः विद्यार्थियों को उन क्षेत्रों को चुनने में सम्मिलित होना चाहिए जो पोर्टफोलियो को पूरा करेंगे। पोर्टफोलियो का निर्माण करने के मानदंड इस प्रकार हैं:

1. विद्यार्थियों को उनके चयन का तर्काधार सम्मिलित करने को कहें।
2. प्रत्येक विद्यार्थी के पास उसके पोर्टफोलियो की एक निर्देशिका हो जो वर्णन करती हो कि कैसे उसके कार्य में शक्तियाँ एवं कमजोरियाँ प्रदर्शित हुई हैं।
3. आत्मालोचना एवं सहपाठी आलोचना सम्मिलित करें विशेषतः क्या अच्छा है और क्या सुधार होना चाहिए।
4. अपने स्वयं के उत्पादन का माडल स्व-आलोचना।

इन पोर्टफोलियो को मूल्यांकित करने के लिए एक स्कोरिंग रूब्रिक प्रयुक्त किया जाता है जो वस्तुतः विद्यार्थी के निष्पादन की गुणवत्ता को निर्धारित करता है।

रूब्रिकः

रूब्रिक विभिन्न क्षेत्रों में विद्यार्थियों के निष्पादन का आंकलन करने हेतु शिक्षकों के लिए एक आंकलन उपकरण है जिसमें आंकलन के निश्चित मानदंड निर्धारित होते हैं। मानदंड के एक पूर्व निर्धारित समुच्चय के आधार पर विद्यार्थियों के निष्पादन को मापने के लिए। एक रूब्रिक या एक स्कोरिंग पैमाना विशेष रूप से तैयार किया जाता है जो प्रत्येक मानदंड के लिए निष्पादन के उपयुक्त स्तरों और कार्यों के लिए अनिवार्य मानदंड को सम्मिलित करता है।

एक रूब्रिक दो घटकों मानदंड (ऊर्ध्ववाधर स्तंभ) और निष्पादन के स्तरों (क्षैतिज स्तंभ) को समाविष्ट करता है। किसी भी रूब्रिक के कम से कम दो मानदंड और कम से कम निष्पादन के दो स्तर होते हैं (जिसे शिक्षक की आवश्यकता के अनुसार जोड़ा जा सकता है) । एक कार्य पर निष्पादन के लिए मानदंड रूबिक में नीचे बाएँ हाथ के स्तंभ में सूचीबद्ध होते हैं (संकल्पनाएँ, तथ्य एवं चित्र संगठन, प्रस्तुति और संदर्भ) तथा निष्पादन तीन स्तरों खराब, औसत और अच्छा में अंकित होता है। दूसरे स्तंभ में प्रत्येक मानदंड का अधिभार भी दिया गया है।

सारणी 3 : विद्यार्थी का निष्पादन रुब्रिक

मानदंड	मानदंड का अधिभार	निष्पादन		
		खराब 1	औसत 2	अच्छा 3
संकल्पनाएँ	X_2			
तथ्य एवं चित्र	X_3			
संगठन एवं प्रस्तुति	X_3			
संदर्भ	X_1			

अंततः उपर्युक्त रूब्रिक को स्कोरिंग के कार्यविधि की आवश्यकता होती है। उपर्युक्त मानदंड के अधिभार हैंः संकल्पना के 2 गुणा (X_2). तथ्यों एवं चित्रों के 3 गुणा (X_3). संगठन एवं प्रस्तुति के 3 गुणा (X_3) और संदर्भ के 1 गुणा (X_1)। तदनुसार, संकल्पना के लिए अंक होंगे-खराब-2 अंक, औसत 4 अंक और अच्छा-6 अंक। अन्य मानदंडों के लिए। स्कोरिंग तदनुसार की जा सकती है।

मानदंड	मानदंड का अधिभार	निष्पादन		
		खराब 1	औसत 2	अच्छा 3
संकल्पनाएँ	2 गुणा	2	4	6
तथ्य एवं चित्र	3 गुणा	3	6	9
संगठन एवं प्रस्तुति	3 गुणा	3	6	9
संदर्भ	1 गुणा	1	2	3
योग		**9**	**18**	**27**

तदनुसार, प्रत्येक विद्यार्थी के स्कोर को संगठित किया जा सकता है। रूब्रिक के स्कोर देने के लिए आप अन्य विधियों का भी उपयोग कर सकते हैं।

10. मूल्यांकन की तकनीकें: (Techniques of Evaluation)

शिक्षार्थियों के निष्पादन का आंकलन करना शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। इसके लिए आपने मूल्यांकन की विभिन्न तकनीकों को अपनाया है। मूल्यांकन तकनीकों का चयन अधिगम उद्देश्यों के समानांतर होना चाहिए। शिक्षार्थी विभिन्न दर से सूचना को ग्रहण करते हैं। तब एक शिक्षक के रूप में आपको शिक्षार्थी के अधिगम की सीमा तथा वांछित विषयवस्तु की प्रवीणता के बजाय सहायता हेतु आवश्यक पहलों का पता लगाना है।

जब आप अपने शिक्षार्थियों का आंकलन करते हैं तब वास्तव में आप उनके निष्पादन के स्तर के विषय में सूचना एकत्रित करते हैं जबकि मूल्यांकन में आप मानकों के एक समुदाय या युग्म के साथ एक शिक्षार्थी की उपलब्धि की तुलना अन्य शिक्षार्थियों से करते हैं। प्रभावी आंकलन एक सतत् प्रक्रिया है तथा यह सामान्यतया किसी इकाई के अंत में नहीं किया जाता है। मूल्यांकन पाठ्यचर्या के सभी पक्षों के साथ समाकलित होता है, इस प्रकार शिक्षार्थियों की प्रगति को मापने हेतु शिक्षार्थियों एवं शिक्षकों दोनों को उपयोग एवं प्रासंगिक आँकड़े प्रदान करता है। न केवल शिक्षक वरन् शिक्षार्थी भी अपने अधिगम एवं प्रगति के आंकलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षार्थियों के आंकलन के समय, आपको निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिए:

1. पर्याप्त प्रतिपुष्टि की प्राप्ति हेतु हमें किस तकनीक का उपयोग करना चाहिए?
2. मैं अपनी कक्षा में इस तकनीक का अनुप्रयोग कैसे करूँगा?
3. क्या यह आंकलन तकनीक कक्षा-कक्ष में शिक्षार्थियों के अधिगम के विषय में पर्याप्त सूचना प्रदान करेगी?
4. क्या यह तकनीक बेहतर अधिगम को प्रोत्साहित करने हेतु परिवर्तित किए जा सकनेवाले विभिन्न चरों पर केन्द्रित है?

5. क्या यह विशिष्ट मूल्यांकन उपकरण के उपयोग से प्राप्त परिणाम विश्लेषण करने में सरल है?
6. मैं कैसे जानूँगा कि यह तकनीक शिक्षार्थियों के आंकलन हेतु उपयोगी है या नहीं है?
7. मुझे प्राप्त सूचना के आधार पर शिक्षण अधिगम के बेहतर अभ्यास की व्यवस्था हेतु मुझे क्या प्रयास करना चाहिए।

मूल्यांकन तकनीकी के प्रकार-

1. अवधारणा परीक्षण
2. सत्रीय कार्य
3. स्व-प्रतिवेदन तकनीक
4. चिंतनशील जर्नल
5. अवलोकन तकनीक
6. सहपाठी आंकलन
7. समाजमितीय तकनीक
8. पोर्ट फोलियो
9. परियोजना कार्य
10. वाद-विवाद
11. विद्यालय क्लब गतिविधियाँ

1. अवधारणा परीक्षण (Concept Test):

अवधारणा परीक्षण शिक्षार्थियों की प्रमुख अवधारणाओं की समझ के मूल्यांकन हेतु शिक्षकों द्वारा संचालित अनौपचारिक तथा लघु परीक्षण होते हैं। इसका उपयोग अवधारणा के विषय में शिक्षार्थी के पूर्व ज्ञान या अनुदेशन के पश्चात् आंकलन हेतु किया जा सकता है। इस तकनीक में कक्षा कक्ष समय लघु व्याख्यानों तथा अवधारणात्मक बहु वैकल्पिक प्रश्नों के मध्य विभाजित होता है। अवधारणा परीक्षण में मूलभूत अवधारणाओं के विषय में शिक्षार्थियों की समझ का मूल्यांकन किया जाता है। ये प्रश्न विषयवस्तु में शिक्षार्थियों की प्रमुख अवधारणाओं की समझ के आंकलन हेतु निर्मित किए जाते हैं।

उदाहरणः यह समस्या मानव शरीर में परिसंचरण तंत्र के कार्य की समझ में शिक्षार्थियों की सहायता करने हेतु स्वरूपित है। मान लीजिए कि आप मकान के दूसरे तल पर रह रहे हैं तथा जल के कम दबाव के कारण जल आपके नल में पर्याप्त रूप में नहीं पहुँच रहा है। तब आपको सलाह दी जाती है कि अपने घर में वाटर पम्प लगाइए। कल्पना कीजिए:

- क्या होगा?

-क्या आपके घर के नल में जलापूर्ति में कोई अवरोध है?

-यहाँ कौन- सी अवधारणा प्रासंगिक हैं?

उपर्युक्त उदाहरण में शिक्षक ने एक परिस्थिति को प्रस्तुत किया तथा भविष्यवाणी, समस्या समाधान तथा अवधारणा के स्पष्टीकरण से सम्बन्धित कुछ प्रश्न पूछें। इस प्रकार का परीक्षण आपके शिक्षार्थियों द्वारा अवधारणाओं की समझ को ग्रहण करने की मात्रा के विषय में जानने में आपकी सहायता करता है।

2. सत्रीय कार्य (Assignment):

सत्रीय कार्य शिक्षकों द्वारा प्रदत्त कार्य होते हैं जिसमें शिक्षार्थियों से विद्यालय के बाहर या अन्दर पूर्ण करने की अपेक्षा की जाती है तथा शिक्षार्थियों की समझ के आंकलन हेतु सक्षम करते हैं। यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि कक्षोपयुक्त सत्रीय कार्य आपके शिक्षार्थियों हेतु चयन किए जा सकते है। पहली या दूसरी कक्षा के शिक्षार्थियों हेतुकागज कलम से सम्बन्धित सत्रीय कार्यों के बजाय हस्त-गतिविधियाँ अधिक उपयुक्त होसकती हैं। सत्रीय कार्यों हेतु वांछित समय बच्चों की आयु पर आधारित होना चाहिए।यदि आप एक सत्रीय कार्य के रूप में व्यापक परियोजना को देना चाहते हैं तब उचितदिनांक के साथ प्रबंधनीय भागों में इसके अंतराल पर ध्यान दीजिए। आपके द्वारा दिएजाने वाले सत्रीय कार्यों के प्रकार शिक्षार्थियों को प्रोत्साहित करने चाहिए। इस तकनीकद्वारा आप शिक्षार्थियों के परिप्रेक्ष्य, उनकी रूचि एवं अधिगम स्तर का पता लगा सकते हैं।अधिगम में शिक्षार्थियों की प्रगति, उनकी समझ तथा समीक्षात्मक सोच को भी सत्रीयकार्यों द्वारा आंकलन किया जा सकता है।

3. स्व-प्रतिवेदन तकनीक (Self Reporting Technique):

स्व-प्रतिवेदन तकनीक आँकड़ा संग्रहण के उपकरण होते है जिसमें उत्तरदाता अपने विषय में सूचना प्रदान करते हैं। विभिन्न प्रकार की स्व प्रतिवेदन तकनीक हैं जैसे साक्षात्कार, डायरी, प्रश्नावली, चिंतनशील जर्नल आदि। इन तकनीकों का उपयोग व्यक्तियों में निहित विभिन्न अभिलक्षणों या गुणों के आंकलन हेतु व्यापक रूप में किया जाता है। यद्यपि, ये सभी विषयनिष्ठ तकनीक हैं, जो किसी व्यक्ति के व्यवहारों तथा व्यक्तित्व के प्रतिमानों के अंतर्निहित मूल्यों को ग्रहण करने हेतु साधन प्रदान करती हैं।

3.1 साक्षात्कार (Interview): साक्षात्कार एक आँकडा संग्रहण विधि होती है जिसमें साक्षात्कारकर्ता एक विशिष्ट प्रकरण पर साक्षात्कार किए जाने वाले व्यक्ति से प्रश्न पूछता है। यह अर्द्धसंरचित या संरचित हो सकता है तथा विभिन्न माध्यमों (जैसे फोन, ई-मेल तथा व्यक्तिगत संपर्क) का उपयोग कर सकता है। अर्द्ध-संरचित साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ता को प्रश्नों के प्रकार के विषय में जानकारी होती है परंतु प्रश्न पूछने के क्रम तथा विधि भिन्न हो सकते हैं। दूसरी तरफ संरचित साक्षात्कार प्रश्नों का एक निर्दिष्ट समुच्चय होता है जिनको प्रत्येक साक्षात्कार के दौरान समान क्रम में प्रश्न पूछा जाता है। साक्षात्कार को एक अन्तर्वैयक्तिक सामना के रूप में माना जाता है। सम्बन्ध स्थापित करना साक्षात्कार में एक महत्वपूर्ण तत्व होता है। साक्षात्कारकृत

व्यक्ति द्वारा प्रदत्त उत्तरों के प्रति निष्पक्षता रखना महत्वपूर्ण होता है अन्यथा यह पक्षपातपूर्ण प्रत्युत्तर की तरफ अग्रसर करता है।

साक्षात्कार करने के दौरान आप जान सकते हैं कि क्या शिक्षार्थी विशिष्ट अवधारणा को समझता है। शिक्षार्थी को विशिष्ट अवधारणा के व्यक्तिगत स्पष्टीकरण देने हेतु तथा समस्या के समाधान हेतु उस अवधारणा के उपयोग के लिए कहा जा सकता है। इस तकनीक द्वारा सूचना प्राप्त करने के अतिरिक्त शिक्षार्थी की शारीरिक भाव-भंगिमा तथा भावाभिव्यक्ति का अवलोकन करना भी संभव होता है। आंकलन के प्रयोजन हेतु, साक्षात्कार निम्नलिखित कार्यों को कर सकता है:

1. शिक्षार्थियों में अवधारणा की समझ में कठिनाई तथा कमियों के क्षेत्रों की पहचान करना,
2. शिक्षार्थी अपने ज्ञान को नवीन परिस्थितियों में अनुप्रयोग करने में किस प्रकार सक्षमहैं इसको समझना;
3. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के साथ किस प्रकार शिक्षार्थियों की समझ बदलती है,इसका परीक्षण करना;
4. शिक्षण तकनीकों, नवीन अवधारणा आदि के विषय में मौखिक प्रतिपुष्टि की करना।

शिक्षार्थियों से प्राप्त प्रतिपुष्टि के द्वारा आप अपने शिक्षण के परिष्करण के साथ शिक्षार्थियों के समझ के स्तर को आंकलन करने में सक्षम हो सकते हैं।

3.2 फोकस समूह परिचर्चा (Focus group discussion): यह शिक्षक द्वारा मार्गदर्शित क्रमबद्ध नियोजित एक परिचर्चा है जिसने एक विशिष्ट प्रकरण पर विस्तृत सूचना संग्रहण हेतु मध्यस्थ के रूप में कार्य किया है। फोकस समूह परिचर्चा में एक मध्यस्थ एक प्रकरण के विषय में समूह के सदस्यों की सोच एवं भावना के विस्तृत विश्लेषण हेतु व्यक्तियों के लघु समूह के साथ परिचर्चा को अग्रसर करता है। इसे 'फोकस समूह' कहा जाता है क्योंकि मध्यस्थ परिचर्चा हेतु लिए गए विशिष्ट प्रकरणों पर केन्द्रित समूह में व्यक्तियों को रखता है। मध्यस्थ मुक्तांत प्रश्नों के उपयोग द्वारा समूह परिचर्चा को उत्पन्न करता है तथा वह समूह प्रक्रिया के सुसाध्यकर्ता के रूप में कार्य करता है। इसका उपयोग निम्नलिखित बहु प्रयोजनों हेतु किया जाता है:

1. नवीन विचारों एवं अवधारणाओं का निर्माण करना;
2. रूचि के एक प्रकरण के विषय में सामान्य पृष्ठभूमीय सूचना प्राप्त करना;
3. शोध परिकल्पनाओं का निर्माण करना जिनको आगामी शोध हेतु जमा किया जा सकता है;
4. नवीन विधि से समस्या का निदान करना;
5. चयनित प्रकरण के विषय में उत्तरदाताओं से बात करने का परीक्षण करना; तथा
6. पूर्व में प्राप्त परिणामों की व्याख्या करना

आप सोच रहे होंगे कि किस प्रकार एक साक्षात्कार एक फोकस समूह परिचर्चा से भिन्न होता है। साक्षात्कार में विशिष्ट प्रश्नों को पूछने में साक्षात्कारकर्ता की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक साक्षात्कार से प्राप्त सूचना की गहनता कम होती है। फोकस समूह परिचर्चा की स्थिति में सहभागियों की संख्या चार से आठ तक हो सकती है तथा आप सूचना की प्रचुर मात्रा को प्राप्त करेंगे।

3.3 प्रश्नावली: प्रश्नावली एक स्व-प्रतिवेदन आँकड़ा संग्रहण तकनीक है जिसे प्रत्येक सहभागी दिए गए फार्म को पूर्ण करते हैं। मुक्तांत तथा संवृत्तांत प्रश्नावलियाँ होती हैं। प्रश्नावलियों द्वारा सहभागियों के विचारों, भावनाओं, अभिवृत्तियों, विश्वास, मूल्यों, प्रत्यक्षण, व्यक्तित्व तथा व्यावहारिक उद्देश्यों के विषय में सूचना प्राप्त की जा सकती है। मुक्तांत प्रश्न तब महत्वपूर्ण होते हैं जब शोधकर्ता को लोगों के सोचने के विषय में जानने की आवश्यकता होती है। ऐसे प्रश्न सहभागियों की उनकी स्वाभाविक भाषा एवं वर्गों में उनके आंतरिक जगत को समझने में साक्षात्कारकर्तृता की सहायता करते हैं।

हम प्रश्नावलियों का उपयोग कब करते हैं? प्रश्नावलियों का उपयोग निम्नलिखितप्रयोजनों हेतु किया जाएगा:

1. शिक्षार्थियों की एक विशाल संख्या से प्रतिपुष्टि के संग्रह हेतु:
2. एक विशिष्ट मुद्दे के विषय में शिक्षार्थियों के विचार, अभिवृत्तियों, भावनाओं तथा प्रत्यक्षण को जानने हेतु;
3. प्रत्येक शिक्षार्थी को अज्ञात रूप से प्रतिपुष्टि देने की अनुमति देने हेतु।

4. चिंतनशील जर्नल (Reflective Journal):

चिंतनशील जर्नल एक उपकरण होता है जहाँ शिक्षार्थी अधिगम में अपनी प्रगति के विषय में चिंतन कर एवं लिख सकते हैं। वे अधिगम में अपनी उपलब्धियों तथा कठिनाइयों को लिख सकते हैं। शिक्षार्थी जो भी नवाचारी पाते हैं या अपने अधिगम अनुभवों के विषय में क्या सोचने एवं मंथन करने पर प्राप्त निष्कर्ष को इसमें लिख सकते हैं।

जर्नल लेखन शिक्षार्थियों की सोच एवं भावना के विषय में सूचना प्राप्ति हेतु एक संकट रहित विधि है। निम्नलिखित बिन्दु जर्नल के उपयोग करने तथा इसमें क्या सम्मिलित किया जाए के विषय में आपको जानकारी प्रदान करते हैं:

1. मुझे इसका उपयोग कब करना चाहिए?
   दैनिक या साप्ताहिक
2. मैं इसका उपयोग कैसे कर सकता हूँ?
   शिक्षार्थियों हेतु स्व-आंकलन उपकरण के रूप में
   एक इकाई, प्रकरण या परियोजना के आरंभ या अंत में

शिक्षार्थियों एवं शिक्षकों हेतु संप्रेषण के एक उपकरण के रूप में

3. मुझे इसका उपयोग क्यों करना चाहिए?

यह उच्च स्तरीय सोच को बढ़ाता है।

यह स्व-आंकलन हेतु अग्रसर करता है।

यह भावी अधिगम हेतु लक्ष्यों को निर्धारित करता है।

यह शिक्षार्थियों को उनके अधिगम पर स्वामित्व एवं नियंत्रण की समझ प्रदानकरता है।

शिक्षार्थियों के चिंतनशील विचार की सहायता उनके स्वयं के अधिगम तथा उनके स्वयं के अधिगम के संदर्भ पर चिंतन करने के अवसरों को प्रदान कर किया जा सकता है। इस प्रकार यह शिक्षार्थी के अधिगम उत्तरदायित्व को प्रोत्साहित करता है। चिंतनशील जर्नल शिक्षार्थियों को स्वतंत्र वातावरण में उनके लेखन कौशल के अभ्यास का अवसर देता है जो समीक्षात्मक सोच को प्रोत्साहित करता है। इस तरह चिंतनशील जर्नल का उपयोग आंकलन उपकरण के रूप में किया जा सकता है जो शिक्षकों को शिक्षार्थियों के अपने अधिगम एवं उपलब्धि के मूल्यांकन करने में एक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

5. अवलोकन तकनीक (Observation Technique):

भावी शिक्षक के रूप में आपने शिक्षार्थियों को समस्याओं का समाधान करते हुए, विभिन्न अधिगम परिस्थितियों में या खेल के मैदान में सहपाठियों के साथ अंत:क्रिया करते हुए देखा होगा। यह शिक्षार्थी अधिगम तथा प्रगति में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। अवलोकन का उपयोग नियंत्रित या अनियंत्रित परिस्थितियों में व्यवहार के विभिन्न पक्षों के मूल्याकन हेतु एक तकनीक के रूप में किया जाता है। अवलोकन द्वारा एक विशेष परिस्थिति में व्यवहार को अवलोकित किया जाता है। यह एक विशेष क्षण में अनुभूत प्रथम सूचना स्रोत का साधन होता है। यह एक पूर्व नियोजित तथा प्रयोजनपूर्ण गतिविधि होती है जो घटनाओं की तात्कालिक रिकार्डिंग प्रदान करती है। अवलोकन सूची की सहायता से शिक्षक सूचना को शीघ्रतापूर्वक रिकार्ड कर सकते हैं। अवलोकन की विश्वसनीयता को पुनरावृत्ति अवलोकन या कई व्यक्तियों द्वारा किए अवलोकन के द्वारा बढ़ाया जा सकता है। अवलोकन सूची के निर्माण के समय निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए:

1. अवलोकन किए जाने के मानदंडों को लिखना
2. अवलोकन किए जाने के मानदंडों के विषय में शिक्षार्थियों को सूचित करना
3. आंकलन के विशिष्ट परिणामों को निर्धारित करना
4. जाँच सूची या रूब्रिक या आख्यानक बिन्दुओं जैसे आँकड़ा संग्रहण पद्धति कोविकसित करना।
5. एक या दो विशिष्ट परिणामों पर अवलोकन का लक्ष्य करना
6. अवलोकन की दिनांक का उल्लेख करना
7. व्यक्तियों या लक्षित समूहों के साथ अवलोकन के विवरण को साझा करना

8. अपने अनुदेशन के परिष्करण हेतु एकत्रित सूचना का उपयोग करना।

अवलोकन लोगों के विषय में सूचना संग्रहण की एक महत्वपूर्ण विधि है क्योंकि लोग हमेशा जो कहते हैं उसे करते नहीं हैं। यह कथन व्यवहार एवं समाज विज्ञानों मेंअधिकतम समतुल्य है जो अभिवृत्ति एवं व्यवहार असंगत है। सामान्यतः दो प्रकार केअवलोकन होते हैंः (i) सहभागी अवलोकन तथा (ii) असहभागी अवलोकन।

(i) सहभागी अवलोकनः सहभागी अवलोकन में, अवलोकनकर्ता समूह का सदस्य बन जाता है। सहभागी अवलोकनकर्ता दो भूमिकाएँ निभाता है जैसे समूह का सदस्य बन जाना तथा सहभागियों का सावधानीपूर्वक अवलोकन करना। इस प्रकार का अवलोकन विश्वसनीय परिणामों को प्रदान करता है। इस तकनीक का एक लाभ यह है कि नैतिक कारणों से शोधकर्ता आवश्यकतानुसार आँकड़ो के संग्रह तथा रिकार्ड हेतु अनुमति का निवेदन कर सकता है। इसके अतिरिक्त शोधकर्ता अपने अवलोकन के विषय में प्रतिपुष्टि तथा सहभागियों से अस्थायी निष्कर्ष प्राप्त कर सकता है। एक कमजोरी यह है कि सहभागी स्वाभाविक व्यवहार नहीं प्रस्तुत कर सकते हैं क्योंकि उनको ज्ञात होता है कि उनका अवलोकन किया जा रहा है।

(ii) असहभागी अवलोकनः असहभागी अवलोकन में अवलोकनकर्ता समूह में अपनी उपस्थिति के बिना दूरी से निष्क्रियतापूर्वक समूह का अवलोकन करता है। असहभागी अवलोकन किसी व्यक्ति विशेष या समूह के व्यवहार के विस्तृत रिकार्डिंग तथा अध्ययन में सहायता करता है। इसे एक अध्ययन के अंतर्गत विशिष्ट प्रश्नों के उत्तर के क्रम में एक स्थिति के लक्षित पक्षों के अध्ययन हेतु आँकड़ों के संग्रहण की एक निर्बाध विधि के रूप में माना जाता है।

6. सहपाठी आंकलन (Peer group Evaluation):

सहपाठी आंकलन का अर्थ एक शिक्षार्थी या शिक्षार्थियों के एक समूह द्वारा अन्य शिक्षार्थियों का आंकलन करना है। यह अंतर्वैयक्तिक कौशल विकसित करता है तथा निष्पक्ष अभिवृत्ति, श्रवण कौशलों में सुधार, समूह भावना, नेतृत्व के गुणों के मनःस्थापन तथा समय प्रबंधन को विकसित करने में शिक्षार्थी की सहायता कर सकता है।

शिक्षार्थी अपने सहपाठियों के कार्य के मूल्यांकन द्वारा कार्य की गुणवत्ता को आत्मसात करते हैं। सहपाठी आंकलन का मूल सक्रिय अधिगम के सिद्धान्तों में है। सक्रिय अधिगम में शिक्षार्थी चीजों को करने में सम्मिलित होते हैं तथा अपने कार्य के विषय में सोचते हैं। कक्षा-कक्ष में अधिगम वातावरण प्रभावी सहपाठी मूल्यांकन हेतु विश्वसनीय वातावरण अवश्य होना चाहिए। निम्नलिखित सारणी सहपाठी आंकलन के लाभों को प्रदर्शित करती है

सहपाठी आंकलन के लाभः

1. एक शैक्षिक प्रक्रिया जो शिक्षार्थियों में स्वायत्तता स्थापित करती है।
2. एक अधिगम वातावरण में शिक्षार्थी का सशक्तीकरण।

3. सहपाठियों के आंकलन/अंकन (अभ्यास द्वारा) में शिक्षार्थी के विश्वास को विकसित करना।
4. स्व-मूल्यांकन तथा चिंतन हेतु शिक्षार्थी की योग्यता को विकसित करना।
5. विभिन्न स्तरों पर आंकलन हेतु शिक्षकों द्वारा क्या वांछित है इसकी व्यापक समझ।
6. अंकन/प्रतिपुष्टि हेतु अंतःक्रियात्मक कक्षा-कक्ष। उत्तर की पूर्ण व्याख्या (सूचना एवं समझ में सुधार) के साथ हाल में पूर्ण आंकलनों पर चिंतन।
7. स्पष्ट, मुक्त अंकन पद्धतियाँ (देखना कि क्या आवश्यक है तथा कार्य में सुधार करना)।
8. सहपाठियों के साथ अन्य लोगों की गलतियों द्वारा निर्धारित मानकों को देखना (तथा भविष्य में उनका सुधार करना)।
9. आंकलन के प्रयोजनों हेतु अपने कार्य के प्रति निष्पक्ष रहने की योग्यता प्राप्तकरना (वस्तुनिष्ठ, निष्पक्ष, वैज्ञानिक की एक आवश्यक योग्यता)।
10. शिक्षार्थी कार्य की एक विशाल मात्रा के आंकलन हेतु तथा विशेष प्रतिपुष्टि प्रदान करने हेतु शिक्षक के लिए एक तीव्र मार्ग।

7. समाजमितीय तकनीक (Sociometric Technique):

समाजमितीय तकनीक कक्षा कक्ष में सामाजिक सम्बन्धों की एक वस्तुनिष्ठ चित्र प्रस्तुत करती है। जैकब लेवी मोरेने ने इसे सामाजिक संरचनाओं तथा मनोवैज्ञानिक स्थिति के मध्य सम्बन्ध के अध्ययन हेतु विकसित किया। 'Sociometry' शब्द लैटिन भाषा के शब्दों 'socius' जिसका अर्थ साथी तथा 'metrum' जिसका अर्थ मापन है से उत्पन्न हुआ है। समाज आरेख का प्रमुख प्रयोजन मित्रता के प्रतिरूपों के मूलभूत तंत्र को ज्ञात करना है। अन्य प्रकार की सूचना जिसे समाज आरेख से प्राप्त किया जा सकता है वह समूह है में किसी एक बच्चे के सम्बन्ध को जानना। समाज आरेख द्वारा आप समूह व्यवहार की व्यापक समझ को प्राप्त करेंगे।

हम विभिन्न प्रकार से समाज आरेख को निर्मित कर सकते हैं। आगे, हम समाज आरेख की रचना की प्रक्रिया की व्याख्या करेंगे। निम्नलिखित प्रश्नों को सूचना एकत्रित करने हेतु समूह सदस्यों से पूछा जा सकता है:

1. आपकी कक्षा में आपके तीन सबसे अच्छे दोस्त कौन हैं?
2. आप अपनी कक्षा में लघु समूह में कौन-से तीन दोस्तों के साथ कार्य करना पसंदकरेंगे?
3. आप कौन-से तीन दोस्तों के साथ भोजन करना पसंद करेंगे?
4. आप कौन-से तीन दोस्तों के साथ पिकनिक पर जाना पसंद करेंगे?

उपर्युक्त प्रश्न नियत सकारात्मक प्रतिष्ठापन तकनीक के उदाहरण हैं। प्रश्नों में नियत शब्द का उपयोग इस अर्थ में किया गया है कि तीन दोस्तों में ही चयन निश्चित हैं। इन प्रश्नों द्वारा

शिक्षार्थियों में अंतर्वैयक्तिक स्वीकार्यता को ज्ञात करनासंभव होता है। अंतर्वैयक्तिक अस्वीकार्यता ज्ञात करने के क्रम में निम्नलिखित प्रश्नों को पूछा जा सकता है:

1. आप कौन-से तीन दोस्तों को कम पसंद करते हैं?
2. आप कौन-से तीन दोस्तों को अपने समूह कार्य में सम्मिलित नहीं करना चाहेंगे?
3. आप कौन से तीन दोस्तों के साथ पिकनिक पर नहीं जाना पसंद करेंगे?

अस्वीकार्यता का अध्ययन शिक्षक का शिक्षार्थियों के प्रतिकूल भावात्मक प्रतिक्रिया को जानने में सहायता करता है। एक विशिष्ट समूह में सम्बन्धों का आरेखीय प्रस्तुतीकरण समाज आरेख के रूप में जाना जाता है। यह समूह के अंतर्गत अन्तर्सम्बन्ध को जानने केलिए एक चार्ट होता है। समाज आरेख का एक उदाहरण निम्नलिखित है:

पसंद प्रतिरूप को प्रदर्शित करता समाज आरेख

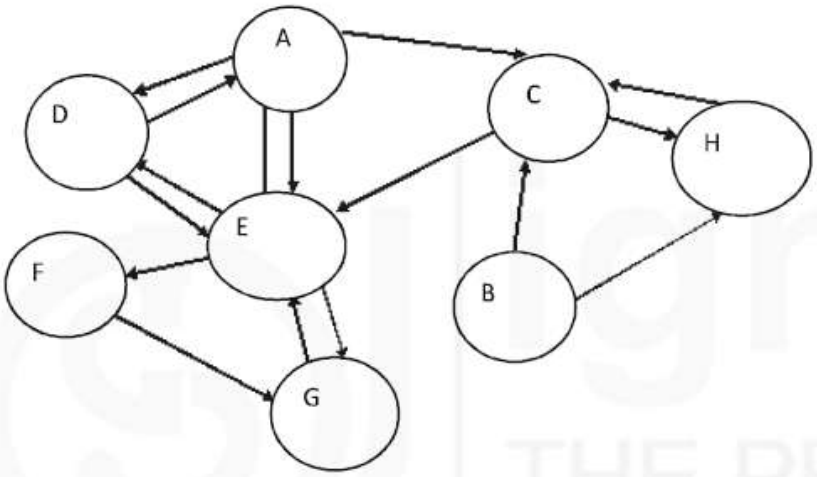

चित्र में, आप देखते हैं कि शिक्षार्थी 'बी' दूसरों द्वारा चयनित नहीं किया जा रहा है।इस प्रकार बी एक विलगित शिक्षार्थी माना जाएगा। शिक्षार्थी ए, डी तथा ई एकदूसरे को पसंद करते हैं तथा इस प्रकार एक समूह बनाते हैं। शिक्षार्थी 'ई' अधिकांशशिक्षार्थियों द्वारा पसंद किया जा रहा है तथा इस प्रकार एक सितारा बन रहा है। समाजआरेख समूह के सदस्यों में सम्बन्ध के विषय में विवरण भी प्रदान करता है। इस प्रकारसमाज आरेख अधिगम वातावरण को सहयोगपूर्ण बनाने हेतु शिक्षक की सहायता करताहै। शिक्षार्थी 'सी' तथा 'एच' के मध्य द्विपक्षीय पारस्परिक सम्बन्ध है जबकि 'ई' तथाएफ के लिए एक पक्षीय है। अतः समाजमितीय तकनीक सहपाठी आंकलन हेतु एकमहत्वपूर्ण तकनीक है।

आंकलन तकनीक के रूप में समाजमितिः आप सोच रहे होंगे कि समाजमितीय तकनीक के आंकलन के प्रयोजन हेतु किस प्रकार उपयोग किया जा सकता है। आंकलन तकनीक के रूप में समाजमितीय तकनीक समूह में विद्यमान सामाजिक व्यवहार, सम्बद्धता तथा अंतर्वैयक्तिक विश्वास के आंकलन हेतु उपयोगी है। आप समूह में सामाजिक प्रतिरूपों जैसे स्वीकार्यता, स्तर, समरूपता तथा

विभिन्न भूमिकाओं के अध्ययन हेतु समाजमिति के परिणामों का उपयोग कर सकते हैं। समाज आरेख द्वारा आप अपनी कक्षा-कक्ष में उपसमूहों तथा पारस्परिक आकर्षण प्रतिरूपों को अवस्थित कर सकते हैं। यह शिक्षार्थियों में अंतर्वैयक्तिक स्वीकार्यता अस्वीकार्यता को जानने में भी अपनी सहायता करता है। समाज आरेख द्वारा आप अपनी कक्षा कक्ष में मित्रता के प्रभाव से तथा यह शिक्षार्थियों के शैक्षिक प्रोत्साहन तथा उपलब्धि पर कैसे प्रभाव डालेगा इसके प्रति जागरूक रहेंगे। अंतर्वैयक्तिक अस्वीकार्यता को देखते समय शैक्षिक तथा सामाजिक भावात्मक समायोजन से सम्बन्धित समस्याओं को भी ज्ञात किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त सहपाठी अस्वीकार्यता को शैक्षिक दुष्क्रियता के पूर्व सूचना के रूप में माना जा सकता है।

8. पोर्टफोलियो (Portfolio):

पोर्टफोलियो साधारणतः शिक्षार्थी के कार्य का एक क्रमबद्ध संगठित संग्रह होता है जो एक विशिष्ट समयावधि को समाहित करता है। यह शिक्षार्थी के लेखन एवं प्रदर्शन को एक साथ एकत्र करने हेतु एक उत्कृष्ट तथा प्रमाणित साधन है जो समयोपरांत प्रवीणता में परिवर्तित होता है। पोर्टफोलियो आंकलन अनुदेशनात्मक प्रक्रिया तथा मूल्यांकन प्रक्रिया का मिश्रित स्वरूप प्रस्तुत करता है। आप जानते होंगे कि पोर्टफोलियो स्थैतिक नहीं होता है यद्यपि यह कक्षा में शिक्षक एवं शिक्षार्थी तथा प्रायः शिक्षार्थियों में एक-दूसरे के साथ या शिक्षार्थियों एवं अभिभावकों के मध्य एक निरंतरगामी वार्तालाप होता है। पोर्टफोलियो के घटक पढ़ाए जा रहे विषय तथा शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों की वरीयता पर निर्भर करते हुए भिन्न होंगे। पोर्टफोलियो में निम्नलिखित तथ्य निहित हो सकते हैं:

1. पूर्ण सत्रीय कार्य
2. जर्नल लेखन
3. कक्षा में या इसके बाहर हुई परिचर्चाओं पर चिंतन
4. चित्र रेखाचित्र तथा अन्य तस्वीर
5. सीखे गए से सम्बन्धित विभिन्न बिन्दुओं पर संक्षिप्त वक्तव्य
6. स्व-आंकलन वक्तव्य

पोर्टफोलियो का उपयोग चिंतनशील शिक्षण के साथ-साथ सुसंगत रहता है तथा शिक्षक एवं प्रत्येक शिक्षार्थी में निरंतर-गामी वार्तालाप होती है जो पोर्टफोलियो में सामग्रियों के विषय में लिखित टिप्पणियों के रूप में होता है। पोर्टफोलियो आंकलन समयानुसार शिक्षार्थी की प्रगति प्रक्रियाओं एवं निष्पादन के मूल्यांकन पर केन्द्रित होता है। सामान्यतः पोर्टफोलियो के दो मूलभूत प्रकार हैं:

1. प्रक्रिया पोर्टफोलियो का उपयोग कक्षा-कक्ष-स्तरीय आंकलन हेतु किया जाता है।यह रचनात्मक एवं योगात्मक आंकलन पर विचार करता है।
2. उत्पाद पोर्टफोलियो प्रकृति में अधिक योगात्मक होता है। यह एक वृहत मूल्यांकन के लिए होता है तथा अपनी विषयवस्तु के मौखिक प्रस्तुतीकरण सहित होता है।

विभिन्न कार्य जो विभिन्न प्रयोजनों हेतु नियोजित निष्पादन को प्रकट करते हैं दोनों प्रकार के पोर्टफोलियो में सम्मिलित होते हैं तथा लक्ष्य निर्धारण एवं आंकलन सहित अधिगम के विषय में चिंतन प्रदर्शित करते हैं। पोर्टफोलियो का उपयोग चयनित अधिगम उद्देश्यों के सम्बन्ध में प्रक्रियाओं तथा वृद्धि को प्रदर्शित करने हेतु किया जाता है। उनका उपयोग इक्कीसवीं शताब्दी के कौशलों जैसे समस्या समाधान, सृजनशीलता तथा सूचना साक्षरता को प्रदर्शित करने हेतु किया जा सकता है। यह क्षमताओं एवं कमजोरियों, समय प्रबंधन कौशलों तथा परा संज्ञानात्मक योग्यताओं पर भी चिंतन कर सकता है।

आंकलन के बिन्दु पर पोर्टफोलियो शिक्षार्थियों की प्रगति को प्रदर्शित करता है तथा अभिभावकों के साथ शिक्षकों तथा शिक्षार्थियों को अधिगम प्रगति का प्रमाण प्रदान करता है। पोर्टफोलियो का समग्र लक्ष्य शिक्षार्थी द्वारा प्रवीणता प्राप्त अधिगम उद्देश्यों के एक समुच्चय के विषय में साक्ष्य प्रदान करना है। यह एक व्यक्तिगत एलबम की तरह होता है जिसमें शिक्षार्थियों के विभिन्न कार्य तथा उपलब्धियाँ होती हैं। इसमें शिक्षार्थी की जानकारी का प्रतीकात्मक प्रस्तुतीकरण होता है। शिक्षार्थी पोर्टफोलियो तीन तरह से शिक्षार्थी अधिगम को प्रोत्साहित एवं सहायता करता है:

1. विषयवस्तु के चयन में शिक्षार्थी की सहभागिता
2. अधिगम के विषय में शिक्षार्थी का लिखित चिंतन
3. शिक्षार्थी का शिक्षार्थियों के साथ अपने चिंतन से सम्बन्धित संप्रेषण

9. परियोजना कार्य (Project Work):

परियोजना कार्य शिक्षार्थियों को कक्षा-कक्ष की सीमाओं से बाहर सोचने का अवसर प्रदान करता है तथा विभिन्न कौशलों, व्यवहारों, जिज्ञासाओं तथा विश्वास को विकसित करता है। ऐसा अधिगम वातावरण को प्रदान करना जो शिक्षार्थियों को प्रश्न, विश्लेषण, मूल्यांकन तथा उच्च स्तरीय चिंतन हेतु उनको अग्रसर करने का अवसर प्रदान करे। अधिगम जो परियोजना कार्य की प्रक्रिया के दौरान होता है सहयोग, समस्या समाधान निर्णय लेने तथा संप्रेषण के कौशलों का आंकलन करता है। एक शिक्षक या भावी शिक्षक के रूप में आप भी परियोजना निर्माण प्रक्रिया के दौरान शिक्षार्थियों के कार्य गुणवत्ता तथा समझ का आंकलन कर सकते हैं।

उदाहरणार्थ, कक्षा नौवी हेतु आपने भारतीय नदियाँ एवं उनके उपयोग पर समूह परियोजना कार्य दिया है। कार्य को सौंपने के बाद आपको परियोजना कार्य की प्रगति का सतत अवलोकन करना चाहिए। इसके बाद आपको परियोजना प्रतिवेदन का आंकलन करना है। आप इसका आंकलन कैसे करेंगे? आंकलन कार्य इकाई के अंत में नहीं होता है। यह अधिगम के तीन पक्षों जैसे विषयवस्तु, प्रक्रिया तथा परिणाम से सम्बद्ध होता है। यह निष्पादन आधारित तथा निरंतरगामी होता है। हमें शिक्षार्थियों को उनके अधिगम चिंतन हेतु बहुस्तरीय अवसर देना चाहिए। परियोजना प्रतिवेदन के आंकलन हेतु आप एक रूब्रिक विकसित कर सकते हैं। आपको भूलना नहीं चाहिए कि परियोजना का आंकलन शिक्षार्थियों के निष्पादन के आंकलन के समान महत्वपूर्ण होता है। इस प्रकार आपके

आंकलन रूब्रिक को आपके अनुदेशन की विषयवस्तु तथा संरचना से मिलना चाहिए। परियोजना कार्य का रूब्रिक निम्नलिखित प्रश्नों को धारण कर सकता है:

- क्या आपके रूब्रिक में वास्तविक जगत के कार्य में शिक्षार्थियों की संलग्नता से सम्बन्धित मानदण्ड था?
- क्या आपके रूब्रिक में समूह कार्य के आंकलन का मानदण्ड था?
- क्या आपका रूब्रिक शिक्षार्थियों के उच्च स्तरीय सोच तथा समस्या समाधान कौशलों के उपयोग का आंकलन किया?
- क्या आपने रूब्रिक कार्य के दौरान शिक्षार्थी की प्रगति का मूल्यांकन किया?

परियोजना कार्य से सम्बन्धित रूब्रिक का एक प्रारूप निम्नलिखित है:

वर्णणात्मक सूचक विषयवस्तु	**उत्कृष्ट**	**अति उत्तम**	**उत्तम**	**असंतोषजनक**
विभिन्न नदियाँ एवं इनकी वितरिकाएँ सम्मिलित हैं	विषयवस्तु उच्च गुणवत्ता की है तथा बहुत से संसाधनों का उपयोग करती है।	विषयवस्तु पूर्ण है।	विषयवस्तु कम सम्मिलित है।	विषयवस्तु अप्रासंगिक है।
नदियों के संभावित उपयोग को दर्शाता मानचित्र	मानचित्र समुचित रूप से निर्मित हैं तथा नवीन एवं उपयोगी सूचना सम्मिलित करते हैं। प्रतीकों का सही उपयोग हुआ है।	मानचित्र पूर्ण है।	मानचित्र अस्पष्ट है।	मानचित्र निर्मित नहीं है।
विषयवस्तु की प्रासंगिकता	विषयवस्तु अद्यतन तथा रचनात्मकतापूर्ण लिखित है। कुछ या बहुत कम व्याकरणीय अशुद्धियाँ हैं।	विषयवस्तु पूर्ण है तथा कुछ व्याकरणीय त्रुटियाँ हैं।	विषयवस्तु समसामयिक सूचना रहित तथा बहुसंख्य व्याकरणीय त्रुटियों सहित है।	विषयवस्तु अद्यतन नहीं है।

प्रक्रिया				
नदियों एवं इनके उपयोग से सम्बन्धित प्रासंगिक सूचना की खोज हेतु इंटरनेट का उपयोग कीजिए	शिक्षार्थी कई खोज उपकरणों के उपयोग द्वारा प्रकरण की खोज हेतु योग्यता को अभिव्यक्त करते हैं।	शिक्षार्थी इंटरनेट द्वारा सूचना एकत्रित करते हैं।	शिक्षार्थी न्यूनतम सहायता के साथ विषयवस्तुओं की खोज करते हैं।	शिक्षार्थी विषय–वस्तु की खोज हेतु इंटरनेट के उपयोग की योग्यता को अभिव्यक्त नहीं करते हैं।
समूह सहभागिता	समूह के सभी सदस्य परियोजना कार्य में प्रभावी रूप से भाग लेते हैं।	समूह सदस्यों की सहभागिता संतोषप्रद है।	कुछ शिक्षार्थी अपने स्तर तक सहभागिता नहीं किए।	कोई समूह सहभागी नहीं।
परिणाम				
विषयवस्तु की प्रस्तुति	विषयवस्तु पूर्ण समावेश, स्पष्ट लेखन, प्रासंगिक उदाहरण तथा बहुत कम त्रुटियाँ	वर्णन पूर्ण है, तथा कुछ त्रुटियाँ हैं।	अपूर्ण प्रस्तुति तथा बहुत सी व्याकरणीय त्रुटियाँ हैं।	विषयवस्तु की अनुपयुक्त प्रस्तुति
परिणामों का सत्यापन	बहुसत्यापन तकनीकों का उपयोग किया गया है जो योगात्मक निष्कर्ष प्रदान करते हैं।	सत्यापन तकनीक उत्तम हैं तथा निर्णायक परिणाम उत्पन्न करते हैं।	सूचना के सत्यापन हेतु प्रयास किए गए हैं परंतु अनिर्णायक हैं।	सूचना का सत्यापन नहीं है।
नदियों के संरक्षण करने पर एक योजना विकसित कीजिए।	योजना पूर्ण, सुसंगठित तथा सार्थक है।	योजना लगभग पूर्ण है तथा न्यूनतम सार्थक है।	योजना तात्कालिक रूप से क्रियान्वयन हेतु तैयार नहीं है।	सुझाई गई योजना सार्थक नहीं है।

10. वाद-विवाद (Debate):

वाद-विवाद एक महत्वपूर्ण प्रकरण के विषय में एक प्रकार का वार्तालाप है। यह वाद विवाद हेतु चयनित प्रकरण के विषय में स्वतंत्र अधिगम को प्रोत्साहित करने हेतु एक उपयोगी तकनीक है। कभी-कभी आप इस तकनीक एवं इसकी प्रक्रिया से परिचित होते हैं। इस तकनीक में आपको एक मध्यस्थ की भूमिका निभानी होती है। पहला कार्य वाद विवाद के प्रकरण को निर्धारित करता है। आपको कार्य निर्धारण से पूर्व प्रकरण का एक परिदृश्य प्रदान करना होता है। तत्पश्चात् आपको दृश्य निर्धारित करना तथा उनको आवंटित करना चाहिए। सामान्यतः आदर्श समूह आकार 10 होता है, जिसमें वे एक प्रकरण के पक्ष में स्थिति प्रस्तुत करते हैं तथा शेष 5 प्रकरण का बचाव करते हैं। वाद विवाद के संचालन के समय एक मध्यस्थ के रूप में आप वाद-विवाद की संरचना, समय तथा निष्पादित होने वाली भूमिकाओं पर स्पष्ट दिशा निर्देश दे सकते हैं।

अगला कार्य वाद-विवाद का मूल्यांकन करना है। मूल्यांकन हेतु आप निम्नलिखित सूचकों से युक्त एक निर्धारण मापनी तैयार कर सकते हैं।

1. विषयवस्तु की प्रासंगिकता
2. प्रस्तुतीकरण शैली
3. तर्क की स्पष्टता
4. तार्किक उपागम
5. खण्डन की गुणवत्ता

यह तकनीक श्रवण त्वरित उत्तर, बोलने तथा पेशेवर तरीके से मुद्दों पर वाद-विवाद जैसे कौशलों का विकास करती है। यह समूह भावना, आँकड़ों का सश्लेषण, समझौता, तर्क वितर्क तथा खण्डन करने जैसे कौशलों को भी प्रोत्साहित करती है।

11. विद्यालय क्लब गतिविधियाँ (School Club Activities):

आप क्लब गतिविधियों से परिचित होंगे जो आपके विद्यालय में प्रचलित है। विभिन्न विषयों में विभिन्न क्लब जैसे साहित्यिक क्लब, विज्ञान क्लब, सामाजिक विज्ञान क्लब, गणित क्लब, कला क्लब, स्पोर्ट क्लब, पर्यटन क्लब तथा सौंदर्य क्लब हैं। प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता, सेमिनार, वाद-विवाद, भाषण प्रतियोगिता, भ्रमण, क्षेत्र भ्रमण, बागवानी, अभियान तथा जागरूकता कार्यक्रम जैसी गतिविधियाँ इन विभिन्न क्लबों द्वारा कराई जाती हैं। इन गतिविधियों द्वारा आप शिक्षार्थियों की समूह भावना, सामान्य जागरूकता, स्व अनुशासन, व्यक्तिगत एवं समूह उत्तरदायित्व, पहल, धैर्य, समय प्रबंधन, श्रम की मर्यादा तथा उनके विद्यालय के प्रति संलग्नता तथा लगाव की समझ का आंकलन कर सकते हैं। क्लब में योगदान द्वारा शिक्षार्थी एक सामान्य लक्ष्य के प्रति एक साथ कार्य करने हेतु सीखते हैं तथा एक-दूसरे का आदर करना सीखते हैं। यह उनके तनाव की मुक्ति हेतु तथा विभिन्न गतिविधियों के निष्पादन में विश्वास अर्जित करने का अवसर प्रदान करता है। शिक्षार्थी कार्य योजना एवं आयोजन की प्रक्रिया को भी समझेंगे।

5. सामूहिक गतिविधियों का आंकलनः

वर्तमान कक्षा-कक्ष अनुदेशनात्मक युक्तियाँ समूह कार्य, सहयोगपूर्ण एवं सहकारी अधिगम पर बल देती हैं। समूह कार्य द्वारा शिक्षार्थी की विश्लेषणात्मक तथा संज्ञानात्मक कौशलों, समूह कार्य कौशल, सहयोगपूर्ण कौशल, संगठनात्मक एवं समय प्रबंधन कौशलों का आंकलन किया जा सकता है। आगामी भाग में हम शिक्षार्थी आंकलन में सहकारी अधिगम एवं सेमिनार की सहायता करने पर विमर्श करेंगे।

5.1 सहकारी अधिगम तथा सामाजिक कौशलः

सहकारी अधिगम समूह का प्रयोजन तथा समूह में व्यक्तियों को अवश्य अधिगम करना चाहिए। तब समूह की उपलब्धि समूह में व्यक्तियों के अधिगम पर निर्भर करती है। उपलब्धि हेतु पुरस्कार के लिए प्रतियोगिता के बजाए समूह के सदस्य सीखने हेतु प्रत्येक की सहायता द्वारा एक-दूसरे के साथ सहकार करते हैं। जब मिश्रित पृष्ठभूमियों, कौशलों तथा योग्यताओं वाले शिक्षार्थियों के लघु समूह एक साथ कार्य करते हैं तो उनके पसंद एवं आदर बढ़ते हैं। परिणामतः प्रत्येक शिक्षार्थी के आत्म सम्मान तथा शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होती है। सहकारी अधिगम द्वारा शिक्षार्थी कई सामाजिक कौशलों जैसे दूसरे के विचारों का सम्मान करना, सामग्री साझा करना, बारी लेने, साहस प्रदान करने, विवरण देने, सक्रिय श्रवण, संघर्ष प्रबंधन एवं सहमति निर्माण करना सीखते हैं। समूहों में कार्य करना आपके शिक्षार्थियों को मूल्यवान अधिगम अवसर प्रदान कर सकता है। वे दूसरों का दृष्टिकोण देखना तथा दूसरों से सीखते हैं। सहयोगपूर्वक कार्य करना एक महत्वपूर्ण जीवन कौशल है। समस्या-आधारित अधिगम प्रायः समूह कार्य के तत्वों को सम्मिलित करता है तथा शिक्षार्थी अधिगम को बढ़ाता है। सहकारी अधिगम के दौरान, तथा सहयोगपूर्ण अधिगम गतिविधि के दौरान तथा पश्चात् आंकलन या तो व्यक्तिगत या समूह स्तर पर होता है। प्रत्येक भूमिका के दौरान शिक्षक शिक्षार्थियों के व्यवहार का आंकलन कर सकता है।

5.2 आंकलन तकनीक के रूप में सेमिनार एवं रिपोर्टः

सेमिनार वह गतिविधि है जहाँ शिक्षार्थियों के सामाजिक कौशलों को बढ़ाया जा सकता है। इसे व्यक्तिगत या समूह में किया जा सकता है। समूह का लक्ष्य सुविधाप्रदाता द्वारा पूर्व निर्धारित हो सकता है या व्यक्ति या समूह द्वारा सहयोगपूर्वक निर्णय लिया जा सकता है। आंकलन उपकरण के रूप में सेमिनार का उपयोग तीन चरणों में किया जा सकता है सेमिनार पूर्व चरण, वास्तविक सेमिनार के दौरान तथा सेमिनार के पश्चात् चरण । सेमिनार पूर्व चरण के दौरान शिक्षार्थी प्रकरण पर विचार मंथन कर सकते हैं, एक उत्तम सेमिनार प्रकरण को लिख सकते हैं तथा प्रस्तुति पर सोच सकते हैं। वास्तविक सेमिनार चरण के दौरान शिक्षार्थी प्रकरण को प्रस्तुत करते हैं तथा सेमिनार के पश्चात् चरण के दौरान दर्शकों के समक्ष अपने विचारों पर चिंतन कर सकते हैं। अंततः सेमिनार पश्चात् चरण के दौरान, एक सेमिनार रिपोर्ट तैयार की जा सकती है। सेमिनार रिपोर्ट को स्व-आंकलन या समूह आंकलन उपकरण के रूप में उपयोग करना संभव है। स्व आंकलन करने के दौरान शिक्षार्थी दूसरों द्वारा दी गई प्रतिपुष्टि का परीक्षण करता है कि उसका

पेपर अगले बार हेतु कैसे सुधारा जा सकता है। सुविधाप्रदाता आंकलन सूचक में निम्नलिखित सम्मिलित हो सकते हैं:

1. अवधारणा की समझ
2. समीक्षात्मक चिंतन एवं तर्क
3. नवीन ज्ञान निर्माण की योग्यता
4. आत्म-विश्वास तथा आत्म-अनुशासन
5. प्रस्तुतीकरण शैली

सेमिनार प्रस्तुति के पश्चात् रिपोर्ट का आंकलन निम्नलिखित सूचकों के आधार पर किया जा सकता है:

1. प्रस्तुतीकरण की स्पष्टता
2. रिपोर्ट लेखन की शुद्धता
3. रिपोर्ट का संगठन
4. समूह कार्य का विश्लेषण (यदि रिपोर्ट समूह में बनी हो)
5. नवीन विचारों का निर्माण

11. अच्छे प्रश्न पत्र की विशेषताएँ:

(Charateristics of a good questiona paper)

मापन के प्रमुख चार स्तरों के लिये विभिन्न प्रकार की परीक्षायें जैसे निरीक्षण प्रविधि प्रश्नावली, रेटिंग स्केल, निष्पत्ति परीक्षा आदि का प्रयोग किया जाता है। एक अच्छे परीक्षण की निम्नलिखित विशेषतायें होनी चाहिये

1. वस्तुनिष्ठता (Objectivity)- एक उत्तम प्रकार की परीक्षा वस्तुनिष्ठ होनी चाहिये। अंकन (Scoring) में व्यक्तिगत पक्षों का प्रभाव नहीं होना चाहिये। निबन्धात्मक परीक्षा का यह दोष है कि वे वस्तुनिष्ठ नहीं होती हैं। एक उत्तर पुस्तक को जितने अधिक परीक्षक देखते हैं, उनके अंकों में उतना ही अधिक अन्तर होता है। नवीन प्रकार की परीक्षायें वस्तुनिष्ठ होती हैं।

2. विश्वसनीयता (Reliability)- अच्छी परीक्षा विश्वसनीय होनी चाहिए। यदि किसी परीक्षा को एक ही समूह को दुबारा दें तब उनके अंकों में अन्तर नहीं होना चाहिये। निबन्धात्मक परीक्षाओं की अपेक्षा वस्तुनिष्ठ परीक्षायें अधिक विश्वसनीय होती हैं। मानदण्ड परीक्षा में वस्तुनिष्ठ परीक्षा के प्रश्नों को सम्मिलित करना चाहिये। जब एक ही परीक्षा को एक ही समूह को विभिन्न अवसरों पर देने पर उनके अंक समान आते हैं तब उस परीक्षा को विश्वसनीय माना जाता है। मानदण्ड परीक्षा विश्वसनीय होनी चाहिये।

3. वैधता (Validity)- उत्तम परीक्षा वैध (Valid) होती है। वैधता से तात्पर्य परीक्षा की सार्थकता से है। परीक्षा जिस मापन के लिये बनाई गई है उसका उसे मापन करना चाहिये। शैक्षिक मापन में परीक्षाओं को वैध होना आवश्यक होता है क्योंकि अधिकांश मापन अप्रत्यक्ष रूप से किया जाता है। मानदण्ड परीक्षा की वैधता, गुणक की (Validity Coefficient) गणना करनी चाहिये। परीक्षा के अंकों तथा मानदण्ड परीक्षा के अंकों के सह-सम्बन्ध गुणक की गणना करने से वैधता के स्तर की जाँच की जाती है।

4. व्यावहारिकता (Usability)- एक अच्छी परीक्षा की प्रमुख विशेषता यह होती है कि उसका प्रयोग, अंकन एवं प्राप्ति प्रदत्तों की व्याख्या करना सरल होता है। किसी भी परीक्षा की रचना छात्रों की अधिगम उपलब्धियों (Learning-outcomes) के लिये की जाती है। अतः परीक्षा का व्यावहारिक होना नितान्त आवश्यक होता है। मापदण्ड परीक्षा के निर्माण के समय उसकी व्यावहारिकता को ध्यान में रखना चाहिये।

12. मूल्यांकन प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिकाः (Role of Teacher in Evaluation Process)

एक छात्र की अध्ययन प्रगति का आंकलन करना शिक्षक की प्राथमिक भूमिकाओं में से एक है। कक्षा में छात्रों के नियमित और निरंतर मूल्यांकन से अभिप्राय बच्चों और माता-पिता को सही स्थिति से अवगत कराना, शिक्षक को प्रतिक्रिया और बच्चों के बीच अध्ययन समस्याओं के समाधान के लिए हल निकालना है। अध्ययन मूल्यांकन तंत्र पर आधारित एक शैक्षिक वातावरण वाली कक्षा में ये सुनिश्चित किया जा सकता है कि शिक्षक और छात्र दोनों ही सीखने पर अपना ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। मूल्यांकन प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत समझी जा सकती है:

1. हमें क्या मूल्यांकन करना है यह निश्चित करना।
2. छात्र अपने अध्ययन में कितनी प्रगति कर रहे हैं और इसके साथ-साथ शिक्षा के संपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त करने के मामले में व्यवस्था का निष्पादन कैसा है।
3. निर्धारित अध्ययन लक्ष्यों की तुलना में छात्रों के प्रदर्शन को समझना।
4. परिणामों के आधार पर विद्यालय सीखने के स्तर में सुधार करने के लिए एक विद्यालय स्तर की योजना तैयार करना।
5. शिक्षण परिणामों को सुधारने की दिशा में एक सकारात्मक परिवेश तैयार करना।
6. एक समयावधि के भीतर छात्रों के प्रदर्शन को समझना और शैक्षिक व्यवस्था की स्थिति के बारे में पाठ्यक्रम निर्माताओं, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों शैक्षिक प्रशासकों को एक व्यवस्थित प्रतिक्रिया प्रदान करना।
7. शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना।

वाणिज्य शिक्षक
(Teacher of Commerce)

1. वाणिज्य अध्यापक एवं उसकी विशेषताएं और क्षमताएं:
(Teacher of Commerce and its Qualities and Competencies):

आधुनिक समय में अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा शिक्षा के क्षेत्र में तेज गति से विकास हो रहा भारत में इस गति को और अधिक तेज करने की अपेक्षा की जा रही है। इसके लिये भारतीय नागरिकों की शिक्षा की आवश्यकता एवं गुणात्मकता पर अधिक बल दिया जा रहा है। इस पर पर्याप्त धन भी व्यय किया जा रहा है। शिक्षा की नई नीतियाँ बन रही हैं। नवीन विद्यालय खोले का रहे हैं। विद्यालयों की इमारतों को सुधारा जा रहा है। आधुनिक शिक्षण उपकरणों से विद्यालयों को सुसज्जित किया जा रहा है। अनेक पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ आयोजित की जा रही हैं। पाठ्यक्रम में सुधार किये जा रहे हैं। नवीन पाठ्य-विषयों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जा रहा है। कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा को गुणात्मक बनाने हेतु हर संभव उपाय किये जा रहे हैं, परन्तु एक पक्ष जिसको सबसे अधिक सबल एवं सक्षम बनाया जाना चाहिये उसकी उपेक्षा की जा रही है और वह है शिक्षक। यदि विद्यालय के पास अच्छी इमारत, अच्छे उपकरण, अच्छा पाठ्यक्रम व अच्छे विद्यार्थी हैं लेकिन शिक्षक अयोग्य हैं तो विद्यालय के शिक्षा-स्तर में गुणात्मकता नहीं आ सकती। इसके विपरीत यदि शिक्षक योग्य एवं कुशल हैं तो विद्यालय के पास समस्त सुविधाएँ नहीं भी हो तो भी शिक्षा में गुणात्मकता का आना सम्भव है। अतः आवश्यकता है शिक्षक को योग्य, कुशल एवं सबल बनाने की, शिक्षक वर्ग का वेतन उनके कार्य को देखते हुए बहुत कम है, अन्य सेवा सुविधाएँ भी निम्न स्तर की हैं जिसके कारण अच्छा व गुणी वर्ग तो इस व्यवसाय में आ ही नहीं पाता अन्य व्यवसायों में चला जाता है। जो आ जाते हैं उनको पर्याप्त वेतन व सुविधा नहीं मिलने से वे अपनी गुणात्मकता को बनाये नहीं रख पाते हैं और न ही उसमें सुधार कर पाते हैं। शिक्षक विद्यालय की आत्मा है। यदि शिक्षार्थी के बाद शिक्षा के तत्त्वों में किसी का महत्त्व है तो वह शिक्षक का है जिस पर शिक्षा में गुणात्मकता लाने हेतु अत्यधिक ध्यान दिया जाना चाहिये। शिक्षक शिक्षा जगत का मेरुदण्ड हैं अतः शिक्षा का नियोजन करते समय शिक्षा के इस अवयव की गुणात्मकता पर सबसे अधिक ध्यान दिया जाना चाहिये। इसके लिए योग्य शिक्षकों का चयन हो लेकिन व्यवसाय में आने के पश्चात् उनकी गुणात्मकता में वृद्धि और भी आवश्यक है।

2. वाणिज्य अध्यापक की योग्यता
(Qualifications of Commerce Teacher):

एक वाणिज्य शिक्षक से शैक्षणिक योग्यता के साथ ही कुछ पेशेवर योग्यताधारी होने की अपेक्षा भी की जाती है। माध्यमिक स्तर पर एक वाणिज्य शिक्षक बनने के लिए उ. प्र. माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा निर्धारित शैक्षिक योग्यता को होना अनिवार्य है। जैसे प्रशिक्षित वाणिज्य अध्यापक हेतु बी.कॉम. तथा बी.एड. उत्तीर्ण होना चाहिए तथा प्रवक्ता हेतु एम.कॉम. उत्तीर्ण

होना आवश्यक है। विभिन्न बोर्ड में वाणिज्य प्रवक्ता हेतु प्रशिक्षण योग्यता को भी अनिवार्य योग्यता में रखा गया है।

इसके साथ ही वाणिज्य अध्यापक बनने हेतु अभ्यर्थी को सम्बन्धित बोर्ड के द्वारा आयोजित अहर्ता परीक्षा अथवा निर्धारित अन्य मानदण्डों को पूरा करना होता है।

इसके साथ ही एन.सी.सी./एन.एस.एस./स्काउट गाइड आदि के भी अतिरिक्त भारांक दिए जाते हैं।

3. शिक्षा प्रणाली में शिक्षक की स्थितिः (PLACE OF TEACHER IN EDUCATIONAL SYSTEM):

हुमायूँ कबीर का कथन है- ''वे (शिक्षक) राष्ट्र के भाग्य-निर्णायक हैं।'' यह कथन प्रत्यक्ष रूप से सत्य प्रतीत होता है परन्तु अब इस बात पर अधिक बल देने की आवश्यकता है कि शिक्षक ही शिक्षा के पुनर्निर्माण की महत्त्वपूर्ण कुंजी है। यह शिक्षक-वर्ग की योग्यता ही है जो कि निर्णायक है।

हुमायूँ कबीर का मत है- ''शिक्षा पद्धति की कुशलता शिक्षकों की योग्यता पर निर्भर है। अच्छे शिक्षकों के अभाव में सर्वोत्तम शिक्षा पद्धति का भी असफल होना अवश्यम्भावी है। अच्छे शिक्षकों द्वारा शिक्षा पद्धति के दोषों को भी अधिकांशतः दूर किया जा सकता है।''

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने अपने प्रतिवेदन में लिखा है- ''अपेक्षित शिक्षा के पुनर्निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण तत्त्व शिक्षक-उसके व्यक्तिगत गुण, उसकी शैक्षिक योग्यताएँ, उसका व्यावसायिक प्रशिक्षण और उसकी स्थिति जो वह विद्यालय तथा समाज में ग्रहण करता है, ही हैं। विद्यालय की प्रतिष्ठा तथा समाज के जीवन पर उसका प्रभाव निस्संदेह रूप से उन शिक्षकों पर निर्भर है जो कि उस विद्यालय में कार्य कर रहे हैं।''

इस प्रकार शिक्षक का महत्त्व समाज तथा शिक्षा पद्धति दोनों में ही स्पष्ट है। वस्तुतः शिक्षक उन भावी नागरिकों का निर्माण करता है, जिनके ऊपर राष्ट्र के उत्थान का भार है।

4. आदर्श शिक्षक के गुण (QUALITIES OF AN IDEAL TEACHER)

आदर्श शिक्षक को मनुष्यों का निर्माता, राष्ट्र-निर्माता, शिक्षा पद्धति की आधारशिला, समाज को गति प्रदान करने वाला आदि सब कुछ माना गया है।

साधारणतः ऐसे शिक्षक में बालकों को समझने की शक्ति उनके साथ उचित रूप से कार्य करने की क्षमता, शिक्षण योग्यता, कार्य करने की इच्छाशक्ति और सहकारिता आदि गुणों की अपेक्षा की जाती है। ऐसे गुण सामान्यतः न तो प्रत्येक शिक्षक में मिलते हैं न शिक्षण प्रत्येक व्यक्ति का कार्य ही है। वस्तुतः यह कार्य वह व्यक्ति कर सकता है, जिसमें कुछ विशिष्ट शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक गुण हों। शिक्षण जगत की एक मानसिक प्रक्रिया है, जिसमें मस्तिष्क का मस्तिष्क से सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। इस सम्बन्ध की उपयुक्तता एवं

अनुपयुक्तता बहुत कुछ शिक्षक के व्यक्तित्व पर निर्भर होती है। इसके लिए समय-समय पर अनेक अध्ययन किये गये हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका में डॉ. एफ. एल. क्लैप ने सन् 1913 में एक अध्ययन किया जिसके आधार पर उन्होंने अच्छे शिक्षक के व्यक्तित्व के निम्नलिखित दस गुणों का उल्लेख किया है- 1. सम्बोधन, 2. शरीर रचना, 3. आशावादिता, 4. संयम, 5. उत्साह, 6. मानसिक निष्पक्षता, 7, शुभचिन्तन, 8 सहानुभूति, 9. जीवन-शक्ति, 10. विद्वता

अमरीका में बागले तथा कीथ के अध्ययन के फलस्वरूप उपर्युक्त में 'चातुर्य, नेतृत्व की क्षमता तथा अच्छा स्वर' नामक गुण और जोड़े गये।

इन सूचियों को तैयार करने में विद्वानों ने विद्यालयों के प्रधानाचार्यों, निरीक्षकों तथा अधीक्षकों की ही सम्मतियाँ ली थीं। इनके निर्माण में उन्होंने छात्रों की सम्मतियों का कोई उपयोग नहीं किया। बासिंग ने बालकों की राय को भी अपने अध्ययन का विषय बनाया और उसके आधार पर शिक्षक के व्यक्तित्व के गुणों की सूची में दो अन्य गुणों का योगदान किया- विनोदप्रियता तथा छात्रों के प्रति मैत्रीपूर्ण दृष्टिकोण। रेमाण्ट (Raymont) का मत है कि अध्यापक को उन सभी बातों का त्याग करना चाहिए जो तुच्छ एवं हीन हों क्योंकि उसी पर समस्त छात्रों की दृष्टि लगी रहती है। शिक्षक स्वयं को अपने छात्रों पर अपना प्रभाव डालने से नहीं बचा सकता। इसलिए यह आवश्यक है कि वह सदैव उच्च आदर्शों एवं विचारों को मन, वचन तथा कर्म से व्यवहार में लाये जिनका बालकों पर सर्वोत्तम प्रभाव पड़ सके। राष्ट्रपिता गाँधीजी ने भी खेद के साथ कहा था कि शिक्षकों के आदर्श एवं व्यवहार में प्रायः सामंजस्य नहीं हो पाता, वे कहते कुछ हैं और करते कुछ और हैं।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर शिक्षक के प्रमुख गुणों का विवेचन-(अ) वैयक्तिक गुण, तथा (ब) व्यावसायिक गुण तथा (स) सामाजिक गुण नामक शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा रहा है

(अ) वैयक्तिक गुण (Personal Qualities):

(i) **उत्तम स्वास्थ्य एवं जीवन-शक्ति**- शिक्षक का एक गुण यह भी है कि उसका स्वास्थ्य उत्तम हो। परीक्षणों के आधार पर यह देखा गया है कि स्वस्थ शरीर का स्वस्थ मस्तिष्क से उच्च प्रकार का सह-सम्बन्ध होता है। हरबर्ट स्पेन्सर का मत है- ''जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए अच्छा प्राणी होना आवश्यक है। यदि शिक्षक का स्वास्थ्य खराब है तो वह सफलतापूर्वक अध्यापन कार्य नहीं कर सकता क्योंकि शक्ति एवं स्फूर्ति शिक्षक के कार्य में आशावादिता, उत्साह एवं जीवन-शक्ति लाती है। शिक्षक को केवल शारीरिक रूप से हृष्ट-पुष्ट होना ही आवश्यक नहीं है, वरन् उसमें चेतना का होना भी आवश्यक है। आर्थर बी. मौलमैन का कथन है- 'सफल शिक्षक के लिए जीवन-शक्ति का होना आवश्यक है।' यह केवल इसलिए ही आवश्यक नहीं है कि इसका प्रभाव बालकों पर प्रतिबिम्बात्मक रूप में पड़ेगा परन्तु थकान से उत्पन्न हुई बाधाओं को कम करने के लिए भी यह आवश्यक है।

(ii) **संवेगात्मक सन्तुलन**- शिक्षक में संवेगात्मक सन्तुलन का होना परमावश्यक है। इसके अभाव में वह अपने छात्रों का भावात्मक विकास करने में असफल रहेगा। यदि शिक्षक स्वयं

संवेगात्मक रूप में असन्तुलित है तो इससे छात्रों को हानि ही नहीं, वरन् विद्यालय संगठन में भी बहुत सी समस्याएँ उत्पन्न होंगी।

(iii) **उच्च चरित्र एवं दृढ़-संकल्प-** एक राष्ट्र-निर्माता होने के नाते शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि उसका चरित्र निर्मल हो और उसमें समाजसेवियों की भाँति अपने कार्य के लिए उत्साह हो। यदि शिक्षक में सच्चरित्रता का अभाव है तो वह अपने छात्रों एवं समाज का उपयुक्त ढंग से पथ-प्रदर्शन नहीं कर सकता।

(iv) **नेतृत्व की क्षमता-** शिक्षक में नेतृत्व की क्षमता होना भी आवश्यक है। परन्तु शिक्षक को जिस प्रकार की नेतृत्व क्षमता की आवश्यकता है वह अन्य प्रकार के नेतृत्व से भिन्न है। शिक्षक का नेतृत्व-उसके चरित्र, शक्ति, प्रभावकारिता तथा दूसरों से प्राप्त आदर पर निर्भर है, अर्थात् शिक्षक का नेतृत्व उसके व्यक्तित्व पर आधारित है। इस प्रकार का नेतृत्व पथ-प्रदर्शन करने, समूह के साथ कार्य करने तथा उसे सहायता देने एवं समूह को सामान्य ध्येय की प्राप्ति हेतु अग्रसर करने के लिये प्रोत्साहित करने की क्षमता पर निर्भर है। परन्तु यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि अति दृढ़ व्यक्तित्व नेतृत्व के लिए उसी प्रकार की अयोग्यता है, जिस प्रकार कि निर्बल व्यक्तित्व। इस तथ्य पर बल देते हुए डॉ. मैलार्ज ने कहा है- भावी शिक्षक अपने छात्रों पर अपने व्यक्तित्व का प्रभाव डालने से बहुत कम सम्बन्ध रखेगा। बैलार्ड इसके विपरीत, यह अपने छात्रों के व्यक्तित्व को समझने तथा प्रत्येक में उस दीपशिखा को खोजने का प्रयत्न करेगा जो कि उनके व्यक्तित्व को देदीप्यमान बनाती है तथा उस शक्ति स्रोत को खोजेगा, जो उनको प्रेरित करती है।

(v) **मित्रता एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार-** उपर्युक्त गुणों के अतिरिक्त, शिक्षक में यह गुण होना चाहिए कि वह अपने छात्रों तथा सहयोगी शिक्षकों के साथ मैत्रीपूर्ण एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करे। यदि शिक्षक इस प्रकार का व्यवहार अपने छात्रों के साथ करेगा तो वह उनके विश्वास को शीघ्र ही प्राप्त कर लेगा। इसके अतिरिक्त वह उनके चरित्र का निर्माण करने में भी समर्थ होगा। उनको अपने सहयोगियों के साथ भी सहृदयतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए। विद्यालय शिक्षण एक सहयोगी कार्य है। इसको सफलतापूर्वक तभी किया जा सकता है जब समस्त शिक्षक शिक्षालय व्यवस्था तथा शिक्षण के संचालन में परस्पर सहयोग के साथ कार्य करेंगे। शिक्षक को सदैव अपने उच्चाधिकारियों, प्रधानाध्यापक, निरीक्षक आदि को मित्र तथा पथ-प्रदर्शक के रूप में देखना चाहिए।

(ब) व्यावसायिक गुण (Professional Qualities):

(i) **विषय का पूर्ण ज्ञान-** कोई भी व्यक्ति विषय के ज्ञान के अभाव में शिक्षक नहीं हो सकता है। अतः शिक्षक के लिए यह अति आवश्यक है कि वह विद्यालय में जिस विषय का शिक्षण करे, उसका पूर्ण ज्ञान हो यदि उसका विषय सम्बन्धी ज्ञान अधूरा होगा तो वह अपने छात्रों का विश्वासपात्र नहीं बन सकेगा। इस सम्बन्ध में एक विद्वान का मत है- 'एक अयोग्य चिकित्सक मरीज के शारीरिक हित के लिए खतरनाक है। परन्तु एक अयोग्य

शिक्षक राष्ट्र के लिए इससे भी अधिक घातक है, क्योंकि वह न केवल अपने छात्रों के मस्तिष्क को विकृत बनाता तथा हानि पहुँचाता है, वरन् उनके विकास को अवरुद्ध करता है तथा उनकी आत्मा को मरोड़ देता है। इसलिए एक अच्छे शिक्षक से यह आशा की जाती है कि वह अपने विषय का सदैव विद्यार्थी बना रहे।''

के. जी. सैयदैन ने सत्य ही कहा है- ''आप एक बर्तन में से कोई वस्तु तब तक उड़ेलकर नहीं निकाल सकते, जब तक कि आपने वह वस्तु उसमें रखी ही न हो। यदि शिक्षक ज्ञान एवं बुद्धि की दृष्टि से हीन एवं खोखला है, यदि उसमें ज्योति प्रदान करने वाली शक्ति नहीं है, तो वह अपने बालकों के मस्तिष्क को प्रखर या उनकी भावनाओं को मानवीय रूप प्रदान नहीं कर सकता। यदि वह स्वयं प्रदीप्त नहीं है तो दूसरों में ज्ञान के प्रकाश को प्रसारित करने में सदैव असमर्थ रहेगा।''

(ii) **व्यावसायिक प्रशिक्षण-** शिक्षक के लिये यही आवश्यक नहीं है कि वह यह जाने कि उसे क्या पढ़ाना है वरन उनको यह भी जानना है कि 'किस प्रकार पढ़ाना है तथा किसको पढाना है।' इन प्रश्नों का उत्तर जानने के लिये उसको व्यावसायिक प्रशिक्षण (Professional Training) प्राप्त करना आवश्यक है। आज विश्व की कोई भी शिक्षा पद्धति ऐसी नहीं है जो विद्यालयों के लिये प्रशिक्षित अध्यापकों की आवश्यकता का अनुभव न करती हो। अतः प्रत्येक शिक्षा पद्धति में प्रशिक्षण विद्यालयों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। यहाँ होने वाले शिक्षक को बालक की प्रकृति को समझने तथा शिक्षण प्रदान करने के ढंगों से परिचित कराया जाता है। इन प्रशिक्षण विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में मनोविज्ञान, विद्यालय प्रशासन एवं संगठन, स्वास्थ्य शिक्षा, शिक्षण सिद्धान्त आदि विषयों को स्थान दिया जाता है। इसके अतिरिक्त छात्राध्यापकों को व्यावहारिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है। जब वे शिक्षक का पद ग्रहण कर लेते हैं तो उनके व्यावसायिक ज्ञान को नवीन बनाए रखने के लिये विभिन्न गोष्ठियों, विचार सम्मेलनों, सेमीनारों आदि का आयोजन किया जाता है। अतः शिक्षक का प्रशिक्षित होना और शिक्षा सम्बन्धी गोष्ठियों आदि में भाग लेते रहना आवश्यक गुण है।

(iii) **व्यावसायिक निष्ठा-** शिक्षक को अपने विषय तथा व्यवसाय में निष्ठा रखना आवश्यक है। निष्ठा ही उसे कार्य करने के लिये प्रोत्साहित करती है। यदि उसे अपने विषय तथा व्यवसाय में निष्ठा नहीं होगी तो वह अपना तथा अपने छात्रों का विकास अवरुद्ध कर देगा। मार्क पैटिसन का कथन है- 'एक अच्छे शिक्षक का प्रथम गुण यह है कि वह एक अध्यापक हो और कुछ नहीं, और उसको एक शिक्षक के रूप में प्रशिक्षित किया जाय।' उसे यह ध्यान रखना चाहिये कि जब उसने इस व्यवसाय को ग्रहण किया है, तब उसे इसमें पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य करना चाहिये।

(iv) **पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में रुचि-** आजकल शिक्षण कार्य कक्षा-कक्ष में दिये जाने वाले निर्देशों तक ही सीमित नहीं वरन् इससे कहीं अधिक माना जाता है। आधुनिक विद्यालय शिक्षकों से इस बात की अपेक्षा करते हैं कि वे विषयों का ज्ञान प्रदान करने के अतिरिक्त कक्षा-कक्ष के बाहर की क्रियाओं के संगठन एवं संचालन का भी कार्य करें। जब खेल-कूद स्काउटिंग, नाटक, वाद-विवाद, भ्रमण, रेडक्रास, छात्रसंघ, संगीत-क्लब आदि क्रियाओं को

पाठ्यक्रम तथा विद्यालय के नियमित कार्य से सम्बन्धित कर दिया है, तब यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक को इन क्रियाओं में भाग लेने के लिये स्वयं को तत्पर बनाना चाहिए।

(v) **प्रयोग एवं अनुसन्धान में रुचि-** आधुनिक युग शिक्षकों से यह भी मांग करता है कि उनको अपने कार्य क्षेत्र में अनुसन्धानकर्त्ता होना चाहिये। शिक्षा में अनुसंधान का महत्त्व प्रतिदिन अपना आधार निर्मित करता जा रहा है। शिक्षकों को कक्षा की समस्याओं के निराकरण के लिये वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करके शिक्षा की प्रगति में सहयोग देना चाहिये। उनको क्या पढ़ाना है?' 'क्यों पढ़ाना है ?' 'किस प्रकार पढ़ाना है?' आदि मूलभूत शैक्षिक समस्याओं का समाधान करने के लिये अनुसन्धान एवं प्रयोग करने चाहिये।

जिन गुणों का ऊपर विवेचन किया जा चुका है, उनमें बहुत-से गुणों को शिक्षक प्रकृति से प्राप्त करता है। इसलिये यह कहा जाता है कि अच्छे शिक्षक पैदा होते हैं, बनाये नहीं जाते। परन्तु प्रशिक्षण एवं अनुभव का भी उनके निमार्ण में बहुत महत्त्वपूर्ण भाग होता है। प्रशिक्षण विद्यालयों के पाठ्यक्रम का उद्देश्य अनुभवहीन शिक्षक को शिक्षा के विषय में चिन्तन करने के लिये सहायता देना तथा उनसे कुशल व्यक्तियों की देखरेख में कुछ समय के लिये शिक्षण कार्य कराना है। इन विद्यालयों में नवयुवक शिक्षक के समक्ष शिक्षण के उत्तम ढंगों एवं साधनों को प्रस्तुत किया जाता है जो उसकी कक्षा-कक्ष में सहायता कर सकें। परन्तु ये ढंग अन्तिम ढंगों एवं साधनों के रूप में प्रदान नहीं किये जाते हैं, वरन् उन मानदण्डों के रूप में दिये जाते हैं जिनके द्वारा वह अपने प्रयासों का मूल्यांकन कर सके।

(स) सामाजिक गुण (Social Qualities):

सामाजिक समझदारी मुख्यतः सामाजिक सम्बन्धों द्वारा अनुप्राणित विश्वास के माध्यम से प्राप्त की जाती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति में सामाजिक गुणों का होना आवश्यक है, क्योंकि असामाजिक व्यक्ति इस विश्वास (सामाजिक सम्बन्धों द्वारा अनुप्राणित) का निर्माण करने में असफल रहता है। शिक्षक को उन सामाजिक गुणों को अवश्य ग्रहण करना चाहिए, जो कि उसे कक्षा-कक्ष तथा समुदाय- दोनों में सहायता प्रदान करेंगे। इनमें से कुछ गुणों को वह सम्पर्क द्वारा तथा कुछ को प्रशिक्षण द्वारा प्राप्त कर सकता है। उदाहरणार्थ-सामाजिक चातुर्य, उत्तम निर्णय-शक्ति, जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण, परिस्थितियों का सामना करने का साहस, अपनी कमियों को स्वीकार करने की तत्परता, मिल-जुलकर कार्य करने की क्षमता आदि।

एक कुशल अध्यापक में सामाजिकता की भावना होना अति आवश्यक है। उसको कक्षा-कक्ष (Class-room) या विद्यालय तथा समुदाय दोनों में सहायता प्रदान करनी चाहिए। सामाजिक गुणों में अध्यापक की उच्च निर्णय लेने की क्षमता, आशावादी दृष्टिकोण, साहस, मिल-जुलकर कार्य करना आदि आते हैं। इसके लिए अध्यापक को सामूहिक खेलों व पाठ्य-सहगामी क्रियाओं (Co-curricular Activities) को कराना चाहिए।

सार रूप में हम कह सकते हैं कि शिक्षक का व्यक्तित्व तीखे नाक-नक्श वाला या तराशा हुआ होना चाहिए उसे निम्नलिखित के विषय में विशेषतः सतर्क रहना चाहिये-

1. उसको वक्त का पाबन्द होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, उसे समयनिष्ठ होना चाहिए।
2. उसको अपने प्रत्येक कार्य में निष्पक्ष होना चाहिए।
3. उसको सभी के प्रति सहृदय रहना चाहिए।
4. उसको छात्रों की सम्मतियों का आदर करने वाला होना चाहिये और विद्यार्थियों को स्वतन्त्र रूप से विचार-विमर्श करने के लिये आमन्त्रित करना चाहिए।
5. एक शिक्षक को सम्मान प्राप्त करने के योग्य होना चाहिए।
6. शिक्षक को अपने व्यवहार तथा भाषण में विवेकी होना चाहिए।
7. एक शिक्षक को दयालु तथा सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए।
8. उसको प्रत्येक स्थिति में ईमानदार होना चाहिए।
9. वह बाल-अध्ययन, अपने विषय एवं शिक्षण शास्त्र आदि का उत्साही छात्र होना चाहिए।
10. एक शिक्षक को स्वयं को जानना चाहिए।

5. माध्यमिक विद्यालय में वाणिज्य शिक्षक की भूमिका तथा उत्तरदायित्व (Role and responsibilities of a commerce teacher in secondary school):

वाणिज्य विषय का शिक्षण करने वाले अध्यापक में निम्न योग्यताएँ भी होनी चाहिए-

(1) उसे अपनी पाठ्यचर्या की रूपरेखा बनानी चाहिये। रूपरेखा बनाते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिये-

(i) पाठ्यचर्या की रूपरेखा ऐसे छात्रों को ध्यान में रखकर बनानी है जो भविष्य के सुयोग्य नागरिक और व्यवसायों में काम करने वाले कर्मचारी होंगे अथवा स्वयं का व्यापार करेंगे ।

(ii) जिससे कर्मचारी और नियोक्ता में मधुर सम्बन्धों का विकास हो तथा छात्र वाणिज्य के सिद्धान्तों का अपने जीवन में उपयोग कर सकें।

(iii) रूपरेखा बनाने में विभिन्न विषयों (समाज विज्ञान, विज्ञान आदि) के विशेषज्ञ अध्यापकों की राय लेनी चाहिये जिससे विभिन्न विषयों को सहसम्बन्धित किया जा सके।

(iv) कृषि, वाणिज्य, श्रम, उपभोक्ता, सरकार आदि सेक्टरों की समस्याओं को स्थानीय, राज्यीय और राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यचर्या में प्रस्तुत करना चाहिये।

(v) व्यवहार उद्देश्यों का विकास करना चाहिये और उन्हें समय-समय पर छात्र की रुचियों और प्राथमिकताओं को ध्यान में रखकर करना चाहिये।

(vi) छात्रों की उपलब्धता के मापन के साथ-साथ अध्यापक को वस्तुनिष्ठ होकर छात्रों का विभिन्न परिस्थितियों में अवलोकन करना चाहिये।

(2) रोजगार के विभिन्न अवसरों को ध्यान में रखकर छात्रों को व्यवसाय चुनने में सहायता करनी चाहिये। इसके लिए अध्यापक को-

(i) छात्रों को बताना चाहिये कि व्यवहार, व्यक्तित्त्व और अभिवृत्तियाँ आपस में अन्तः सम्बन्धित हैं।

(ii) छात्रों को बताना चाहिये कि उन्हें अपने विचार बुद्धिमत्तापूर्ण तरीके से प्रकट करने चाहिए, निर्देशों का पालन करना चाहिये, उत्तरदायित्व वहन करना चाहिये और एक साथ कार्य करने की अभिवृत्ति प्रदर्शित करनी चाहिये।

(iii) प्रत्येक इकाई का शिक्षण कराते समय उसका व्यवसाय से सम्बन्ध स्थापित करना चाहिये।

(iv) अन्य विशिष्ट विषयों में सीखे गये ज्ञान, अवबोध और कौशलों का सामंजस्य करना चाहिये।

(3) वाणिज्य से सम्बन्धित शोधों पर प्रकाश डालना चाहिये और छात्रों में शोध कार्यों के प्रति रुचि जाग्रत करनी चाहिये।

(4) शैक्षिक सामग्री संसाधन केन्द्र की स्थापना करनी चाहिये। जिससे वह छात्रों को विभिन्न उपकरणों का ज्ञान दे सके, उनमें कौशल का विकास कर सके। इस क्रिया से छात्र वास्तविक परिस्थितियों का लाभ उठाकर विभिन्न प्रक्रियाओं के सम्बन्धों को ध्यान में रखकर निष्कर्ष निकाल सकेंगे।

(5) उसे प्रश्न विधि का प्रयोग केवल प्रत्यास्मरण के लिए ही नहीं करना चाहिये बल्कि प्रश्नों का उपयोग नई इकाई प्रारम्भ करते समय छात्रों के ज्ञान का मापन करने के लिए, विचार-विमर्श करने के लिए, नये कार्य के लिए प्रेरणा देने के लिए और कक्षा कार्य को गति देने के लिए करना चाहिए।

(6) पाठ्यचर्या शिक्षण में विविध माध्यमों का उपयोग करना चाहिये जिससे छात्र सरलता से सीख सकें। उसे नवीनतम सामग्रियों का उपयोग करना चाहिये, विचार-विमर्श का सहारा लेना चाहिये, प्रदर्शन करना चाहिये, अभिनय विधि का उपयोग करना चाहिये प्रायोजनाएँ चलानी चाहियें, समुदाय के विशिष्ट व्यक्तियों को आमन्त्रित करना चाहिये और छात्रों को छोटे-छोटे समूहों में विभाजित कर कक्षा कार्य को सक्रिय बनाना चाहिये।

(7) छात्रों के चरित्र निर्माण में सहायक होना चाहिये। इसके लिए अध्यापक को-

(i) समाज के नियमों के प्रति आदर विकसित करना चाहिये।

(ii) उच्च नैतिक मूल्यों का पालन करने के लिए छात्रों को प्रेरित करना चाहिये क्योंकि वाणिज्य में नैतिक मूल्यों का महत्त्व बहुत अधिक है।

(iii) विचार-विमर्श के समय अन्य लोगों के विचारों का आदर करने की आदत का विकास करना चाहिये।

(8) शिक्षण में सही शब्दावली का प्रयोग करना चाहिये जिससे छात्र वाणिज्य भाषा का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

(9) वाणिज्य परिषद् के माध्यम से छात्रों में विभिन्न पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के द्वारा विभिन्न वाणिज्यिक क्षमताओं का विकास करना चाहिये।

वाणिज्य शिक्षण में प्रबन्धन
(Management in Commerce Teaching)

1. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Co-curricular Activities):

पाठ्य सहगामी क्रियाओं से अभिप्राय उन क्रिया-कलापों से है, जो छात्र के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास करने तथा शिक्षा के पूर्वनिर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता देती है। इस सम्बन्ध में प्रो. पठान ने इन क्रियाओं को परिभाषित करते हुये लिखा है, 'पाठ्य सहगामी क्रियाओं से तात्पर्य उन छात्र-क्रियाओं से है, जिनमें छात्र अध्यापक के मार्गदर्शन में कुछ उत्तरदायित्वों को सुनियोजित विधि से सम्पन्न करने के लिये भाग लेते हैं।'

"Co-curricular activities constitute significant component of a programme of students activities in which the students participate under the guidance of the teacher, assuming the responsibilities for planning their activities." –Prof. Pathan

2. पाठ्य सहगामी क्रियाओं का महत्व (Importance of Co-curricular Activities):

विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं को अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इन क्रियाओं के महत्व को नीचे लिखे बिन्दुओं से स्पष्ट किया जा सकता है -

(अ) छात्रों के लिये पाठ्यसहगामी क्रियाएं-

(1) यह मूलप्रवृत्तियों का शोधन तथा मार्गान्तरीकरण करती हैं।
(2) यह सामाजिक भावना का विकास करती हैं।
(3) यह नागरिकता की शिक्षा प्रदान करती हैं।
(4) यह अवकाश के समय का सदुपयोग करना सिखाती हैं।
(5) यह व्यक्तित्व तथा अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करती हैं।
(6) यह नैतिकता का विकास करती हैं।
(7) यह अनुशासन स्थापना में सहायक होती हैं।
(8) यह मानवीय गुणों का विकास करती हैं।
(9) यह मनोरंजन के स्वस्थ साधन जुटाती हैं।
(10) यह व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करती हैं।

(ब) विद्यालय के लिये पाठ्य सहगामी क्रियाएं-

(1) यह शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती हैं।

(2) यह विद्यालय के वातावरण को आकर्षक तथा ओजपूर्ण बनाती है।
(3) यह विद्यालय को समाज के निकट लाती हैं।
(4) यह शिक्षण को सरस तथा प्रभावी बनाती हैं।
(5) यह छात्रों की अन्तर्निहित शक्तियों की पहचान करने में सहायता करती हैं।

(स) समाज एवं राष्ट्र के लिये पाठ्य सहगामी क्रियाएं-

(1) यह समाज को सभ्यता एवं संस्कृति की शिक्षा देती हैं।
(2) यह सामाजिक मूल्यों का विकास करती हैं।
(3) यह देशभक्ति एवं राष्ट्रीय एकता का पाठ पढ़ाती हैं।
(4) यह जागरूकता तथा सजगता का पाठ पढ़ाती हैं।
(5) यह प्रजातंत्रात्मक मूल्यों का विकास करती हैं।
(6) यह नेतृत्व गुणों का विकास कर समाज व राष्ट्र को कुशल नेता प्रदान करती हैं।

3. पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रकार (Types of Co-curricular Activities)

विद्यालय के जिन कार्यक्रमों को पाठ्य सहगामी समझा जाता है, उनकी स्थिति के विषय में विद्यालय के प्रत्येक अध्यापक को जानकारी होनी चाहिए। पाठ्य सहगामी कार्यक्रमों के विस्तार की जानकारी इनके पूर्ण महत्व में वृद्धि कर सकती है। साथ ही क्रियाकलापों के आपस में और सामान्यतया पाठ्य के साथ संबंधों में भी वृद्धि कर सकती है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अल्पकालिक ध्यान उन क्रियाकलापों को दिया जा सकता है। जिन्हें साधारण समझा जाता है।

सभा (Assembly) :

विद्यालयों में सुबह के समय सबसे पहले क्रियाकलाप के रूप में सभा के मुख्य कार्य विद्यालय को एक कर देना, छात्रों के अनुभवों को समृद्ध बनाना और उन्हें भागीदारी के अवसर प्रदान करना है। विद्यालय के समस्त विद्यार्थियों और अध्यापकों का एकत्र होना विद्यार्थियों की विद्यालय को एक इकाई के रूप में देखने में सहायता करता है। विद्यालय की परम्पराओं और क्रियाकलापों को महत्व देने से उद्देश्य की पारस्परिकता और विचारधारा (दृष्टिकोण) की एकता को बल मिलता है। साधारण ज्ञान, आदर्श और रुचियाँ विद्यालय की वास्तविक नागरिकता के लिए जरूरी हैं। इनके बिना निष्ठा आदर और उत्तरदायित्व के विषय में कोई आशा नहीं की जा सकती है। विद्यालय के क्रियाकलापों की विविधता वाले कार्यक्रम में यह एक कर देने वाले प्रभाव विद्यार्थियों को वास्तविक लाभ और प्रोत्साहन देने वाले होने चाहिए।

सभा के कार्यक्रम में विद्यार्थियों के अनुभवों को विस्तृत और समृद्ध करने की सम्भावनाएँ हैं। अधिकतर उच्च विद्यालयों के विस्तृत प्रस्तावों के कारण ऐसी बहुत सी चीजें हैं जिनको अनुभव करने का अवसर विद्यार्थियों को कक्षा में नहीं मिल सकता है। संगीत क्लब या कला की कक्षा द्वारा सभा का कार्यक्रम समस्त छात्रों को इन क्षेत्रों में अनुभव प्रदान कर सकता है जो अन्यत्र उनको

नहीं मिलेगा। किसी कक्षा संस्था या विद्यार्थियों के समूह द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम समस्त विद्यार्थियों को इन क्रियाकलापों से लाभान्वित होने का अवसर प्रदान करता है जिनमें थोड़े-से विद्यार्थियों ने ही विशेज्ञता हासिल की है। न केवल उनका सौन्दर्य बोध और समझ बढ़ती है बल्कि उनकी रुचियों के दायरे को विद्यालय के कार्यक्रम के पक्षों की ओर भी बढ़ाया जा सकता है जिनका उनको पता भी नहीं हो। सभा विद्यार्थियों की भागीदारी के उत्तम अवसर प्रदान करती है। यह संदेहपूर्ण है कि सभा को केवल इसी वजह से उचित ठहराया जा सकता है। लेकिन इस अवसर की अनदेखी नहीं करनी चाहिए। तमाम तरह के क्रियाकलाप और प्रदर्शन कार्यक्रम में शामिल किए जा सकते हैं लेकिन भागीदारी हर समय कुछ ही विद्यार्थियों तक सीमित होती है। लेकिन फिर भी यह तमाम विद्यार्थियों को श्रोता के रूप में भाग लेने का अवसर प्रदान करती है। यह बहुत वांछनीय है कि विद्यार्थी सुनने की उचित आदत विकसित करें। दूसरों के प्रति विनम्रता, वक्ता के लिए आदर और करतल ध्वनि के उचित तरीके शायद बहुत अच्छी तरह से वास्तविक अभ्यास से प्राप्त किए जा सकते हैं।

मानव अधिकार दिवस, तंबाकू निषेध दिवस, महान व्यक्तियों का जन्म दिवस और अतिथि व्याख्यान आदि के निर्देशन के लिए लाभप्रद हो सकते हैं। सभा में कुछ समय का उपयोग योग व ध्यान करने के लिए किया जाना चाहिए।

विद्यालय क्लब (School Clubs):

यद्यपि उपयोग में भिन्नता है फिर भी बहुत-से विद्यालयों में क्लब के कार्यक्रम को विद्यालय द्वारा प्रदत्त समस्त सेवाओं में अत्यन्त महत्वपूर्ण भाग के रूप में समझा जाता है। शायद विद्यालय क्लब सर्वतोमुखी तरह की पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों में से एक हैं। वे विद्यार्थियों के छोटे समूहों को उनकी सामान्य रुचियों वाले क्रियाकलापों में भाग लेने की इजाजत देते हैं। क्लबों के विशेष लक्ष्यों और उद्देश्यों को बदला जा सकता है। आमतौर से यह कहा जा सकता है कि क्लब विद्यालय में सामान्य रूप से सूचीबद्ध कार्यक्रम को पूर्ण करने का अवसर प्रदान करते हैं। ऐसी बहुत सी रुचियाँ और क्रियाकलाप हैं जिन्हें कक्षा में करने की समय इजाजत नहीं देता। ऐसे अपूर्ण कार्यों को क्लबों में चलाना शैक्षिक कार्यक्रम को पूर्ण करता है और उसे अधिक प्रभावशाली बनाता हैं। दूसरे उदाहरणों में, वास्तविक शैक्षिक मूल्य के क्रियाकलाप क्लबों के माध्यम से चलाए जा सकते हैं यद्यपि वे सीधे तौर से किसी पाठ्यक्रम के कार्य से संबंधित नहीं होते हैं। क्लब विद्यार्थियों को नई रुचियाँ खोजने के अवसर प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त अपनी योग्यता और निपुणता परखने का अवसर प्रदान करते हैं। वे विद्यार्थियों को खुद/स्वयं को व्यक्त करने और पहल करने और इसके अतिरिक्त यह स्वयं सीखने की एक विशेष सामाजिक परिस्थिति में दूसरों के साथ दूसरों के प्रति विनम्रता, वक्ता के लिए आदर और करतल ध्वनि के उचित तरीके शायद बहुत अच्छी तरह से वास्तविक अभ्यास से प्राप्त किए जा सकते हैं।

सार्थक सभाओं के कार्यक्रमों को सिर्फ तभी सुनिश्चित किया जा सकता है जब कोई उनके लिए जिम्मेदारी ले। बहुधा अध्यापकों से आशा की जाती है कि वे वर्ष भर की सभाओं के कार्यक्रमों के आयोजन में, उनमें स्वयं भाग लेने में और विशेष कार्यक्रमों के लिए विद्यार्थियों की प्रशिक्षण और पूर्वाभ्यास कराने में सहायता करें। सभा के अच्छे कार्यक्रम अकस्मात् ही नहीं आते

हैं, उनकी योजना बनानी होगी। प्रधानाध्यापक को सभाओं का सामान्य निर्देशन खुद करना चाहिए, यद्यपि कार्यक्रमों की योजना का काम समितियों या दक्ष अध्यापकों को सौंपा जा सकते हैं।

कार्यक्रमों की योजना काफी समय पहले ही बना लेनी चाहिए ताकि तैयारी के लिए काफी समय मिल सके। कुछ विद्यालयों ने अध्यापकों के बारी-बारी से सभा के कार्यक्रमों में उपस्थित रहने की प्रथा का अनुसरण किया है। विद्यार्थियों को कार्यक्रमों में भाग लेने की अनुमति तब ही देनी चाहिए, जब पर्याप्त पूर्वाभ्यास कर लिया गया हो। चाहे कार्यक्रम कक्षा, संस्था, क्लब या यूंही चुने गए विद्यार्थियों के समूह द्वारा प्रस्तुत किया गया हो, किसी अध्यापक को उस कार्यक्रम के लिए उनको तैयार करने और उनका मार्गदर्शन करने का उत्तरदायित्व लेना चाहिए।

सभा, अन्य बातों के साथ-साथ सामान्य घोषणाओं के लिए अनुशासन सलाह और विद्यार्थियों को चेतावनी, दैनिक खबरों के वाचन, लघु वार्ता, त्योहारों और दिनों जैसे राष्ट्रीय दिवसों, संयुक्त राष्ट्र दिवस पर कैसे काम करना होता है। बहुत से क्लब उच्च विद्यालय के विद्यार्थियों को सामूहिक सक्रियता और सामाजिक सहयोग वाले क्रियाकलापों के लिए अवसर प्रदान करते हैं। किशोरों का सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्वभाव उनके इस प्रकार के कार्य करने के लिए विशेष रुचि पैदा करता है।

एक क्लब के कार्यक्रम में विद्यालय का प्रत्येक अध्यापक शामिल होगा। अधिकतम परिणाम सुनिश्चित करने के लिए अध्यापक वर्ग के एक सदस्य को प्रत्येक क्लब का समर्थन और मार्ग दर्शन करना चाहिए। आमतौर पर प्रत्येक वर्ष क्लब कार्यक्रम की प्रगति, उसकी व्यवस्था, बैठकों की सूची और विशिष्ट क्लबों का अनुमोदन क्लब क्रियाकलापों सलाहकारों/अध्यापकों को उत्तरदायित्व है। क्लबों की उपयोगिता के विषय में विद्यार्थियों को शिक्षित करने के लिए अध्यापकों से तर्क संगत रूप से आशा की जा सकती है। क्लब के आधिकारिक प्रवर्तक/सलाहकार के रूप में एक अध्यापक की क्लब के नाम, सदस्यता के लिए शर्ते क्रियाकलापों के प्रकार, आंतरिक व्यवस्था और पद्धति क्लब के क्रियाकलापों पर तकनीकी सलाह और विद्यार्थियों की भागीदारी को प्रोत्साहन आदि मदों के लिए कुछ उत्तरदायित्व होगा। ऐसे क्लब हो सकते हैं जो विशेष प्रकार के क्रियाकलापों जैसे साहित्यिक, नाट्य शास्त्र, संगीत, वाद-विवाद, (debating) भाषण देने की कला (elocation) नृत्य, चित्रकला और पर्यावरण आदि को समर्पित हों।

विद्यार्थी परिषद् (Student council):

विद्यार्थी परिषद उस तंत्र और संगठन का हिस्सा है जो विद्यालय के प्रशासन में विद्यार्थियों की भागीदारी के लिए है। यह केंद्रीय प्रतिनिधि सभा (Centralised representative body) जो विद्यार्थियों के स्वप्रबंधन (self-management) के प्रयासों के तमाम क्रियाकलापों के बीच पारस्परिक संबंध बनाती है और उन्हें एकरूपता देती है। विद्यालय के प्रशासन में विद्यार्थियों की भागीदारी और उनके स्वशासन के बीच अंतर को स्पष्ट तौर से बताना चाहिए। स्वशासन तो थोपा गया है क्योंकि प्रबंधन का कानूनी अधिकार तो विद्यालय के प्रशासनिक अधिकारियों के पास है। इसके अतिरिक्त यह संदिग्ध है कि बहुत सारे उदाहरणों में विद्यार्थी इतने परिपक्व होते हैं कि वे विद्यालय के प्रशासन की जिम्मेदारी संभाल सकें।

विद्यालय के प्रशासन में विद्यार्थियों की भागीदारी को स्वीकृति दी जा सकती है जब यह विद्यालय और छात्र होने के हित में हों। विद्यार्थियों के लिए दूसरी बड़ी उपयोगिता यह है कि यह उन्हें नागारिकता का प्रशिक्षण देती है। इसे विद्यालय के और व्यवहार के उचित मानदंडों के प्रति रुचि को प्रोत्साहित करना चाहिए। इसे उत्तरदायित्व और सामाजिक सहयोग को महत्व देना चाहिए और लोकतांत्रिक पद्धतियों का अनुभव प्रदान करना चाहिए। विद्यालय का प्रत्येक विद्यार्थी प्रतिनिधि चुनने में और उनसे आने वाले सुझावों पर अमल करने में भागीदार होता है। अंतर्विवेकशील और उत्तरदायी विद्यार्थी परिषद का अगर उचित तरीके से मार्गदर्शन किया जाए तो वह विद्यालय को बहुत-सी सेवाएँ प्रदान कर सकती है। प्रत्येक विद्यार्थी की स्वप्रबंधन हेतु विकसित रुचि और प्रयत्न सामान्यतः विद्यालय के कार्य में सुधार लाएगा और जीवन की लोकतांत्रिक पद्धति का शिक्षण प्रदान करेगा।

विद्यार्थी परिषद के क्रियाकलापों का विद्यालय के प्रशासन के साथ घनिष्ठ संबंध विशेष रूप से उच्चतर स्तर पर उसे वांछनीय बना देता है जबकि प्रधानाध्यापक परिषद के विचार विमर्शी के साथ घनिष्टता से संलग्न हों। बहुत से मामलों में प्रधानाध्यापक सलाह देता है और इसके संरक्षक के रूप में काम करता है कुछ मामलों में यह जरूरी हो जाता है कि यह कार्य अध्यापक वर्ग के किसी अध्यापक को सौंप दिया जाए। विद्यार्थी परिषद के सलाहकार को दृष्टिकोण और पद्धति के अनुसार बहुत-सी बातें ध्यान में रखनी चाहिए। परिषद् को लोकतांत्रिक रूप से ठोस सिद्धांतों के साथ आगे बढ़ना चाहिए। परिषद में विद्यार्थियों के प्रतिनिधियों को अपने पद के क्षेत्र और उत्तरदायित्व की स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए। परिषद् को संपूर्ण रूप से विद्यालय का प्रतिनिधित्व करना। चाहिए। जहाँ तक संभव हो, विद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी को यह अनुभव करना चाहिए कि उसे उचित प्रतिनिधित्व दिया जाता है। विद्यार्थी परिषद के परिणामों का आकलन अंशतः या उन सेवाओं के संदर्भ में करना चाहिए जिन्हें ये विद्यालय के विद्यार्थियों को देती हैं। विद्यार्थी परिषद को अपने क्रियाकलापों के प्रस्तावों और विस्तार प्रसार (प्रवर्धन) के संबंध में धीरे-धीरे अग्रसर होना चाहिए। इसकी जरूरत पड़ने पर ही इसे व्यवस्थित किया जाना चाहिए। बिना लाभप्रद कार्यों के एक विद्यालय संगठन न केवल अर्थहीन है बल्कि विद्यालय के लिए हानिकारक भी हो सकता है।

नृत्य और संगीत के क्रियाकलाप (Dance and Music Activities) :

संगीत. विद्यालयों में पाठ्यचर्या के विषय के रूप में स्थापित हो चुका है। कुछ विद्यालयों में इसके प्रारम्भिक समय में इसका दर्जा पाठ्यचर्या से सम्बन्धित था। बहुत से उदाहरणों में जहाँ इसका प्रवेश पाठ्य सहगामी क्रियाओं के रूप में हुआ था, बाद में यह नियमित पाठ्यक्रम का हिस्सा हो गया। संगीत कार्यक्रमों की बढ़ती हुई लोकप्रियता और उपयोगिता के कारण दोनों सुगम और वाद्य (vocal and classical music) संगीत के पाठ्यक्रम महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों के लिए श्रेय के विषय गिने जाने लगे हैं। फिर भी उच्च विद्यालयों में बहुत से क्लब, संगठन और समूह हैं जो संगीत के क्रियाकलापों में पाठ्य सहगामी आधार पर भाग लेना चाहते हैं।

संगीत में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ विविध प्रकार की हो सकती है। छात्रों के समूह थोड़े समय के लिए, उन संगीत के क्रियाकलापों में जो विद्यालय पाठ्यचर्या का अंग नहीं हैं उनमें भाग लेने के इच्छुक हो सकते हैं। इसमें से गायन संगीत में विशेष रुचि के छात्र हो सकते हैं या कुछ

विशेष यंत्रों के वादन की रुचि वाले हो सकते हैं जो बैन्ड या वाद्ययन्त्र में नहीं आते। बहुत सारे विद्यालयों की यह नीति होती है कि संगीत के कार्यक्रम वर्ष में एक या दो बार किए जाएँ। यद्यपि ये कार्यक्रम कक्षा के प्रयास का परिणाम हो सकते हैं, तो भी बहुत सारे मामलों में वे स्वतंत्र रूप से बनाए जाते हैं और कक्षा के प्रयास की उपज नहीं होते हैं। दूसरे बहुत उपयोगी संगीत कार्यक्रम संगीत उत्सव हैं। यह सब प्रकार के संगीत के कार्यों को प्रकाशित करने का अवसर प्रदान करता है जिनको विभिन्न संगीत की कक्षाओं और संगठनों द्वारा विद्यालय में किया जाता है। संगीत की प्रतियोगिताएं संगीत में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का दूसरा उदाहरण है। ये प्रतियोगिताएँ संगीत की एक विषय के रूप में लोकप्रियता के कारण आरंभ हुई है। ये विद्यालयों के बीच स्थानीय स्तर, राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली प्रतियोगिता का हिस्सा है।

साहित्यिक क्रियाकलाप (Literary Activities) :

साहित्यिक क्रियाकलाप, पाठ्य सहगामी क्रियाओं के सबसे पुरातन उदाहरण में से एक है। उनका उद्‌गम पुरातन काल के विद्यालयों से है। पहले अमरीकी विद्यालयों में आलंकारिक भाषा के अभ्यास (आम) होते थे। इनके तुरंत बाद में शुक्रवार दोपहर बाद के साहित्यिक कार्यक्रम होते थे, जिनसे विद्यालयों में साहित्यिक सभाएँ तैयार की गई। ऐसी सभाओं का विषय कमोबेश औपचारिक साहित्यिक कार्यक्रमों प्रस्तुत करने से था। इस प्रकार की साहित्यिक सभा स्वैच्छिक थी। ये किसी भी विद्यालय क्लब के समान थी और इसमें छात्र भर्ती होते थे क्योंकि इस प्रकार के कार्य कलापों में उनकी रुचि होती थी।

पाठ्य सहगामी साहित्यिक क्रियाओं के बारे में कहा जा सकता है, कि आजकल इनमें साहित्यिक संस्थाएँ, वाद-विवाद, सार्वजनिक भाषण और नाट्य मंचन (अभिनय) शामिल हैं। सार्वजनिक भाषण, अभिनय और वाद-विवाद ने बहुत सारे बड़े उच्च विद्यालयों में पाठ्य चर्यात्मक स्तर प्राप्त कर लिया है, फिर भी ऐसे विद्यालयों में, पाठ्य सहगामी क्लबों में क्रियाकलाप हो सकते हैं। दूसरे विद्यालयों में जिनमें बहुत से मंझोले आकार और छोटे आकार के विद्यालय शामिल हैं, ये क्रियाकलाप पूर्ण रूप से पाठ्य सहगामी हैं। साहित्यिक क्लब एक स्वैच्छिक समूह है। इसे बहुत कुछ उसी तरह से संगठित और संचालित किया जाता है जैसे विद्यालय के किसी दूसरे क्लब को किया जाता है। कुछ विद्यालयों में उच्च विद्यालय के सारे विद्यार्थियों का दो या दो से अधिक साहित्यिक संस्थाओं में नामांकन कराया जाता है, ताकि इस प्रकार के क्रियाकलापों का लाभ सब विद्यार्थियों को मिल सके। छात्रों की भागीदारी जरूरी होती है और बहुधा उनका रिकार्ड अंकों में रखा जाता है। प्रत्येक प्रकार के क्रियाकलाप के लिए कुछ अंक निर्धारित (नियत) किए जाते हैं। नियमित सप्ताहिक या अर्धमासिक सभाओं के अलावा सभाओं के बीच वार्षिक सार्वजनिक प्रतियोगिता भी हो सकती है। साहित्यिक सभाओं में भागीदारी को प्रोत्साहन देने का उद्देश्य प्रशंसनीय हैं, लेकिन साहित्यिक सभाएँ जितनी भागीदारी की अनुमति देती है वह सीमित है।

वाद-विवाद क्लब मुख्यतः उन विद्यार्थियों के लिए होते हैं जिनकी रुचि वाद-विवाद में होती है। बहुत सारे मामलों में वे अभिप्रेरित होती है और अंतर विद्यालय वाद विवाद के लिए प्राथमिक अनुभव का कार्य करती हैं। वाद विवाद एक तार्किक दक्षता है और साथ ही वाक्पटुता बढ़ाने में भी सहायक है। सार्वजनिक भाषण (public speating) की क्लब मुख्यतः उन विद्यालयों में होते हैं

जहाँ इस विषय में कक्षाएँ नहीं होती। जहाँ पर सार्वजनिक भाषण एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है वहाँ पर इसकी क्लब विद्यार्थियों को इस क्षेत्र में कुछ विशिष्ट क्रियाकलाप व्यवस्थित ढंग से चालू रखने के अवसर प्रदान करते हैं। नाट्य मंचन एक विषय के रूप में बहुधा कम पूरा करती है अभिनय का कोई विषय नहीं होता है। अभिनय आत्म अभिव्यक्ति का शक्तिशाली माध्यम है। यह भावात्मक विकास में मदद करता है और वाक्चातुर्य को बढ़ाता है क्योंकि आमतौर से एक समूह नाटक का मंचन करता है परंतु एकाकी अभिनय और मूक अभिनय जो संबंधित क्रियाकलाप है, उनमें सिर्फ एक ही व्यक्ति होता है। दूसरों के साथ सहयोग और समन्वय करना भी अभिनय द्वारा सीखा जाता है। नाटकीकरण का कक्षा की (कक्षीय) परिस्थितियों में भी शिक्षण अधिगम के साधन के रूप में भी उपयोग किया जा सकता है। विद्यार्थियों के लिए रंग कार्यशालाओं की व्यवस्था की जा सकती है। नाटक भावनाओं के विरेचन से तनाव और बैचेनी से मुक्ति दिलाकर मनोचिकित्सा के रूप में भी काम करता है।

अध्यापक जो किसी प्रकार के साहित्यिक क्रियाकलापों को समर्थन देते हैं वे इन क्रियाकलापों के निर्देशन करने में भी रुचि और योग्यता रखने वाले होने चाहिए। बाद के जीवन में इन क्रियाकलापों के व्यावहारिक मूल्य और उपयोगिता के कारण विद्यार्थियों को इन क्रियाकलापों में जितना अधिक से अधिक सभव हो सके उतना भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना, प्रशंसनीय है। यद्यपि यही सब कुछ नहीं है कि बहुत सारे छात्रों से यह आशा की जाए कि वे इन्हें बहुत अच्छा ही करें। जहाँ तक सभव हो सके ऐसी स्पर्धाएँ विद्यालय के नियमित कार्य की पराकाष्ठा की सूचक होनी चाहिए। तमाम सार्वजनिक साहित्यिक प्रस्तुतियाँ, कक्षीय नाटक और मनोरंजन उच्चकोटि की गौरवशाली परम्परा और सामुदायिक सहभागिता के अनुरूप होने चाहिए। वे इस लिहाज से सामुदायिक मानकों को बढ़ाने के साधन होने चाहिए। हालांकि ये दक्षता से और शनैः शनैः की जानी चाहिए।

व्यायाम, खेल-कूद और खेल (Athletics Sports & Games):

समस्त विद्यालयों में अधिकतम प्रचलित और बहुत सारे उदाहरणों में सर्वाधिक विदित पहलू व्यायाम, खेल कूद आदि का कार्यक्रम है, इसका कारण इसकी अतः विद्यालयी और भव्य विशेषता है। शारीरिक क्रियाकलापों व्यायाम, खेलकूद सबसे पुराने प्रकार की पाठ्य सहगामी क्रियाओं में गिनती होती है और आधुनिक विद्यालयों में बहुत सारे कारणों से इसे समर्थन दिया जाता है। यह दावा किया जाता है कि खेल विद्यालयी भावना को विकसित करते हैं और विद्यालय का नाम रोशन करने में सहायता करते हैं। अंतर्विद्यालयी प्रतियोगिताएँ विद्यालयी भावना को प्रोत्साहन देती हैं। बशर्ते विद्यार्थियों को अपने अंदर क्रीडा कौशल (खिलाड़ीपन की आदत डालने के लिए उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो। उचित प्रकार से निर्देशित खेलकूद का कार्यक्रम सामुदायिक भावना बेहतर विद्यालयी सहायता को नैतिक और वित्तीय रूप से भी प्रोत्साहित करता है। व्यायामी खेलकूद की भौतिक विशेषताओं को साधारणतया अत्यधिक बल दिया जाता है लेकिन उच्च विद्यालय के युवक का समुचित विकास (शारीरिक विकास) मूल चिंता का विषय होना चाहिए। इससे निकट रूप से संबंधित गुण है मनोविनोदात्मक गुण इस गुण की मान्यता ने शारीरिक क्रियाकलापों में रुचि को बढ़ाया है। इनको बाद के जीवन में किया जा सकता है। व्यायाम से संबंधित खेलकूद के शैक्षिक

गुणों में साधारणतया सामाजिक गुण और विशेषताएँ शामिल है जैसे अच्छा क्रीड़ा कौशल, धैर्य, सहयोग, नैतिक खेल, स्वनियंत्रण और नेतृत्व के गुण।

स्वनियंत्रण एवं नेतृत्व के गुण (Self control and Leadership Qualities):

अधिकतम विद्यालयी स्थितियों में व्यायामी क्रियाकलाप तथा अच्छा परिणाम देंगे जब उन क्रिया कलापों के अवसरों का उचित प्रकार से उपयोग किया जाए। व्यायामी खेल-कूद की बहुत सारी विशेषताओं को अभ्यास कार्यक्रमों के विकास द्वारा अधिकतर विद्यार्थियों तक ले जाया गया है। विद्यालय के तमाम अध्यापक विद्यार्थियों से उचित दृष्टिकोण और आदर्शों को अपनाने के लिए प्रोत्साहन देने में और व्यायामी कार्यक्रमों को समुदाय तक प्रस्तुत करने के लिए सहायता देने में योगदान कर सकते हैं। व्यायाम संबंधी क्रियाकलापों को चालू रखने की जिम्मेदारी विद्यालय के अनुशिक्षक, शारीरिक शिक्षा अध्यापक और प्रधानाध्यापक की होगी। इनको ऐसी समस्याओं को हल करने के लिए। तैयार रहना चाहिए जैसे कार्यक्रम के लिए धनराभि प्रदान करना, जन माध्यमों का सहयोग प्राप्त करना खिलाड़ियों के शारीरिक परीक्षण प्रदान करना, पात्रता निर्धारण करना अंतः शैक्षिक और शारीरिक शिक्षा और स्वास्थ्य कार्यक्रमों के बीच अंतर करना, खेलकूद संघों और अनुशिक्षकों के मानकों को पूरा करना और समुदाय कार्यक्रम समझाना।

विद्यालय के प्रकाशन के चार प्रमुख प्रकार हैं

विद्यालय के प्रकाशन (School Publications)

(1) विद्यालय का समाचार (School News Paper)

(2) विद्यालय की पुस्तिका (Hand Book)

(3) वार्षिकी (Year Book)

(4) विद्यालय की पत्रिका (School Magazine)

विद्यालय के प्रकाशनों का बच्चों एवं माता-पिता के लिए व्याख्यात्मक है। वे विद्यालय के विषय में खबर (समाचार) देते हैं वे विद्यालय के क्रियाकलापों के बारे में विद्यार्थियों को सूचित रखते हैं और माता-पिता और संरक्षकों को विद्यालय के नवीनतम विकासों और समस्याओं से अवगत रखते हैं। वे धैर्य और विद्यालयी भावना को बढ़ाते हैं और विद्यालय के कार्यक्रम की विशेषताओं और वांछनीय क्रियाकलापों को प्रोत्साहित करते हैं। विद्यालय के प्रकाशन स्व-अभिव्यक्ति और चरित्र के बहुत सारे गुणों और नागारिकता के लक्षणों के विकास के लिए अवसर प्रदान करते हैं। ये गुण प्रकाशन के मुख्य उद्देश्य से आकस्मिक रूप से संबंधित हैं परन्तु ये वे गुण हैं जिनकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए।

विद्यालय का समाचार पत्र विद्यालय का सबसे सामान्य प्रकार का प्रकाशन है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यालय के समाचार देना है। विद्यालय के समाचार पत्र आकार में भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं- दो पृष्ठों के अनुलेखित पत्रों से (Mimeographed Papers) से लेकर बड़े छपे हुए संस्करणों या भित्ति पत्रिकाओं तक विद्यार्थी अखबार बनाने का अधिकतम काम कर सकते हैं लेकिन वे यह सब काम किसी अध्यापक के समक्ष मार्गदर्शन से ही कर सकते हैं। विद्यालय के पत्र

के लिए उत्तरदायी व्यक्ति की समस्या कर्मचारियों को संपादकीय समस्याओं के बारे में मार्गदर्शन और निर्देशन देने की है।

संपादकीय समस्याओं में समाचारों की स्पष्ट व्याख्या करने की, उनको प्राप्त करने की और पत्र की बनावट निश्चित करने की समस्याएँ शामिल हैं। उसको पत्र के वित्तीयन और वितरण के विषय में भी सोचना चाहिए। विद्यालय के पत्र के लिए पत्रकार क्लब या पत्रकारिता क्लब बहुधा जिम्मेदारी ले लेते हैं। कुछ अध्यापक इस बात की सलाह देते हैं। कि इन क्लबों की सदस्यता उन छात्रों तक ही सीमित रखी जाए जिन्होंने इस विषय में अपनी योग्यता प्रदर्शित की है या इसमें गंभीरता दिखाई है।

बड़े और मध्यम प्रकार के विद्यालयों के लिए विद्यालय की पुस्तिका बेशकीमती प्रकाशन है और छोटे विद्यालयों के लिए कम महत्वपूर्ण है पुस्तिका की मुख्य विशेषता विद्यालय के बारे में सूचना देने की है क्योंकि इसका प्रकाशन वर्ष में एक बार ही होता है इसलिए इसकी समस्याएँ विद्यालय के पत्र के प्रकाशन की तुलना में कम हैं। वित्तीयन के अलावा अन्य मुख्य समस्याएँ प्रस्तुत करने वाले समाचारों के चयन और उनको व्यवस्थित करने की है। शब्द कोश का मुख्य कार्य वर्ष भर के क्रियाकलापों का इतिहास लिखने का है। इसके प्रकाशन की मुख्य समस्या वित्तीयन की है। अगर विज्ञापनों को शामिल नहीं किया जाता है तो यह समस्या और अधिक गंभीर हो जाती है। साधारणतया अधिक उत्पादन के लाभ संभव है। विद्यार्थियों के मार्ग निर्देशन के अलावा शब्दकोश के उत्तरदायी को बहुत-सी तकनीकी समस्याएँ भी हल करनी चाहिए जैसे- वार्षिकी की फोटोग्राफी, उत्कीर्णन और कलात्मक रूपाकन।

विद्यालय की पत्रिका का मुख्य काम मुदण सामग्री प्रस्तुत करने का है। यह अखबार की अपेक्षा कम बार (erack) प्रकाशित की जाती है। यह साधारणतया प्रतिमाह या कुछ मामलों में इससे कम मर्तबा या वर्ष में एक बार प्रकाशित की जाती है। इसका महत्व सीमित है। इसका मुख्य कारण है- उच्च विद्यालय के छात्रों के पास उतनी योग्यता का न होना जितनी की पत्रिका के लिए जरूरत होती है। इसी कारण इसको अधिकतर बड़े विद्यालयों में ही समर्थन दिया जा सकता है। महत्व और बारम्बारता की दृष्टि से पाया गया है कि विद्यालय के प्रकाशनों की स्थिति निम्नलिखित क्रम में है। समाचार पत्र, अब्दकोश और पत्रिका पत्रिका में विद्यार्थियों और अध्यापकों द्वारा लिखित कविताएँ. कहानियाँ प्रस्ताव आदि होते हैं।

सामाजिक क्रियाकलाप (Social Activities):

स्वभाव से उच्च विद्यालयों के छात्रों में सामाजिक इच्छाएँ (रुचियाँ) होती हैं। गृह और गिरोह किशोरों के सामूहिक रुचियों का प्रमाण हैं। विद्यार्थियों को सामाजिक रुचियों को व्यक्त करने का उचित तरीका सीखना चाहिए। बहुत से उच्च विद्यालय यह भरोसा करते हुए कि सामाजिक भागीदारी के लिए तकनीकों का विकास शैक्षिक कार्यक्रमों का एक भाग है, विद्यालय में सामाजिक कलापों के लिए व्यवस्था करते हैं। विद्यालय के प्रीतिभोजों में दिलचस्पी उनके लिए प्रार्थना बहुधा स्वयं विद्यार्थियों से आती है। विद्यालय इस अवसर का उपयोग केवल प्रशिक्षण देने के लिए करता है जो अब भी महत्वपूर्ण होगा और आगे के जीवन में भी। कुछ विद्यालयों में तमाम प्रीतिभोजों और सामाजिक घटनाओं को नियंत्रित करने के लिए निश्चित नीतियाँ और विनिमय होते हैं। प्रत्येक

अध्यापक को विद्यालय की स्वीकृति नीतियों से पूर्णतया परिचित होना चाहिए और उनके पालन के लिए तैयार होना चाहिए। जो एक कक्षा या किसी सामाजिक घटना की माँग करने वाले समूह के लिए उत्तरदायी होता हैं। विद्यालय द्वारा समर्थित तमाम प्रीतिभोजों और गोष्ठियों का संचालन इस तरीके से करना चाहिए जो छात्रों को विद्यालय को और माता-पिता को स्वीकार्य हो। विद्यालय के प्रीति भोजों/गोष्ठियों के संरक्षक अध्यापकों को इन आयोजनों का प्रबंध करने के लिए छात्र नेताओं को प्रशिक्षण देने, सारे अतिथियों का स्वागत करने के लिए और यह देखने के लिए कि सजावट मनोरंजन और जलपान की व्यवस्था हो गई है, तैयार रहना चाहिए। उनको आचरण और विनम्रता के साथ अच्छी रीतियों के उच्च स्तरों के प्रति छात्रों का रचनात्मक ढंग से और व्यवहार कुशलता से मार्गदर्शन करने के अवसरों की अनदेखी नहीं करनी चाहिए।

सदन प्रणाली (House System) :

बहुत-से अच्छे विद्यालयों में समस्त विद्यार्थियों को पाँच या छह सदनों में बाँट दिया जाता है। सदनों को विशिष्ट नाम दिए जाते हैं। कभी-कभी उनका नाम राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय महान हस्तियों के नाम पर रखा जाता है। इसका उद्देश्य ऐसे समूह बनाना है जिनमें प्रत्येक कक्षा के विद्यार्थी पाठ्य सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था सदनों के माध्यम से की जाती है। अंतर्सदनीय प्रतियोगिताएँ ऊपर गिनाए गए समस्त पक्षों में विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों के रूप में आयोजित की जाती हैं। प्रत्येक सदन के कर्तृतव्य निर्धारित किए जाते हैं, एक समय के एक सदन । उदाहरण के लिए एक सप्ताह के लिए एक सदन को विद्यालय में अनुशासन बनाए रखने का कार्य दिया जा सकता है। दूसरे सदन को उसी सारे सप्ताह के लिए सभा संचालन का कार्य दिया जा सकता है और तीसरे सदन को विद्यालय के समाचार पत्र या पत्रिका का ध्यान रखने को कहा जा सकता है और इसी प्रकार अन्य सदनों को।

सदन प्रणाली के समान है मानीटर प्रणाली। इस प्रणाली में अधिनायकों के दल के साथ-साथ प्रधान विद्यार्थी और प्रधान को चुना जाता है। इस दल को पाठ्य सहगामी क्रियाओं के संचालन की, अनुशासन बनाए रखने की और दूसरे समान कार्यों की जिम्मेदारी दी जाती है।

विविध क्रियाकलाप (Miscellaneous Activities):

बहुत-से दूसरे क्रियाकलापों को पाठ्यसहगामी कार्यकलापों का हिस्सा समझा जा सकता है। इनमें सम्मान संस्थाएँ, विद्यालय बैंकिंग, भ्रमण कक्षीय सभाएँ दोपहर के भोजन के समय के विशेष क्रियाकलाप और विविध विशेष दिन कार्यक्रमों का जिक्र किया जा सकता है। विद्यार्थियों का अधिकतम लाभ सुनिश्चित करने के लिए अध्यापक वर्ग के किसी सदस्य का मार्गदर्शन इन कार्यक्रमों के लिए आवश्यक होता है।

4. पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों का प्रबंधन (Management of Co-curricular Activities)-

मुख्याध्यापक को पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों के प्रबंधन तथा इस संबंध में शिक्षकों का मार्गदर्शन करते समय नीचे दिए गए सामान्य सिद्धांतों का ध्यान रखना चाहिए।

पाठ्य सहगामी क्रिया कलापों का निर्देशन अनेक प्रकार की परिस्थितियाँ उत्पन्न कर देता है। इन विविध परिस्थितियों से सिर्फ तभी निपटा जा सकता है जब शिक्षक स्वयं को पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों की प्रकृति एवं उद्देश्यों के साथ ठीक से समायोजित कर लें। इस संबंध में शिक्षकों का मार्गदर्शन करते समय प्रधानाध्यापक को कुछ सामान्य सिद्धांतों का ध्यान रखना चाहिए जो नीचे दिए गए हैं।

पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों को भली-भाँति पूरे विद्यालयी पर्यावरण से संबंधित होना चाहिए।

यद्यपि पाठ्य सहगामी क्रिया कलापों को पाठ्यचर्यात्मक क्रियाकलापों से अलग करना कठिनाईपूर्ण हो सकता है पर इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि दोनों ही विद्यालय के एक ही कार्यक्रम एवं प्रदान की जा रही चीजों के अंग हैं। इसी वजह से, ऐसी इच्छा की जाती है कि उन्हें अनुभवों के क्रमबद्ध जोड़ा जाए तथा उनका सामंजस्य बिठाया जाए। उद्देश्यों, विधियों एवं परिणामों में सामंजस्य जरूर होना चाहिए। पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों का लचीलापन और अनौपचारिकता ऐसा संभव बनाती है कि वे पाठ्यक्रम को एच्छिक/वांछित तरीकों से पूर्ण करते हैं। विदाई ने इस विचार को प्रसिद्ध किया जब उसने यह विचार अभिव्यक्त किया कि पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों की उत्पत्ति पाठ्यक्रम में से ही होनी चाहिए तथा उनके परिणामों को पाठ्यक्रम को और अधिक मजबूत बनाना चाहिए, उदाहरण के लिए, गृह कक्ष (Homeroom) का कार्यक्रम विद्यार्थियों की सामान्य विद्यालयी परिस्थितियों तथा आवश्यकताओं पर निर्भर करता है। सभा का स्वरूप अंशतया विद्यालयी कार्यक्रम की विभिन्न अवस्थाओं में चल रहे क्रियाकलापों द्वारा निर्धारित किया जाता है। विद्यार्थी परिषद् (Student Council) का कार्य विद्यालय की प्रशासनिक नीतियों से अलग होना ष्चाहिए और उसका विद्यालय की नीतियों से सामजस्य होना चाहिए। इसे विद्यालयी कार्यों की विभिन्न अवस्थाओं को जोड़ने का प्रयास करना चाहिए परंतु इसका वास्तविक कार्य तो स्थानीय विद्यालय की परिस्थिति पर निर्भर करता है। विद्यालयी क्लबों के पास विद्यालय के निर्देशात्मक कार्यक्रम को पूर्ण करने तथा स्फूर्ति देने के सुनहरे अवसर होते हैं बल्कि ऐसा कहा जा सकता है कि पाठ्य सहगामी कार्यक्रम की बारंबारिता मुख्यतः नियमित विद्यालयी कार्यक्रम की निर्धारित सीमा के आधार पर निर्भर करती है।

पाठ्य सहगामी क्रियाकलाप को कक्षा में पाठ्यचर्यात्मक क्रियाओं के साथ सामंजस्य बनाते हुए उनमें मिल जाना चाहिए।

पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों की भावना और उससे सम्बन्धित क्रियाकलाप विद्यार्थी केंद्रित होते हैं। कक्षा भावना तथा विधियाँ अनेक विद्यालयों में परंपरागत तौर से विषयवस्तु केंद्रित होती हैं। फलतः इस बात का अत्यधिक खतरा है कि एक ही परिसर में दो विद्यालय हो जाएं एक

पाठ्यचर्या से संबन्धित तथा दूसरा पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों से संबंधित उन दोनों अवस्थाओं के प्रति विद्यार्थियों का रवैया मुख्यतः शिक्षकों के दृष्टिकोण, सिद्धांतों और उनकी विरोधाभासी दिखाई पड़ने वाली माँगों के समायोजन की क्षमता पर निर्भर करता है। विद्यार्थियों को एक एकीकृत कार्यक्रम देने के महत्व को शिक्षकों को अपने विचारों में सबसे ऊपर रखना चाहिए। विद्यालयी कार्यक्रम को वास्तव में केंद्रित होना चाहिए, हालांकि जिन क्रियाकलापों में विद्यार्थी व्यस्त रहते हैं उनमें विविधता हो सकती है।

विद्यालयी अनुभव के क्रियाकलापों की सभी अवस्थाओं में विविधता को प्रोत्साहन देना प्रशंसनीय है। दोनों कक्षा कार्यों एवं क्रियाकलापों के कार्यक्रम में विद्यार्थी-क्रियाकलापो के परंपरागत मार्गों से हटकर नई शुरुआतों के लिए शिक्षकों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

विशेष चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए। ताकि वे स्वतः प्रेरित हो सकें। ताकि नए उपायों की योजना बनाने के लिए आत्म-अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करना अनेक सार्थक इच्छाओं, उद्देश्यों तथा रुचियों जिन्हें अभी तक नहीं पहचाना गया, रचनात्मक क्रियाकलापों की संतुष्टि के लिए/आवेगों को हरकत में लाया जा सकता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं को प्रायोजित करने वाले शिक्षक को हमेशा चौकस रहना चाहिए। वरना अनुभवों की किस्म तथा विविधता के प्रति उसका उत्साह प्राप्त करने वाले मुख्य उद्देश्य से विद्यार्थियों के ध्यान को हटा देगा। वैयक्तिक भिन्नताओं का ख्याल रखना तथा वैयक्तिक रुचियों के लिए इंतजाम करने का यह अर्थ नहीं है कि विद्यार्थियों को अपने उद्देश्य कार्य विशेष जिम्मेदारी तथा गंभीरता, जो सभी लाभप्रद अनुभवों में विद्यमान होनी चाहिए उन सबसे वे मुक्त कर दिए जाते हैं।

साधारणतः पाठ्यसहगामी कार्यक्रम तथा नियमित पाठ्यचर्या के उद्देश्य समान होते हैं। गत आधी शताब्दी में शिक्षा के उद्देश्यों के विस्तार में वृद्धि करने की प्रवृत्ति रही है। पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों के पूरे कार्यक्रम की रूपरेखा सिर्फ नए उद्देश्यों को संभव बनाने के लिए ही नहीं बल्कि पहले से ही अपनाए हुए उद्देश्यों की प्राप्ति की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए भी की गई है। यद्यपि पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों का कार्यक्रम शिक्षा के नए संभावित उद्देश्यों के बारे में सुझाव तो दे सकता है पर उसकी प्राथमिक चिंता विद्यालय के लिए उचित माने जाने वाले उद्देश्यों की प्राप्ति को बढ़ाना ही होता है।

शिक्षा के मुख्य लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कार्यक्रम की संभावनाओं की पूरी प्रशंसा होनी चाहिए तथा उनका उचित लाभों के लिए पूर्ण दोहन होना चाहिए।

सामाजिक गुणों, वैयक्तिक विशेषताओं, नागारिक गुणों, विस्तृत रुचियों तथा अवकाश के समय के उचित उपयोग के विकास हेतु पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों के मूल्य पर बल देने के विषय पर चर्चाएँ करने का चलन है। इसकी कई प्रकार से व्याख्या की जा सकती है। हाल ही में पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों पर बल देना शिक्षा के समाजीकरण के प्रभावों पर बल देने की प्रवृत्ति के कारण संयोगवश हो गया था। अतः सामाजिक तथा वैयक्तिक मूल्यों पर बल देना क्रियाकलापों के कार्यक्रम का मुख्य बिन्दु रहा है क्योंकि विद्यार्थी क्रियाकलापों को एक बिना किसी निर्धारित पाठ्यक्रम के समूह उपक्रमों की तरह चलाया जाता है। उनको वैयक्तिक तथा सामाजिक गुणों के

विकास के सर्वोत्तम अवसरों के रूप में जाना जाता है। इस पर अधिक बल इस बात से मिलता रहा है कि परंपरागत तरीकों से कक्षा की शिक्षण परिकल्पना ने हमें समाजीकरण की संभावनाओं की सीमा तक अंधा बना दिया है। पुनः सामाजिक तथा वैयक्तिक परिणाम अनेक क्रियाकलापों या कार्यक्रमों के सबसे अधिक सुप्रकट निरीक्षित परिणाम है। यह विशेषतः विद्यार्थी परिषद्, सभा, गृह कक्ष तथा अनेक क्लबों के लिए शायद सही हैं। हालाँकि सामाजिक तथा वैयक्तिक विकास के अवसरों से हमें लाभ उठाना चाहिए परंतु हमें अन्य उद्देश्यों को भी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए जिन्हें विद्यार्थी क्रियाकलाप प्राप्त कर सकते हैं।

पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों का निर्देशन करते समय विद्यार्थी की वैयक्तिक भिन्नताओं को ध्यान में रखना चाहिए।

इसके पाठ्यक्रमिक क्रियाकलापों की तरह पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अनुभवों पर रुचियों, जरूरतों, क्षमताओं तथा पुरानी उपलब्धियों, सीखने की कठिनाइयों, वैयक्तिक विशेषताओं, भविष्य की योजनाओं, विद्यालय के बाहर के अनुभवों तथा वैयक्तिक समस्याओं से संबंधित वैयक्तिक भिन्नताओं के सभी पहलुओं का प्रभाव होता है। क्रियाकलापों का चयन जिसमें उसे भाग लेना होता है प्रत्येक वैयक्तिक रूप से विद्यार्थी को मुख्य चिंता होती है। कुछ विद्यार्थियों को वर्ष या अर्द्ध सत्र के लिए क्रियाकलापों के चयन में सहायता की आवश्यकता होती है, अन्य विद्यार्थी को क्रियाकलाप में भाग लेने के लिए प्रोत्साहन की जरूरत होती है कुछ अन्यों को क्रियाकलापों के वांछनीय कम से कम संख्या तक सीमित करने के लिए मार्गदर्शन की जरूरत होती है। अतः कुछ विशेष क्रियाकलापों का चयन कर रहे विद्यार्थियों में कुछ समान रुचियाँ होने की अपेक्षा की जा सकती है। इसका यह अर्थ नहीं है कि उनकी रुचियाँ पूर्णतः एक समान होंगी। रुचियों में वाजिब हद तक समानता भी अन्य तरीकों से भी अधिक एकरूपता नहीं सुनिश्चित होती।

हालाँकि पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों में पाठ्य कार्यक्रम के मुकाबले अधिक भिन्नताओं की अपेक्षा करना उचित है।

इसका प्रमुख कारण यह है कि पाठ्यचर्या के कार्य में उपलब्धि की समानता पर अधिक बल दिया गया है। चूँकि विद्यार्थियों के पास अधिकतर विद्यालयों में क्रियाकलापों के चयन के बहुत से अवसर होते हैं। इसलिए उनकी आवश्यकताओं तथा रुचियों को वैयक्तिक तौर पर पूरा करने की समस्याएँ अधिक होती हैं। विद्यार्थी के क्रियाकलापों की सम्पूरक प्रकृति इसे अवश्यंभावी बना देती है कि उन्हें व्यक्ति विशेष बनाया जाए, यदि प्रत्येक व्यक्ति के लिए अधिकतम मूल्य प्राप्त करना है तो।

विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को बिना अपवाद के पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों के कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

पाठ्य सहगामी कार्यक्रम को भी उसी नजर से देखा जाना चाहिए जैसे पाठ्यचर्या के कार्यक्रम को देखा जाता है जो कि बिना अपवाद के सभी विद्यार्थियों के लिए होता है। प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी रुचि, जरूरत तथा क्षमता के अनुसार किसी न किसी क्रियाकलाप को लेना ही

होता है। स्पष्टतः, रुचि जो क्रियाकलाप के चयन को निर्धारित करती है वहीं सबसे अधिक महत्वपूर्ण कारक होती है।

किसी भी नए पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों को सिर्फ तभी प्रारंभ करना चाहिए। जब उनकी पर्याप्त आवश्यकता तथा औचित्य महसूस हो जाए हो । विद्यार्थी क्रियाकलापों का विद्यालय में क्रियाकलापों के कार्यक्रम के प्रारंभ होने से पहले ही संभावित शिक्षण मूल्य बिल्कुल स्पष्ट होने चाहिए। प्रशासकीय नेतृत्व तथा शिक्षण कर्मचारी वर्ग के सदस्यों को विद्यार्थी क्रियाकलापों के कार्यक्रमों द्वारा दिए जा रहे शिक्षण अवसरों को एक चुनौती के रूप में लेना चाहिए। विद्यार्थियों को खुद भी विभिन्न क्रियाकलापों के लाभप्रद होने के प्रति संतुष्ट होना चाहिए इससे पहले कि ये क्रियाकलाप अधिकतम परिणाम दे पाएँ। शिक्षकों और विद्यालयी प्रमुख से इस संबंध में नेतृत्व करने की अपेक्षा करना बिल्कुल उचित है। ऐसा सुझाव दिया जाता है कि धीरे-धीरे क्रियाकलापों के कार्यक्रम के विस्तार या नए रूपों को लाते रहना चाहिए। उपक्रम के स्थायित्व का भरोसा दिलाने के लिए छोटे स्तर पर सफलता ही सर्वोत्तम अनुभव प्रदान करती है। कार्यक्रम के निरीक्षण तथा निर्देशन की समस्या इतनी ज्यादा होती है कि बड़े स्तर पर शुरू हुआ कार्यक्रम बहुत सारी समस्याएँ ला सकता है जो कि प्रायोजकों को निराश कर सकती हैं तथा इससे वे पूरे कार्यक्रम को बीच में ही समाप्त होने दे सकते हैं। लंबे कार्यक्रम की अल्प सफलता पूरे कार्यक्रम पर से विश्वास उठा सकती है। अगर कार्यक्रम का प्रबंधन निम्न हो तो दोनों विद्यार्थी एवं शिक्षक कार्यक्रम की प्रति पक्षपाती हो सकते हैं।

इसी प्रकार से किसी भी क्रियाकलाप को कार्यक्रम का हिस्सा बनाने से पहले उस क्रियाकलाप या क्लब को प्रारंभ करने के संतुष्टीदायक तथा पर्याप्त कारण होने चाहिए।

शिक्षको तथा विद्यार्थियों की पर्याप्त संख्या की नव निर्माण में रुचि होनी चाहिए तथा उनके शिक्षण मूल्यों के प्रति दृढ़ता को भी पर्याप्त रूप से मजबूत होना चाहिए ताकि उसके सफल होने का पूरा भरोसा हो जाए। गंभीर इरादों की नींव डाले बिना तथा वास्तविक उद्देश्यों के बिना क्रियाकलापों को स्वीकृति देना पूरे क्रियाकलापों के कार्यक्रम को कमजोर बना सकता है। अतः क्रियाकलापों की धीरे-धीरे प्रारंभ करना चाहिए, एक समय में एक विद्यार्थी क्रियाकलापों के व्यवसाय जैसे तरीके से चलना चाहिए तथा विद्यालयी कार्यक्रम की दूसरी अवस्थाओं की भाँति ठोस परिणामों की प्राप्ति को लक्ष्य बनाना चाहिए। शिक्षक जो क्रियाकलापों के प्रायोजक होते हैं, उन्हें जैसे-जैसे क्रियाकलाप बढ़ता है वैसे-वैसे उससे सफल परिणामों को प्राप्त करने का प्रयत्न करते रहना चाहिए। क्रियाकलापों की शुरुआती अवस्थाओं के साथ-साथ उसकी पूरी अवधि के दौरान सफलता तथा ऐच्छिक परिणाम पूरे प्रयत्न को लाभप्रद बना देते हैं।

क्रियाकलापों से पूरे किए जाने वाले उद्देश्यों के प्रकाश में ही किसी भी क्रियाकलाप का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

क्रियाकलाप की सफलता के प्रति विश्वास तथा पहले से ही स्थापित निर्धारित कोर्स के बीच फर्क अवश्य किया जाना चाहिए। निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति के प्रकाश में ही क्रियाकलाप का

मूल्यांकन किया जाना चाहिए। प्रत्येक क्रियाकलाप के संभावित मूल्य का मूल्यांकन किसी पूर्व निर्धारित विषयवस्तु के बजाय उसके अपने उद्देश्यों की प्रतिरूप में ही करना चाहिए।

किसी भी पाठ्य सहगामी क्रियाकलाप के प्रायोजक को यह भरोसा दे देना चाहिए कि उसकी वित्त व्यवस्था का सही तरीके से प्रबंधन किया जाता है तथा लेखा रखा जाता है। कुछ विद्यालयी क्रिया कलापों में किसी न किसी रूप में वित्तीय समस्याएँ होती हैं। क्रियाकलापों की सदस्यता शुल्क की सीमा आशिक तौर से इस संबंध में विद्यालय की नीतियों पर निर्भर करती है। लोकतांत्रिक सिद्धांतों अनुरूप. सदस्यता शुल्क से बचने की प्रवृत्ति होती है ताकि क्रियाकलाप के फायदों से विद्यार्थी वंचित न रह जाए। धन अन्य स्रोतों से भी प्राप्त किया सकता है जो आंशिक तौर पर क्रियाकलाप की प्रकृति पर निर्भर करता है। शायद व्यायाम संबंधी क्रियाकलापों के लिए उत्तदायी व्यक्ति पर ही वित्त के प्रबंधन की अधिकतम जिम्मेदारी होती है। कुछ क्लबों तथा शैक्षिक तथा रागीत के संगठनों के पास विभिन्न प्रकार के सार्वजनिक मनोरंजनों तथा कार्यक्रमों से धन की आमदनी के साधन प्राप्त हो सकते हैं।

एक क्रियाकलाप में वित्त के लेखांकन तथा प्रबंधन की जिम्मेदारी विशिष्ट विभागीय सलाहकार या क्रियाकलाप के प्रयोजक की होती है। इस संबंध में विद्यार्थी खंजाची रखने की योजना प्रायोजक को जिम्मेदारी से मुक्त नहीं करती है। वित्त का लेखांकन प्राप्तियों और व्ययों को दर्ज करने की साधारण बात है। इसके लिए थोड़े समय को जरूरत होती है, बाद में यह होने वाली उलझनों से बचा सकता है। दुर्भाग्य से, कुछ शिक्षक एवं मुख्याध्यापक विद्यालयी धन के कुप्रबंधन के दोषी पाए गए हैं। विद्यालय धन से संबंधित प्रश्नों के उत्तर सिर्फ सटीक से रखे गए अभिलेखों से ही दिए जा सकते हैं। अभलेख एक अच्छी व्यावसयिक प्रक्रिया का हिस्सा होते हैं, तथा यह वांछनीय है कि विद्यार्थी अपने क्रियाकलाप के इस पक्ष के महत्व को पहचानें बहुत से विद्यालयों में क्रियाकलाप के कोषों के वित्तीय लेखांकन के लिए एक केंद्रीय योजना होती है। जिसमें एक केंद्रीय अभिलेख प्रत्येक क्रियाकलाप के कोष का लेखा-जोखा रखता है। यह एक केंद्रीय अभिलेख होता है। यह नियमित अभिलेख रखने को प्रोत्साहित करता है परंतु क्रियाकलाप के प्रायोजक को जिम्मेदारी से मुक्त नहीं करता है।

आंतरिक वित्तीय लेखांकन की सुस्थापित केंद्रीय प्रणाली विभिन्न क्रियाकलापों तथा संगठनों के धन कोषों के प्रबंधन में सहायक होती है। यह खरीद को नियमित करती है तथा व्यय पर बेहतर नियंत्रण रखती है। क्रियाकलापों के लिए की गई खरीद को अपने बजट की सीमाओं के भीतर ही होना चाहिए। जहाँ आय से पहले खरीद करना अति आवश्यक हो, वहाँ खरीद के आदेशों को स्वीति देने से पहले सावधानी पूर्वक विचार एवं बुद्धिमतापूर्ण निर्णय लेना चाहिए।

पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों को विद्यार्थियों के आयु वर्ग, विकास की अवस्था तथा प्रकृति के अनुरूप ढालना चाहिए।

विकसित करने के अति उत्तम अवसर प्रदान करते हैं। किशोर बहुधा कष्टदायक रूप से अपने को कई प्रकार से ढालन की स्थिति में होते हैं। उनके विकास की गति इतनी अधिक होती है कि उनको समायोजन करने के नए नियंत्रक को जल्दी से जल्दी प्राप्त करना जरूरी हो जाता है। ढालने के समस्याएँ तब और बढ़ जाती है जब किशोरावस्था के पहुँचने से पूर्व कुछ बेमेल

(बदलाव) समायोजन हुए हों। कुछ उदाहरणों में आती हुई परिपक्वता की एकाएक अनुभूति समायोजन की समस्याएँ उत्पन्न कर देती है। यह यकायक जागृति प्रायः अभिभावकों तथा शिक्षकों के विद्यार्थियों की किशोरावस्था की ओर पहुँचते समय उचित मार्गदर्शन न दे पाने की वजह से होती है। सामान्य वृद्धि तथा परिपक्वता धीरे-धीरे होती है परंतु इसके प्रति जागरूकता बहुधा इतनी अचानक आती है कि विद्यार्थियों की कठिनाइयाँ बहुत ज्यादा बढ़ जाती हैं। ढालने से संबंधित सब किशोरों की समस्याओं की बुद्धिमतापूर्ण पहचान पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों के लिए संभावित अवसरों के सुझाव दे सकती है तथा वैयक्तिक रूप से विद्यार्थियों के प्रदर्शन की कठिनाइयों की व्याख्या कर सकती है।

किशोरों को सामाजिक सहयोग में अभ्यास की जरूरत होती है। वे अत्यंत वर्ग-जागृत तथा स्वाभाविक रूप से भाग लेने वाले होते हैं। सामाजिक आवश्यकताओं को पूरी करने के अवसरों की कमी से बहुधा गुट, गैंग तथा गुप्त संस्थाएँ बन जाती हैं। पाठ्य सहगामी क्रियाकलाप इन प्राकृतिक सामाजिक रुचियों तथा विद्यार्थियों की जरूरतों की पूरा करती हैं, और तो और वे यह सुनिश्चित करती हैं कि ऐसी रुचियों तथा जरूरतों को रचनात्मक ढंग से पूरा किया जाए जो विद्यार्थियों के हित में हों। प्राकृतिक सामाजिक इच्छाओं का उपयोग लाभदायक दृष्टिकोण योग्य आदर्श, सहनशीलता, सहानुभूति तथा वफादारी को प्रोत्साहित करने के लिए हो सकता है जिसका विद्यार्थियों के जीवन पर असर पड़ सकता है। उनकी विस्तृत जानकारी देने में विद्यालय की अधिक सार्वभौमिक जनसंख्या के हित के लिए कार्य करने में सहायता की जा सकती है। ऐसे क्रियाकलाप दिए जाने चाहिए। जो विद्यार्थियों को सामाजिक स्वींति तथा अस्वींति की शक्तियों से तथा समूह के लोकमत से सामना करवाएँ। क्रियाकलापों को विपरीत लिंग के विद्यार्थियों से मिलने तथा जुड़ने से संबंधित विनम्रता तथा परिष्कार को विकसित करना चाहिए। ये तमाम काम अकस्मात और मार्गदर्शन में किए जाते हैं जब विद्यार्थी रुचिकर और प्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण सामूहिक क्रियाकलापों में व्यस्त हो जाते हैं।

पाठ्य सहगामी कार्यक्रम का लक्ष्य विद्यार्थियों की रुचि का विस्तार तथा समग्र (Holistic) व्यक्तित्व का विकास होना चाहिए। यह आग्रह करना कि विद्यार्थी क्रियाकलापों में भाग लेने के चयन में अपनी रुचि को महत्व देते हैं, एक दुर्भाग्यपूर्ण संदेह की स्थिति में ले जा सकता है। एक प्रश्न उठता है कि कैसे एक नई रुचि को प्राप्त किया जा सकता है यदि विद्यार्थी वर्तमान के प्रत्यक्षों तक ही अपने आप को सीमित रखते हैं। विद्यार्थी-रुचि नियमित कक्षा कार्य को छोड़कर किसी भी प्रकार से पाठ्य सहगामी कार्यक्रम का एकमात्र सुरक्षित मार्गदर्शक नहीं है। रुचियों का निरीक्षण करके शिक्षण मूल्य की पहचान करनी चाहिएय परंतु इस कार्य द्वारा नई रुचियों के प्रति सजग होने की संभावना को रोकना नहीं चाहिए।

जीवन तथा आगे की शिक्षा को आधार देने के लिए उच्च विद्यालय विभिन्न रुचियाँ उत्पन्न कर सकते हैं जो विद्यार्थियों को आगे के शिक्षण अनुभवों में उनको प्रोत्साहित कर सकते हैं। इस प्रकार का परिणाम पूरे विद्यालयी कार्यक्रम के लिए एक चिंता का विषय होना चाहिए। पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों की प्रकृति विद्यार्थियों की रुचियों के विस्तार के लिए एक विचित्र रूप से उचित माध्यम बनती है। रुचियों की सीमित संख्या पर एकाग्रता, दक्षता की तथा उपलब्धि की किसी भी मात्रा के लिए आवश्यक है। यद्यपि यह याद रखा जाना चाहिए कि विशेषता कभी-कभी

व्यक्ति पर सकरा करने वाला प्रभाव भी डाल सकती है। यद्यपि दक्षता की कुछ मात्रा बहुत जरूरी है, परंतु इसकी प्राप्ति व्यक्ति को उस अनुभव के विस्तार से जो नई रुचियों सामर्थ्य के उपार्जन से होती है इसे वंचित करने की कीमत पर नहीं होनी चाहिए। उच्च विद्यालय के विद्यार्थी विकास की उस अवस्था में होते हैं जहाँ वे आगामी जीवन की नींव डाल रहे होते हैं। इस जटिल संसार में विस्तृत शिक्षण आधार की उपयुक्तता विद्यालयों को प्रत्येक अवसर को सावधानी से ध्यान देने के अति आवश्यक बना देती है जो विद्यार्थियों को ऐसे अनुभव देगा जो प्रभाव में विस्तार करने वाले होगें।

पाठ्य सहगामी कार्यक्रम को विद्यार्थियों में वांछनीय ऐच्छिक नागरिक मूल्यों एवं गुणों के विकास के अवसर देने चाहिए।

लोकतंत्रीय नागरिकता या उस लिहाज से अन्य प्रकारों की गुणवत्ताओं का सबसे अच्छा विकास छोटे, आमने-सामने के समूहों में ही हो सकता है। किसी भी प्रकार की नागरिकता के अनेक गुणों को नियमित कक्षा कार्य से ही विकसित किया जाता है। यद्यपि यह जान लेना चाहिए कि स्थान जिसे ढका जाना है तथा स्थायी लक्ष्यों की उपलब्धि शिक्षक पर ऐसा दायित्व दे देते हैं कि विद्यार्थी अनेक नागरिक गुणों के विकास के अवसर से वंचित हो सकते हैं। विद्यार्थी क्रियाकलापों की स्वतंत्रता नेतृत्व, स्वतः प्रेरणा, सदस्यता तथा जिम्मेदारी से संबंधित नगरीय गुणों को प्रोत्साहन देती है। विद्यार्थी समूह प्रक्रियाओं तथा समूह नियंत्रकों से परिचित हो जाते हैं जो लोकतंत्र के लिए अति आवश्यक होते हैं। क्रियाकलापों के कार्यक्रम इस अहसास की वृद्धि में सहायता करते हैं कि विद्यार्थी का संबंध विद्यालय के साथ एक सामाजिक इकाई के रूप में होता है। छोटे समूहों की वफादारी तथा सामान्य रुचियों का विस्तार होता है ताकि विद्यार्थी खुद को विद्यालय की रुचियों तथा उद्देश्यों के साथ जोड़ सकें। विद्यालय के प्रति वफादारी तथा आदर्शों का अनुपालन विवशता का न होकर दृढ़ विश्वास का विषय बन जाता है। विद्यालय का समुदाय रूपी स्वरूप स्पष्ट हो जाता है तथा अनेक अवसर विद्यालय तथा समुदाय के बीच करीबी संबंध तथा एकता को विकसित करने के लिए खुद को प्रस्तुत करते हैं।

प्रायोजकों को विद्यार्थी-क्रियाकलापों में लिप्त विद्यार्थियों के अंदर नागरिकता के संपूर्ण गुणों की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

हालाँकि प्रायोजकों के लिए यह जिद करना वाजिब है कि विद्यार्थी उन नागरिकता के गुणों में सुधार करें। कम-से-कम ऐसी इच्छा होनी चाहिए कि विद्यार्थी-क्रियाकलापों के कार्यक्रम को इस प्रकार चलाया जाए कि विद्यार्थी, क्रियाकलापों के माध्यम से उन नागरिकता की संकल्पना तथा आदर्शों को समझ लेते हैं जिनको शिक्षण विषय सामग्री के माध्यम से अनुभव करना कठिन हो सकता है।

5. वाणिज्य कक्ष/प्रयोगशाला का प्रबन्धन (Management of Commerce room/laboratory):

एम. पी. मफात के शब्दों में, 'आधुनिक शिक्षा में कक्षा, प्रयोगशाला का रूप ले चुकी है और कक्षा की गतिविधियों में छात्रों की सक्रियता एवं सहभागिता पर अधिक बल दिया जाता है।'

M. P. Moffatt "In modem education, the classroom has become a learning laboratory and greater emphesis is placed on student activity and participation in classroom procedures."

टी. ए. हरबर्ट ने अपनी पुस्तक वाणिज्य शिक्षा के सिद्धान्त में वाणिज्य का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा है वाणिज्य आर्थिक ढाँचे का वह पहलू है, जो व्यवसाय और औद्योगिक उत्पादन के प्रबन्ध एवं वितरण से सम्बन्धित है और इस प्रकार सम्पूर्ण आर्थिक ढाँचे का समन्वय करने वाला तत्त्व है। आज हमारा देश स्वतन्त्र है और 58 वर्षों के कार्य काल में यह अत्यन्त द्रुतगति से आर्थिक प्रगति कर रहा है। आर्थिक उत्पादन एवं निर्यात के क्षेत्र में इसने अद्वितीय प्रगति की है। कृषि व उद्योग के विकास के साथ-साथ आज वाणिज्य शिक्षा की आवश्यकता बढ़ती ही जा रही है। वाणिज्य देश की आर्थिक प्रगति का आधार है। वस्तुतः वाणिज्य शिक्षा के व्यावसायिक पक्ष पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, जिससे छात्र भविष्य में सफल व्यापारिक इन्सान बन सकें तथा रोजगार स्वयं उनके दरवाजे पर दस्तक दे आज के शिक्षा जगत में छात्रों को कई प्रकार की क्रियाओं के सम्बन्ध में जानना आवश्यक होता है। शिक्षा के उचित विकास हेतु यह आवश्यक है कि छात्र क्रियाशील होकर कार्य करें ताकि उनमें उचित कौशलों का विकास हो ।

आज वाणिज्य के क्षेत्र के अन्तर्गत समस्त आर्थिक व व्यापारिक क्रियाएँ आती हैं। वस्तुतः वाणिज्य शिक्षण में अनेक प्रकार के उपकरणों की आवश्यकता होती है किन्तु अभी हमारे माध्यमिक विद्यालयों में इसका अभाव सर्वत्र दिखलाई पड़ता है। वाणिज्य एक व्यावहारिक विषय है तथा इसके अनेक उप-विषय हैं जैसे-वाणिज्यिक भूगोल वाणिज्यिक अर्थशास्त्र, व्यापार पद्धति, बहीखाता, टंकण, आशुलिपि आदि। इनका व्यावहारिक ज्ञान छात्रों के लिए अति आवश्यक है। आधुनिक काल में शिक्षा शास्त्री क्रिया प्रधान शिक्षा पर बल देते हैं अर्थात् करके सीखने के सिद्धान्त पर अधिक बल दिया जा रहा है। छात्र को यदि पत्र फाइल करने के सिद्धान्त बता दिये जायें तो वह उपयोगी साबित नहीं हो सकते। यही बात टाइप पर भी लागू होती है। स्पष्ट है कि छात्रों में यदि उचित व्यवसायिक कुशलता विकास करना है तो हमें विज्ञान की भाँति वाणिज्य के भी पृथक्-पृथक कक्ष बनाने होंगे तथा उन्हें विभिन्न साधनों व उपकरणों से सुसज्जित करने होंगे।

वाणिज्य कक्ष के अन्तर्गत छात्रों को वाणिज्य से सम्बन्धित विभिन्न उपकरणों व साधनों के प्रयोग करने के पर्याप्त असवर उपलब्ध होंगे। वैसे विशेष कक्ष के अभाव में शिक्षक को विभिन्न उपकरण कक्षा में लाने-ले जाने पड़ते हैं। इससे समय का भी अपव्यय होता है और टूट-फूट का भी डर रहता है। विशेष कक्ष की स्थापना में इस अव्यवस्था को समाप्त किया जा सकता है।

वस्तुतः किसी विषय के शिक्षण को प्रभावपूर्ण बनाने की दृष्टि से सर्वप्रथम आवश्यक यह है कि उस विषय विशेष का सजीव तथा प्रभावी वातावरण हो। इसी प्रकार वाणिज्य को प्रभावी बनाने हेतु यह आवश्यक है कि सम्बन्धित विद्यालयों में वाणिज्य कक्ष की स्थापनाओं द्वारा छात्रों के समक्ष वाणिज्य से सम्बन्धित उपयुक्त वातावरण की रचना की जाये।

वस्तुतः वाणिज्य कक्ष के उपरण अपना विशेष शैक्षिक महत्त्व रखते हैं, हालांकि इन उपकरणों की शैक्षिक महत्ता उसके संचालन विषय के अध्यापक की योग्यता पर निर्भर करती है। वाणिज्य कक्ष से छात्रों का उचित मानसिक विकास भी होगा। इससे छात्रों की तर्क शक्ति व चिन्तन शक्ति व निर्णय शक्ति को नई दिशा प्रदान कर सकते हैं। वाणिज्य कक्ष व उसकी साधन सम्पन्नता के अभाव में वाणिज्य का शिक्षण पूरा नहीं कहा जा सकता। वाणिज्य कक्ष एक प्रकार से वाणिज्य की वास्तविक प्रयोगशाला है। वाणिज्य शिक्षण में छात्र व अध्यापक दोनों का ही दृष्टि से इसका अत्यधिक महत्त्व है।

वाणिज्य कक्ष का महत्व

(Importance of Commerce Room)

वर्तमान समय में वाणिज्य विषय की उपयोगिता अधिक हो गई है क्योंकि वाणिज्य व्यवसाय एवं औद्योगिक उत्पादन के प्रबन्ध एवं वितरण से सम्बन्धित विषय है। अतः वाणिज्य के प्रभावपूर्ण शिक्षण हेतु अलग कक्ष की आवश्यकता होती है, जिसमें वाणिज्य शिक्षक चित्र, रेखाचित्र, डायग्राम, ग्राफ आदि का अपने शिक्षण में प्रयोग करके सुरक्षित रख सकता है। इसके साथ टंकण, आशुलिपि एवं पुस्तपालन आदि का व्यावहारिक ज्ञान करा सकता है। वाणिज्य के छात्र भी इससे अधिकाधिक शान अर्जित करने में सफल हो जाते हैं। इसीलिए कहा गया है, 'वाणिज्य शिक्षण के लिए एक विशिष्ट कक्ष उतना ही आवश्यक है, जितना कि भौतिक विज्ञान और रसायन विज्ञान में कार्य हेतु एक विशेष प्रयोगशाला अथवा हस्तशिल्प के लिए एक विशिष्ट कार्यशाला।'

वाणिज्य शिक्षण को रोचक एवं प्रभावपूर्ण बनाने के लिए अन्य विज्ञानों एवं सामाजिक विज्ञानों कि तरह वाणिज्य कक्ष की आवश्यकता अनुभव की गई है क्योंकि वाणिज्य एक व्यावसायिक विषय है, जिसमें पुस्तपालन, बही खाता, टंकण, आशुलिपि, व्यापार पद्धति, वाणिज्यिक भूगोल आदि सम्मिलित हैं, जिनका व्यावहारिक ज्ञान कराना वर्तमान समय में नितान्त आवश्यक है।

अलग वाणिज्य कक्ष विषय के लिए अनुकूल वातावरण सृजित करता है क्योंकि वाणिज्य कक्ष में विषय से सम्बन्धित समस्त सामग्री उपलब्ध रहती है, जिसके लिए वाणिज्य शिक्षक को अलग से परिश्रम नहीं करना पड़ता है और छात्र भी वाणिज्य कक्ष के वातावरण से प्रभावित होते हैं। कक्ष में वाणिज्य शिक्षक द्वारा प्रदत्त व्यावहारिक ज्ञान को छात्र सहजता से आत्मसात कर लेते हैं। इस प्रकार छात्रों द्वारा अर्जित व्यावहारिक ज्ञान स्थायी होता है।

6. समुदाय संसाधनों का प्रबन्धन और उद्योग-विद्यालय सम्बन्ध (Management of Community resources and industry-school linkages):

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। इससे बालक का समाजीकरण होता है और बालक समाज का सक्रिय सदस्य बनता है। इसके लिए बालक को पैसों के दैनिक लेन-देनों, दैनिक उपयोग की वस्तुओं के क्रय-विक्रय, बैंकों से रु. निकालने एवं जमा करने, विद्युत बिल, टेलीफोन एवं मोबाइल

बिल आदि जमा करने, डाकघर से टिकट, मनी आर्डर, पोस्टल आर्डर खरीदने एवं स्पीड पोस्ट/रजिस्ट्री करने आदि का व्यावहारिक ज्ञान कराया जाता है। यह ज्ञान जितनी सरलता समुदाय विशेष की स्थिति और उसकी उपलब्धियों के प्रत्यक्ष निरीक्षण तथा उसकी विविध वाणिज्यिक संस्थाओं एवं संगठनों में सक्रिय भाग लेने से प्राप्त किया जा सकता है, उतना अन्य किसी संसाधनों से नहीं। वाणिज्य शिक्षण में इन स्थानीय संसाधनों का उपयोग (Utilization of Local Resouces) किया जा सकता है और छात्रों को वाणिज्य का यथार्थ एवं व्यावहारिक ज्ञान कराया जा सकता है।

स्थानीय संसाधनों का अर्थ (Meaning of Local Resources):

स्थानीय संसाधनों से अभिप्राय उन सभी वाणिज्यिक वस्तुओं, स्थानों, संस्थानों, क्रिया-कलापों से है, जो किसी स्थान विशेष से सम्बन्धित होते हैं। इन संसाधनों के उपयोग से वाणिज्य के छात्र वास्तविक जीवन के विषय में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। शिक्षा शब्दकोश में स्थानीय संसाधन के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है, ''स्थानीय संसाधन शिक्षा की यथार्थ केन्द्रित अवधारणा है, जो यह मानता है कि शैक्षिक कार्यक्रम में सीखने की प्रक्रिया को सामुदायिक संसाधनों के उपयोग द्वारा सजीवता प्रदान की जाती है, कोई सामुदायिक संस्था, व्यक्ति विशेष, संगठन, सीमा चिन्ह अथवा सामग्री को संसाधन के रूप में माना जा सकता है, यदि इसे छात्रों के सामाजिक अवबोध की वृद्धि में उपयोग किया जाता है।''

प्रमुख स्थानीय संसाधन (Famous Local Resources):

वाणिज्य शिक्षण में उपयोग किये जाने वाले प्रमुख स्थानीय संसाधन निम्नलिखित हैं:

1. वाणिज्य संग्रहालय (Commerce Museum):

वाणिज्य संग्रहालय का वाणिज्य-शिक्षण के स्थानीय संसाधनों में सर्वाधिक उपयोग किया जाता है क्योंकि इसमें विविध प्रकार की वाणिज्यिक सामग्री जैसे-कच्चे माल के नमूनें, निर्मित उत्पादों के भाग और तैयार वस्तुएं तथा व्यावसायिक कार्यालयों और भण्डार-गृहों में प्रयुक्त साधन सामग्री एवं व्यावसायिक आवेदन पत्रों, व्यावसायिक पत्रों और विज्ञापनों के नमूनें आदि संकलित रहते हैं, जिनका प्रयोग वाणिज्य शिक्षण में किया जा सकता है अथवा वाणिज्य के चक्र में वाणिज्य - शिक्षक छात्रों को संग्रहालय में ले जाकर वाणिज्यिक वस्तुओं को दिखा सकता है और उनकी वाणिज्यिक विशेषताओं की जानकारी करा सकता है।

2. औद्योगिक केन्द्र (Industrial Centres):

वाणिज्य शिक्षण के स्थानीय संसाधनों में औद्योगिक केन्द्रों का विशेष महत्व है क्योंकि उद्योग ही अर्थव्यवस्था की रीड़ हैं। वाणिज्य - शिक्षक छात्रों को कक्षा में इन उद्योगों से सम्बन्धित जानकारी करा सकता है और व्यावहारिक ज्ञान के लिए इनके प्रत्यक्ष निरीक्षण हेतु औद्योगिक क्षेत्र-यात्राओं का आयोजन करके उन्हें अवसर प्रदान कर सकता है। वाणिज्य–शिक्षक अपने छात्रों

को औद्योगिक क्षेत्रों में ले जाकर किसी औद्योगिक प्लांट, व्यापार संस्था आदि की यान्त्रिक क्रिया प्रणाली, उपकरण, उत्पाद तथा कार्य की दशाएं आदि का निरीक्षण कराकर व्यावहारिक ज्ञान प्रदान कर सकता है।

3. वाणिज्यिक संस्थायें (Commercial Institutions):

वाणिज्यि-शिक्षण के स्थानीय संसाधनों में वाणिज्यिक संस्थाओं का विशेष उपयोग होता है। वाणिज्यिक संस्थाओं के अन्तर्गत बैंक, डाकघर, जीवन बीमा निगम आदि आते हैं। इनसे ही स्थानीय वानिन्त्रिक कार्य संचालित होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के व्यावहारिक जीवन में इनसे सदैव कार्य पड़ता रहता है। छात्रों को वाणिज्य की कक्षा में पुस्तकों द्वारा इनकी कार्य प्रणाली के विषय में व्यावहारिक जानकारी कराना सम्भव नहीं है। इसके लिए वासिन्द के छात्रों को इस संस्थानों में ले जाकर प्रत्यक्ष निरीक्षण द्वारा समुचित जानकारी करायी जा सकती है और वासिन्द के छात्रों का ज्ञानवर्द्धन किया जा सकता है।

4. सार्वजनिक सेवा संस्थायें (Public Service Institutions):

स्थानीय संसाधनों के अन्तर्गत सार्वजनिक सेवा संस्थाओं का उपयोग भी वाणिज्य शिक्षण में किया जा सकता है। इसके अन्तर्गत अस्पताल, तार घर, जलकल संस्थान, विद्युत गृह आदि आते हैं। आज प्रत्येक व्यक्ति इन पर निर्भर है। दैनिक जीवन में सफलतापूर्वक निर्वाह के लिए इनकी व्यावहारिक जानकारी होना नितान्त आवश्यक है ताकि वे भावी जीवन में उनका विधिवत उपयोग कर सको अतः वाणिज्य शिक्षक को अपने छात्रों को उन संस्थाओं में ले जाकर प्रत्यक्ष निरीक्षण कराना चाहिए और यथा सम्भव उनकी कार्य प्रणाली में सहभागी बनाकर यथार्थ ज्ञान कराना चाहिए।

5. संसाधन व्यक्ति (Resource Person) -

"A School is and ought to be a reflection of the life of the community- The Public School in India must therefore be brought nearer to the pattern of Indian life-" -Humayun Kabir

साधारण बोलचाल की भाषा में 'समुदाय' व्यक्तियों का एक ऐसा साधन है जो लकर सामान्य उद्देश्यों की प्राप्ति तथा सामान्य जीवन व्यतीत करने के लिए एक निश्चित भू-भाग में रहते हैं। अतः समुदाय के निर्माण के लिए सामान्य हित निश्चित भाग, सामान्य जीवन-स्तर तथा एकता की भावना का होना अनिवार्य है। वस्तुतः समुदाय अति विस्तृत और व्यापक शब्द है। इसमें विभिन्न प्रकार के सामाजिक समूहों समावेश होता हैय उदाहरणार्थ-परिवार, धार्मिक संघ, जाति, पड़ोस, नगर, राज्य राष्ट्र - समुदाय के विभिन्न रूप हैं। सभ्यता एवं विज्ञान की प्रगति ने विश्व के लोगों एक-दूसरे के अधिक निकट ला दिया है। आज हम विश्व-समुदाय की धारणा को व्यावहारिक रूप प्रदान करने लिए प्रयत्नशील हैं। अतः समुदाय में एक वर्ग मील से कम का क्षेत्र भी हो सकता है। यह क्षेत्र या घेरा इस बात पर निर्भर करता इसके सदस्यों में आर्थिक, सांस्कृतिक तथा

राजनीतिक समानताएँ हों। समुदाय के अर्थ को स्पष्ट करते हुए ब्राउनैल ने लिखा है- 'समुदाय से मेरा अभिप्राय उस छोटे से है, जिसमें विभिन्न प्रकार के व्यक्ति-युवक और वृद्ध, पुरुष और स्त्री– विभिन्न लताओं और योग्यताओं से युक्त, सजातीय पड़ोसियों के समान एक साथ मिलकर हैं। यह एक प्राथमिक समूह है जिसमें जीवन के अनेक कार्य दूसरे के सहयोग से किए जाते हैं।'

विद्यालय और समुदाय की बीच सम्बन्ध (Relationship Between School and Community):

विद्यालय तथा समुदाय के बीच घनिष्ट सम्बन्ध है। ये दोनों अपनी-अपनी उन्नति एवं स्थायित्व के लिए एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं। विद्यालय एक सामाजिक संस्था है। समाज स्वयं को जीवित रखने के लिए विभिन्न प्रकार की शिक्षा संस्थाओं की स्थापना करता है जिनके द्वारा समाज के विचारों, मान्यताओं, आदर्शों, क्रिया-कलापों, मानदण्डों तथा परम्पराओं को आने वाली सन्तति को प्रदान किया जा सके। विद्यालय, समुदाय के जीवन एवं उसकी प्रगति पर बहुत प्रभाव डालता है। विद्यालय अपने विचारों एवं कार्यों द्वारा समुदाय का पथ-प्रदर्शन करके उसे प्रगति की ओर ले जाता है। समुदाय विद्यालय को जीवन की वास्तविक परिस्थितियों का प्राथमिक ज्ञान प्रदान करता है। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे को सहायता प्रदान करते रहते हैं। इन दोनों की घनिष्ठता को स्पष्ट करते हुए हुमायूँ कबीर ने लिखा है- ''विद्यालय, समुदाय के जीवन का प्रतिबिम्ब है और उसे ऐसा होना भी चाहिए। अतः भारत में सार्वजनिक विद्यालयों को भारतीय जीवन के ढाँचे के अधिक निकट लाया जाना चाहिए।''

विद्यालय : सामुदायिक केन्द्र के रूप में (**School As a Community Centre**):

वस्तुतः शिक्षा एक सामाजिक समस्या है और समाज विद्यालय को यह कार्य सौंपता है कि वह युवकों का प्रशिक्षण तथा उनका पालन-पोषण इस ढंग से करे कि समाज के जिस समुदाय से वे सम्बन्ध रखते हैं उनके जीवन में वे प्रभावी ढंग से भाग ले सकें। स्वतः ही यह प्रश्न उठता है कि विद्यालय को ही यह कार्य क्यों सौपा जाता है। इसके उत्तर में निम्नलिखित तथ्य प्रस्तुत किये जा सकते हैं

(1) बालकों को सामाजिक परम्पराएँ उसी प्रकार उत्तराधिकार में प्राप्त नहीं हैं, जैसे उन्हें अपने पिता की सम्पत्ति तथा जन्मजात क्षमताएँ मिल जाती हैं।

(2) बालकों को समाज की सांस्कृतिक विरासत जन्म के साथ नहीं मिलती वरन उसे सीखना पड़ता है। उपर्युक्त कारणों की वजह से उनको पुस्तकों, कार्य तथा सामाजिक सम्पर्को से इस सामाजिक विरासत को सीखना पड़ता है। यदि बालकों को सामाजिक विरासत एवं सामाजिक निधि से अलग रखा गया तो उनके समस्त प्रयास निष्फल होंगे। साथ ही वे अन्धकार में भटकते रहेंगे। इस कारण मानव के संचित अनुभवों का करने का कार्य विद्यालय को सौंपा गया। प्रदान विद्यालय अपने उक्त कर्तृतव्य का निर्वाह तभी कर सकता है। जब उसका बाह्य समाज के जीवन से सजीव सम्बन्ध हो। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि विद्यालय के बाहर के जीवन के साथ स्कूल का सजीव सम्बन्ध होना आवश्यक है। साथ ही वह वर्तमान वास्तविकताओं से बालकों को अवगत कराये। परन्तु भारतीय विद्यालय जीवन से पूर्णतः पृथक रहकर शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। आज भारतीय विद्यालय

का जीवन की ठोस परिस्थितियों से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस कारण भारतीय विद्यालय सामुदायिक की प्रगति एवं सुधार के लिए कोई कार्य नहीं कर रहे हैं। यदि विव अपने इस कार्य को पूर्ण करना है तो उसे वृहत् समुदाय में एक छोटा होगा। विद्यालय को एक छोटा समुदाय बनाने के लिए स्वयं को सामुदायिक केन्द्र के रूप में कार्य करना पड़ेगा। विद्यालय को सामुदायिक जीवन के लिए निम्नांकित उपायों को काम में लाया जा सकता हैं।

(अ) समुदाय को विद्यालय के निकट लाना। (ब) विद्यालय को समुदाय के निकट ले जाना।

(अ) समुदाय को विद्यालय के निकट लाना- समुदाय को विद्यालय निम्नलिखित उपायों को अपना कर लाया जा सकता है

(1) समुदाय के सदस्यों को आमन्त्रित करना- विद्यालय, सामुदायिक विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाले लोगों को आमन्त्रित करेः उदाहरणार्थ- वह कार्यकर्ता, डॉक्टर, किसान, वकील, सम्पादक, सौदागर, व्यापारी आदि को ल करे। ये लोग अपने व्यवसायों तथा अन्य सामाजिक तथ्यों पर प्रकाश डालकर को सामुदायिक जीवन की ठोस परिस्थितियों के बारे में प्राथमिक ज्ञान प्रदान हैं। किसान ग्रामीण जीवन की समस्याओं को समझाने में सहायता प्रदान कर है। डाक्टर अपने व्यवसाय से सम्बन्धित तथ्यों एवं उसकी समस्याओं से अवगत कर सकता है। इसी प्रकार विभिन्न पेशों से सम्बन्धित व्यक्ति अपने-अपने व्यवसायों के को में छात्रों को वास्तविक एवं प्रत्यक्ष ज्ञान से अवगत करा सकते हैं। सामाजिक कार्य छात्रों की नागरिक समस्याओं में रुचि जाग्रत कर सकते हैं। औद्योगिक क्षेत्रों से वाले व्यक्ति छात्रों को औद्योगिक समस्याओं का ज्ञान प्रदान कर सकते हैं। इस प्रकार सामुदायिक जीवन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला जा सकता है।

(2) अभिभावक-शिक्षक संघ- समुदाय को विद्यालय में लाने के लिए अभिभावक शिक्षक संघ महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। छात्रों के माता-पिता को शिक्षण कार्य में निम्नलिखित प्रकार से सम्बद्ध किया जा सकता है

(i) जो प्रकरण या इकाई स्थानीय समुदाय से सम्बन्धित हों, उनके प्रतिपादन के समय अभिभावकों को विद्यालय में बुलाया जाय। अभिभावक छात्रों के समक्ष प्रकरण से सम्बन्धित स्थानीय तथ्यों को प्रस्तुत करें।

(ii) विद्यालय शिक्षण के सम्बन्ध में अभिभावकों से प्रश्नावली (Questionnaire) के माध्यम से सूचनाएँ प्राप्त कर सकता है।

(3) फिल्म-शो व प्रदर्शनियों- फिल्मों के माध्यम से समुदाय को विद्यालय के निकट लाया जा सकता है। विभिन्न कार्यों में संलग्न व्यक्तियों की फिल्मों के माध्यम से समुदाय के सम्बन्ध में उपयोगी एवं

महत्वपूर्ण ज्ञान प्रदान किया जा सकता है। विद्यालय प्रदर्शनियों का आयोजन करके समुदाय को अपनी ओर ओंष्ट कर सकता है और उसका सहयोग प्राप्त कर सकता है।

(4) मेलों, उत्सवों आदि का मनाना-विद्यालय में विभिन्न स्थानीय मेलो उत्सवो एवं त्यौहारों को मनाकर समुदाय को विद्यालय के निकट लाया जा सकता है। इनमें भाग लेने तथा देखने के लिए स्थानीय समुदाय को आमन्त्रित किया जाय। इससे विद्यालय तथा समुदाय एक-दूसरे के निकट सम्पर्क में आ सकेंगे।

(5) सामुदायिक जीवन की विभिन्न क्रियाओं का संगठन-समुदाय को विद्यालय के निकट लाने के लिए विद्यालय में सामुदायिक जीवन की विभिन्न क्रियाओं का आयोजन किया जाय। इनके आयोजन से छात्र सामुदायिक जीवन के विभिन्न पक्षों के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इनके आयोजन एवं संचालन में समुदाय के लोगों का सहयोग प्राप्त किया जाय। इस प्रकार समुदाय और विद्यालय के बीच निकट सम्पर्क स्थापित हो सकेगा।

(6) सामुदायिक समस्याओं का समाधान-विद्यालय जिस समुदाय में स्थित है उसे उस समुदाय की विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए कार्य करना चाहिए। इन सामुदायिक समस्याओं के समाधान से छात्र सामुदायिक जीवन की ठोस परिस्थितियों का ज्ञान प्रदान करने में समर्थ हो सकेंगे, उदाहरणार्थ- यदि विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है तो उसे उसकी अमुक समस्याओं की ओर ध्यान देना चाहिए-सफाई की समस्या, स्वास्थ्य की समस्या, कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिये क्या करना चाहिए? लघु उद्योगों की स्थिति को किस प्रकार सुधारा जा सकता है? बाजार की समस्या किस प्रकार सुलझाया जा सकता है? आदि।

(7) प्रौढ़-शिक्षा का केन्द्र-विद्यालय जिस समुदाय में स्थित है, उसके अशिक्षित प्रौढ़ों को साक्षर बनाने के लिए विद्यालय को प्रौढ़ शिक्षा का केन्द्र बनाया जाय वह विद्यालय समय के उपरान्त प्रौढ़ों को शिक्षित करने की व्यवस्था करे। इस व्यवस्था से एक तो वे साक्षर हो जायेंगे, दूसरे वे अपने अनुभवों से छात्रों को अवगत कराने में समर्थ होंगे। इस प्रकार से विद्यालय तथा समुदाय एक-दूसरे के निकट आ सकेंगे।

(ब) विद्यालय को समुदाय के निकट ले जाना- विद्यालय को समुदाय के निकट ले जाने के लिए निम्नांकित उपायों को काम में लाया जा सकता है।

(1) साक्षात्कार- प्रत्यक्ष ज्ञान की प्राप्ति के लिए साक्षात्कार आधार का कार्य करते हैं। छात्र समुदाय के विभिन्न लोगों से साक्षात्कार करके समुदाय के बारे में विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही समुदाय के बहुत से लोग उनको प्रकाशित साहित्य तथा श्रव्य-दृश्य सामग्री प्रदान करके महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ प्रदान कर सकते हैं।

(2) सामाजिक सर्वेक्षण- क्लबों का संगठन-सैयदेन के अनुसार विद्यालय को सामाजिक सर्वेक्षण-क्लबों का संगठन करना चाहिए, जो अपने आस-पास के सामुदायिक जीवन की कुछ तात्कालिक आवश्यकताओं तथा समस्याओं के बारे में छानबीन करने का काम करेय उदाहरणार्थ-सड़कों की दशा, नगर या ग्राम में गन्दे पानी की नालियों की व्यवस्था, आस-पास के क्षेत्रों में स्वास्थ्य तथा सफाई से सम्बन्धित परिस्थितियाँ. रोग फैलने के स्रोत, उस क्षेत्र के मुख्य उद्योग एवं व्यवसाय आदि। इस प्रकार की प्रत्येक छानबीन का कार्य ऐसे छात्रों की एक छोटी टोली को, जो उस समस्या में रुचि रखते हों, सौंपा जाय। इस दल को शिक्षक के निर्देशन में कार्य करना चाहिए। अन्त में दल को एक रिपोर्ट भी तैयार करनी चाहिए जिसमें उनके द्वारा दिये जाने वाले सुझाव भी शामिल हों। इस प्रतिवेदन को प्रधानाचार्य माध्यम से स्थानीय स्वशासन की संस्था के प्रधान के पास भेजा जाय। इस प्रकार के सर्वेक्षण-क्लबों के छात्रों को अपने स्थानीय समुदाय का प्रत्यक्ष एवं मौलिक ज्ञान प्राप्त हो जायेगा।

(3) समाज सेवा संघों का निर्माण- सैयदेन के अनुसार हमें यह जान लेना काफी नहीं है कि हमारे चारों ओर के वातावरण में क्या दोष है। हमें दोषों को दूर करने में अपनी शक्ति का प्रयोग करना चाहिए। अतः विद्यालयों में समाज सेवा संघा का निर्माण करना चाहिए जिससे वे आवश्यकता पड़ने पर अपनी सेवाएं समुदाय के लिए अर्पित कर सकें। ये संघ बाढ़ के समय, महामारी फैल जाने पर या किसी उत्सव या जुलूस के अवसर या इसी प्रकार के किसी अन्य अवसर पर, जहाँ अनुशासित ढंग से कार्य करने की आवश्यकता हो, आस-पास के लोगों की सहायता करेंगे। ये संघ पुस्तकें तथा छात्रवृत्तियाँ देकर गरीब और जरूरतमन्द छात्रों की सहायता करने भी काम कर सकते हैं।

(4) समाज-सेवा सप्ताहों का आयोजन- विद्यालय को समुदाय में जाने के लिए समाज-सेवा सप्ताहों का आयोजन करना चाहिएय उदाहरणार्थ- श्रमदान सप्ताह ग्रामोद्धार सप्ताह, स्वच्छता सप्ताह, साक्षरता सप्ताह आदि। इन अवसरों पर शिक्षकों तथा छात्रों को शहर तथा ग्रामों में जाकर श्रमदान, ग्रामीणों की उन्नति, सफाई तथा निरक्षरों को साक्षर बनाने के लिए कार्य करना चाहिए।

(5) सामाजिक शिक्षा की व्यवस्था विद्यालय को नगरों या ग्रामों में जाकर शिक्षाप्रद सांस्कृतिक कार्यक्रमों, नाटक, भजन, कीर्तन आदि की व्यवस्था करनी चाहिए। इससे विद्यालय समुदाय की संस्कृति से अवगत हो सकेगा।

(6) क्षेत्र पर्यटन क्षेत्र पर्यटनों (Field Trips) के माध्यम से छात्रों को समुदाय में ले जाया जा सकता है। पर्यटन का उद्देश्य मन बहलाव के लिए विद्यालय के बाहर जाना नहीं होना चाहिए, वरन् विषय का स्पष्टीकरण या समस्या का समाधान खोजना होना चाहिए। पर्यटनों के माध्यम से छात्र स्थानीय परिस्थितियों का प्रत्यक्ष रूप से निरीक्षण कर सकेंगे।

उपर्युक्त उपायों को काम में लाकर विद्यालय को सामुदायिक जीवन के केन्द्र में परिवर्तित किया जा सकता है जहाँ से ज्ञान की ज्योति प्रसारित होगी और सुधार का आन्दोलन फैलेगा। अन्त में हम एम. पी. मुफात के शब्दों में कह सकते है 'माध्यमिक विद्यालय एक प्रमुख सामाजिक साधन

है और वह समुदाय के भविष्य के निर्धारण में महत्त्वपूर्ण कार्य करेगा। सुविज्ञ एवं क्रियाशील जनता विद्यालय तथा समुदाय दोनों की आवश्यकताओं एवं समस्याओं को हल करने में सहायता दे सकती है।'

सामुदायिक साधनों का उपयोग
(Utilization of Community Resources)

प्रत्येक विद्यालय को अपने आस-पास के समुदाय के सभी साधनों के उपयोग के लिए कार्य करना चाहिए। समुदाय के शैक्षिक महत्त्व को स्पष्ट करते हुए जॉन यू. माइकेलिस ने लिखा है- 'समुदाय जीवन यापन के विभिन्न दंगों के विषय में प्रत्यक्ष ज्ञान प्रदान करने के लिए बालक की प्रयोगशाला है। समुदाय में बालक भूगोल, इतिहास यातायात, सन्देशवाहन, शासन तथा जीवन के अन्य पक्षों के सम्बन्ध में धारणाएँ विकसित कर सकता है।' विद्यालय को छात्रों में उक्त से सम्बन्धित धारणाओं के विकास के लिए समुदाय के निम्नलिखित प्रमुख साधनों का उपयोग करना चाहिए-

(1) प्रशासकीय संस्थाएँ- इसके अन्तर्गत वे संस्थाएँ एवं विभाग आते हैं जिनके स्थानीय प्रशासन सम्बन्धी कार्य किए जाते हैं, उदाहरणार्थ-ग्राम-पंचागत नगरपालिका, जिला पंचायत आदि। छात्रों को इन संस्थाओं की कार्यप्रणाली का द्वारा वास्तविक ज्ञान देने के लिए वहाँ ले जाया जाए। बालक निरीक्षण एवं अवलोकन द्वारा इनके विषय में प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करेंगे। इस प्रकार प्राप्त किया हुआ ज्ञान अधिक स्थायी एवं उपयोगी होगा।

(2) सार्वजनिक सेवा संस्थाएँ- समाज-सेवा में सतत् क्रियाशील पोस्ट ऑफिस, अस्पताल, टेलीग्राफ ऑफिस, बैंक, जल एवं विद्युत विभाग आदि संस्थाओं के कार्य संचालन का प्रत्यक्ष ज्ञान कराकर छात्रों के ज्ञान को व्यावहारिक बनाया जा सकता है।

(3) विभिन्न प्रकार के उद्योग केन्द्र प्रत्येक समुदाय का अपना स्थानीय उद्योग एवं कला- कौशल केन्द्र होता है। जब कब छात्रों को उनका निरीक्षण करने का अवसर नहीं दिया जायेगा तब तक उनका ज्ञान अपूर्ण बना रहेगा। अतः बालकों को स्थानीय समाज के कुटीर उद्योगों तथा अन्य बड़े-बड़े औद्योगिक केन्द्रों को दिखाना चाहिए। इन स्थानों को दिखाने के लिए विभिन्न यात्राओं का आयोजन किया जा सकता है।

(4) स्थानीय भौगोलिक वातावरण एवं प्राकृतिक साधन- प्रत्येक समाज अपने भौगोलिक एवं प्राकृतिक वातावरण से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। स्थानीय नदियों, झीलों, पर्वतों एवं धरातल के विषय में जानकारी करने के लिए शैक्षिक यात्राएँ आयोजित करना आवश्यक है जिससे विद्यार्थी यह जान सके कि किस प्रकार प्राकृतिक साधनों का अधिकाधिक उपयोग किया जाय, जिससे समाज लाभान्वित हो।

(5) ऐतिहासिक स्थान- जहाँ विद्यालय स्थित है, यदि उस क्षेत्र में कोई ऐतिहासिक इमारत आदि हो तो बालकों को उसे अवश्य दिखाया जाय। इस प्रकार दिया हुआ ज्ञान बालकों के मस्तिष्क में स्थायी रहेगा और बालक सीखने में रुचि लेंगे तथा सूक्ष्म बातों को समझने में भी समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त बालकों को इस बात का ज्ञान भी हो जायेगा कि उनके स्थानीय क्षेत्र ने राष्ट्रीय इतिहास के लिये क्या देन प्रदान की है। स्थानीय ऐतिहासिक स्थानों के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों के ऐतिहासिक स्थानों को भी यथासम्भव दिखाने के लिए शैक्षिक यात्राओं को आयोजित करना चाहिए।

(6) संग्रहालय- संग्रहालय में समाज के अतीत एवं वर्तमान का प्रत्यक्ष दिग्दर्शन होता है। छात्रों को समाज के परिवर्तित होते हुए स्वरूप से परिचित कराने के लिए संग्रहालय का निरीक्षण करना अति आवश्यक है। वहीं ले जाकर बालकों को विभिन प्रकार की कलाओं में भिन्न-भिन्न नमूनों एवं उनकी विशेषताओं का ज्ञान कराया जा सकता है तथा उनका तुलनात्मक अध्ययन करके उनके विषय में विस्तृत ज्ञान प्रदान किया जा सकता है। इनके निरीक्षण से बालकों में अपने राष्ट्र की श्रेष्ठतम कलोंतियाँ एवं अन्य महत्वपूर्ण वस्तुओं के लिए गौरव की भावना उत्पन्न की जा सकती है।

(7) विशिष्ट व्यक्तियों एवं विशेषज्ञों के व्याख्यान एवं प्रयोगात्मक प्रदर्शन- समाज के आदर्शों, सिद्धान्तों एवं विचारधाराओं को अवगत कराने के लिए विशिष्ट व्यक्तियों एवं जन नायकों के व्याख्यान सुनने के अवसर प्रदान किये जा सकते हैं। विशिष्ट वैज्ञानिकों एवं कलाकारों के प्रयोगात्मक प्रदर्शन द्वारा विद्यार्थियों के ज्ञान को सारगर्मित बनाया जा सकता है।

(8) सामाजिक संस्थाएँ- इसके अन्तर्गत वे संस्थाएँ आती है जो समाज के ढाँचे के निर्माण में सहायक होती है, उदाहरणार्थ-परिवार, विवाह, सम्पत्ति, सामाजिक रीति-रिवाज एवं परम्पराएँ। छात्रों को इन संस्थाओं को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने के लिए उन्हें समुदाय में ले जाना चाहिये। वहाँ वे यह जानने में समर्थ होंगे कि हमारे समुदाय में पितृ-प्रधान या मातृ-प्रधान के परिवारों का प्रचलन है या संयुक्त परिवार प्रथा या व्यक्तिगत परिवार प्रथा को ग्रहण किया जा रहा है। साथ ही वे यह जान जायेंगे कि समुदाय में विवाह की कौन-कौन-सी पद्धतियाँ प्रचलित हैं।

उपर्युक्त साधनों का उपयोग करके विद्यालय कक्षा शिक्षण को सजीव बना सकत है। अतः प्रत्येक विद्यालय को इन साधनों का अधिकतम उपयोग करना चाहिये।

उद्योग-विद्यालय सम्बन्ध

Industry-school linkages:

वर्तमान वाणिज्य पाठ्यक्रम को उद्योग के लिए कम उपयोगी पाया गया है। इसे और अधिक उपयोगी बनाने के लिए यह सुझाव दिया जाता है कि छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान से अवगत कराया जाना चाहिए, (क) उन्हें परियोजना कार्य में संलग्न करके, या उद्योग के साथ लगाव, और

(ख) क्षेत्र के दौरे के माध्यम से उद्योग के साथ बातचीत स्थापित करना, शिक्षण में पेशेवरों को शामिल करना और उद्योग विशेषज्ञों/सफल उद्यमियों द्वारा व्याख्यान आयोजित करना।

आमतौर पर यह माना जाता था कि वर्तमान पाठ्यक्रम वाणिज्य के छात्रों को कौशल विकास के कम अवसर प्रदान करता है, परिणामस्वरूप, उच्च माध्यमिक पाठ्यक्रम के पास केवल व्यवसाय और व्यापार के विभिन्न पहलुओं की सैद्धांतिक या वैचारिक पृष्ठभूमि होती है। जब व्यावहारिक ज्ञान की बात आती है, जब उन्हें किसी गतिविधि को करने के लिए कहा जाता है, तो परिणाम खराब होते हैं क्योंकि उनमें आवश्यक कौशल विकसित नहीं होते हैं। यह एक सामान्य स्थिति है, जो उद्योग के साथ-साथ सेवाओं के उपयोगकर्ताओं द्वारा छात्रों की स्वीकार्यता को प्रभावित करती है। उद्योग ऐसे कुशल लोगों की तलाश करता है जिनके पास विभिन्न वाणिज्य संबंधी गतिविधियों का व्यावहारिक अनुभव हो और जिनके पास संचार कौशल, समस्या समाधान कौशल आदि जैसे सामान्य कौशल हों। चूंकि वर्तमान पाठ्यक्रम कौशल विकास के कम अवसर प्रदान करता है, इसलिए स्थिति को सुधारने की आवश्यकता को दृढ़ता से महसूस किया गया है। .

इस संबंध में स्थिति में सुधार के लिए प्राप्त विभिन्न सुझावों में क्षेत्र का दौरा आयोजित करना, छात्रों के नौकरी प्रशिक्षण पर, बुनियादी सुविधाओं में सुधार और स्कूलों में वाणिज्य प्रयोगशालाओं की स्थापना के प्रावधान शामिल हैं।

वाणिज्य पाठ्यक्रम को उद्योग के लिए प्रासंगिक बनाने और इसकी स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए किसी भी गंभीर प्रयास के लिए स्कूल और उद्योग के बीच संबंधों को मजबूत करने की आवश्यकता होगी। इस संबंध में प्रतिक्रिया देने वाले हितधारकों से विभिन्न सुझाव प्राप्त हुए हैं। इनकी चर्चा इस प्रकार है।

सबसे पहले, यह दृढ़ता से महसूस किया जाता है कि व्यावसायिक उद्यमों, वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों आदि के लिए क्षेत्रीय दौरे आयोजित करने से छात्रों को व्यवसाय के वास्तविक कार्य से अवगत कराने में बहुत मदद मिलेगी। उदाहरण के लिए, छात्र को एक कारखाने में ले जाया जा सकता है और दिखाया जा सकता है कि माल कैसे बनाया या पैक किया जा रहा है। इससे उन्हें विभिन्न प्रक्रियाओं का एक वास्तविक अनुभव मिलेगा और कक्षा में जो पढ़ाया जा रहा है उससे एक अवसर या संबंधित होगा। विषय में उनकी रुचि बनाए रखने और उन्हें नियोक्ताओं के साथ-साथ सामान्य रूप से समाज के लिए उपयोगी बनाने के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है। दूसरा, यह सुझाव दिया जाता है कि गर्मी की छुट्टियों (या कुछ अन्य छुट्टियों) के दौरान तीन से चार सप्ताह की अवधि के लिए औद्योगिक इंटर्नशिप छात्रों को वास्तव में एक कार्यालय या क्षेत्र के वातावरण में काम करने का अवसर प्रदान करने में काफी मददगार होगी। तीसरा, छात्रों को अध्ययन के विषय से संबंधित कुछ परियोजना कार्य सौंपा जा सकता है। मान लीजिए कि मार्केटिंग पर अध्याय पढ़ाते समय, छात्रों को अपने स्थानीय बाजार में जाने के लिए कहा जा सकता है और पता लगाया जा सकता है कि खुदरा आउटलेट में टूथपेस्ट या टॉयलेट साबुन जैसे किसी विशेष उत्पाद के कौन से ब्रांड उपलब्ध हैं इनमें से कौन सा खरीदारों के एक विशेष वर्ग (निम्न आय वर्ग के लोग कहते हैं) द्वारा पसंद किया जाता है और क्यों? इसके अलावा, स्कूल नियमित रूप से सेमिनार, कार्यशालाओं और चर्चाओं का आयोजन कर सकते हैं जहां उद्योग के विशेषज्ञों को भाग लेने और छात्रों के साथ बातचीत करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। उदाहरण के लिए, सफल

उद्यमियों द्वारा अनुभवों को साझा करना छात्र के लिए बहुत रुचि और उपयोगिता का हो सकता है। पांचवां, स्कूलों को वाणिज्य प्रयोगशाला स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है जहां छात्र चार्ट, मॉडल, कंप्यूटर गेम, इंटरनेट पर अन्वेषण आदि के माध्यम से अभ्यास कर सकते हैं। कक्षा में पढ़ाए जाने वाले कुछ व्यावहारिक पहलू संबंधों को मजबूत करने के लिए प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सुझावों में शामिल हैं:

स्कूलों को अपनाने के लिए शिक्षकों के व्यापक प्रशिक्षण और उद्योग को प्रेरित करने का प्रावधान करना ताकि पाठ्यक्रम कुशलता से चल सके। यदि शिक्षकों को नियमित रूप से प्रशिक्षित नहीं किया जाता है, तो वे अपने क्षेत्र में नवीनतम विकास के बारे में ज्ञान और कौशल प्रदान करने में सक्षम नहीं होंगे। साथ ही शिक्षकों की भूमिका तेजी से बदल रही है। उन्हें सूचना की वर्तमान दुनिया और तेजी से बदलते तकनीकी और आर्थिक वातावरण में सूत्रधार की तरह काम करना होगा। इस प्रकार, पाठ्यक्रम को प्रभावी ढंग से चलाने के लिए शिक्षकों का आवधिक प्रशिक्षण बहुत महत्वपूर्ण है। संबंधों के विकास की रणनीति के संबंध में, इस बात पर सहमति है कि उद्योग को स्कूलों के साथ सहयोग करने के लिए राजी किया जाना चाहिए।

वाणिज्य शिक्षण में समसामयिक मुद्दे और चुनौतियाँ
(Contemporary Issues and Challenges in Teaching of Commerce)

1. वाणिज्य एक व्यावसायिक विषय
(Commerce as a vocational subject):

वाणिज्य में व्यावसायिक पाठ्यक्रम

(क) चार्टर्ड अकाउंटेंट्सः यानी सनदी लेखाकार या सी.ए. पाठ्यक्रम के अंतर्गत सैद्धांतिक अध्ययन और व्यावहारिक प्रशिक्षण शामिल होता है। चार्टर्ड अकाउंटेंसी कोर्स भारत में सबसे कठिन व्यावसायिक पाठ्यक्रम समझा जाता है, जिसमें प्रत्येक प्रयास में बैठने वाले उम्मीदवारों का उत्तीर्ण काफी कम होता है। इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स के अंतर्गत चार्टर्ड अकाउंटेंसी कोर्स के विभिन्न स्तरों में 8,74,694 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। चार्टर्ड अकाउंटेंसी परीक्षा 3 स्तरों में विभाजित है:

स्तर- 1: सीपीटी में चार बुनियादी विषय फंडामेंटल्स ऑफ अकाउंटिंग, मर्केंटाइल लॉज, इकोनोमिक्स और क्वांटिटेटिव अप्टिट्यूड शामिल होते हैं। सीपीटी के लिए आप दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद पंजीकरण कर सकते हैं और वरिष्ठ माध्यमिक (12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद परीक्षा दे सकते हैं। सीपीटी उत्तीर्ण करने के लिए किसी उम्मीदवार के लिए यह जरूरी होता है कि उसने 4 खंडों में से प्रत्येक में 30 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों और सम्पूर्ण परीक्षा में मिला कर 50 प्रतिशत अंक हासिल किए हों।

स्तर-2: आईपीसीसी या चार्टर्ड अकाउंटेंसी परीक्षाओं का दूसरा स्तर है। कोई भी उम्मीदवार सीपीटी उत्तीर्ण करने और 9 महीने का अध्ययन करने के बाद आईपीसीसी परीक्षा में बैठ सकता है। आईपीसीसी के 2 समूहों में 7 विषय होते हैं। समूह-1 में 4 विषय और समूह-2 में 3 विषय होते हैं।

स्तर 3: सी.ए. फाइनल परीक्षा चार्टर्ड अकाउंटेंसी परीक्षाओं का अंतिम स्तर होता है। इसे विश्व की कठिनतम परीक्षाओं में से एक समझा जाता है। पिछले 6 महीने की आर्टिकलशिप के दौरान आईपीसीसी के दोनों समूह उत्तीर्ण करने वाला व्यक्ति अंतिम परीक्षा में बैठ सकता है। इस परीक्षा में 2 समूह होते हैं और प्रत्येक समूह के अंतर्गत 4 विषय होते हैं। विद्यार्थी स्नातक परीक्षा के साथ अथवा किसी भी विषय में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सी.ए. पाठ्यक्रम कर सकते हैं।

(ख) चार्टर्ड फाइनेंशियल अनलिसिस (सीएफए):

द इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड फाइनेंशियल अनेलिस्ट्सऑफ इंडिया (आईसीएफएआई) ने 1985 में वित्तीय विश्लेषकों के लिए प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के रूप में सीएफए प्रोग्राम शुरू किया और यह संस्थान भारत में व्यावसायियों की नई पीढ़ी विकसित करने में संलग्न है। 1995 में आईसीएफएआई ने देशभर में आठ स्थानों पर आईसीएफएआई बिजनेस स्कूलों (आईबीएसएस) की स्थापना की थी ताकि विभिन्न विशेषज्ञताओं के साथ प्रबंधन में उच्च कोटि के रोजगारोन्मुखी 2 वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा सके. विभिन्न पत्रिकाओं द्वारा कराए गए स्वतंत्र सर्वेक्षणों के अनुसार पिछले वर्षों के दौरान आईबीएस हैदराबाद 10 शीर्ष बिजनेस स्कूलों में शामिल रहा है।

(ग) आईसीएआई (इंस्टिट्यूट आफ कोस्ट अकाउंटेंट्स आफ इंडिया): इंस्टिट्यूट ऑफ कोस्ट अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया, जिसे पहले इंस्टिट्यूट आफ कोस्ट एंड वर्क्स अकाउंटेंट्स आफ इंडिया (आईसीडब्ल्यूएआई) कहा जाता था, लागत एवं प्रबंधन लेखा विधि के क्षेत्र में भारत में एकमात्र विशेषज्ञतापूर्ण व्यावसायिक निकाय है। इंस्टिट्यूट ऑफ कोस्ट अकाउंटेंट्स किसी उत्पाद या सेवा में शामिल सभी लागतों की गणना करता है, जैसे कच्चा माल, श्रम और प्रशासनिक लागत तथा ऊपरी खर्च में संबंधित लागत, दूसरे शब्दों में लागत लेखाकार किसी संगठन की व्यापार गतिविधियों से संबंधित आंकड़ों को एकत्र, समानुक्रमित और व्याख्यापित करते हुए उन्हें धन के संदर्भ में परिवर्तित करता है। इस तरह यह प्रबंधकीय निर्णयों का मार्गदर्शन करता है और संगठन को अधिकतम लाभ कमाने मेंसक्षम बनाता है।

(घ) कंपनी सचिव: द इंस्टिट्यूट ऑफ कंपनी सेक्रेटरीज ऑफ इंडिया (आईसीएसआई) वह संगठन है, जिसकी स्थापना संसदीय अधिनियम अर्थात् कम्पनी सचिव अधिनियम, 1980 के अंतर्गत की गई थी. यह संगठन भारत में कम्पनी सचिव व्यवसाय के नियमन और विकास से सम्बद्ध है। कम्पनी अधिनियम, 1956 के अनुसार रु. 50 करोड़ रुपये तक चुकता पूंजी वाली सभी कंपनियों के लिए पूर्णकालिक कंपनी सचिव की नियुक्ति करना अनिवार्य है। एक करोड़ से अधिक लेकिन 50 करोड़ रुपये से कम चुकता पूंजी वाली कंपनियों के लिए यह जरूरी है कि वे प्रैक्टिस कर रहे कंपनी सचिव से अनुपालन प्रमाणपत्र प्राप्त करें, जो वार्षिक लेखों से संबद्ध निदेशकों की रिपोर्ट के साथ संलग्न किया जाना चाहिए। इस प्रकार इस व्यवसाय में 2 क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं: पूर्णकालिक रोजगार और पूर्णकालिक प्रैक्टिस। एक सक्रिय निकाय होने के नाते संस्थान विद्यार्थियों के लिए सर्वोत्कृष्ट और उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करता है और सदस्यों के लिए उच्च योग्यता मानक निर्धारित करता है। किसी कंपनी में एक प्रमुख अधिकारी/महत्वपूर्ण प्रबंधकीय कार्मिक होने के नाते विभिन्न कानूनों का विशेषज्ञ होता है। वह निदेशक मंडल के प्रति कोरपोरेट कानून के लिए प्रमुख परामर्शदाता होता है। वह कंपनी में सचिवीय ऑडिट को सहयोग करता है, जिसमें विभिन्न कानूनों जैसे श्रम कानून, कंपनी कानून, पर्यावरण कानून, प्रतिभूति कानून और कंपनी से सम्बद्ध अन्य कानूनों के बारे में उसकी स्वतंत्र राय शामिल होती है.

आईसीएसआई कंपनी सचिव परीक्षा का संचालन करता है, जिसमें ऐसे उच्च स्तरीय व्यवसायी उत्तीर्ण होते हैं जो कंपनी कानूनों, प्रबंधन और प्रशासन में उच्च स्तरीय व्यावसायिक विशेषज्ञता रखते हों. कंपनी सेक्रेटरीशिप कोर्स 3 चरणों में संचालित किया जाता है:

फाउंडेशन प्रोग्रामः माध्यमिक परीक्षा (10+2) उत्तीर्ण करने वाले उम्मीदवार फाउंडेशन पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए पात्र होते हैं.

एग्जीक्यूटिव प्रोग्रामः ललित कलाओं को छोड़ कर किसी भी विषय में स्नातक अथवा फाउंडेशन परीक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थी एग्जिक्यूटिव प्रोग्राम में शामिल होने के पात्र समझे जाते हैं.

प्रोफेशनल प्रोग्रामः एग्जिक्यूटिव परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थी पंजीकरण के पश्चात प्रोफेशनल प्रोग्राम में दाखिल किए जाते हैं.

(ङ) विधिः इन दिनों कानून रोजगार का एक लोकप्रिय विकल्प बन गया है। विधि व्यवसायियों के लिए रोजगार के असंख्य अवसर उपलब्ध हैं, जैसे मुकदमेबाजी, कोरपोरेट काउंसिल, विधि कंपनियों, मीडिया, विधि प्रकाशन, विधि शिक्षा आदि में रोजगार कानून की शिक्षा प्राप्त करने के लिए आपको प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करनी होती है। जो कानून में प्रवेशके लिए विद्यार्थियों का मार्ग प्रशस्त करती है, इन परीक्षाओं में संयुक्त विधि प्रवेश परीक्षा लॉ स्कूल प्रवेश परीक्षा और दिल्ली विश्वविद्यालय विधि परीक्षा जैसी कुछ परीक्षाएं शामिल हैं। राज्य बोर्ड और क्षेत्रीय विधि बोर्ड अक्सर स्वयं की प्रवेश परीक्षाएं आयोजित करते हैं। सीएलएटी और एलएसएटी परीक्षा में 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद बैठा जा सकता है, इन परीक्षाओं में प्राप्त अंकों के आधार पर विधि महाविद्यालय 5 वर्षीय स्नातक विधि पाठ्यक्रमों में दाखिला देते हैं एवं 3 वर्षीय स्नातक विधि पाठ्यक्रम के लिए भी प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाती है जिसमें किसी भी विषय के स्नातक बैठ सकते हैं, संयुक्त विधि प्रवेश परीक्षा (सीएलएटी) एक अखिल भारतीय प्रवेश परीक्षा है जो 16 राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालयों द्वारा बारी बारी से आयोजित की जाती है, जिसके आधार पर वे अपने स्नातक और स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रमों (एलएल.बी और एलएल.एम) मेंदाखिला देते हैं।

(च) बीमाः वाणिज्य विद्यार्थियों के लिए बीमा क्षेत्रसर्वाधिक आकर्षक क्षेत्रों में से एक है, व्यापार गतिविधियों में निरंतर बढ़ोत्तरी और विदेशी बीमा कंपनियों के भारत में प्रवेश को देखते हुए बीमा क्षेत्र उन वाणिज्य विद्यार्थियों के लिए आकर्षक अवसर उपलब्ध कराता है जिन्होंने समुचित जानकारी और प्रशिक्षण प्राप्त किया हो. विश्वविद्यालय और प्राइवेट संस्थान बीमा विज्ञान और बीमा में स्नातक पाठ्यक्रम संचालित करते है। द एक्चुरियल सोसायटी ऑफ इंडिया क्वालिफाइंग परीक्षा का संचालन करता है, जबकि एमिटी विश्वविद्यालय सहित कुछ संस्थान भी अब जोखिम और बीमा प्रबंधन में प्रशिक्षण प्रदान करने लगे हैं।

2. वाणिज्य में अर्न्त-सांस्कृतिक दृष्टिकोण और मुद्दे (Cross-cultural perspectives and issues in commerce):

अन्तर-सांस्कृतिक भावना का अर्थ ऐसे दृष्टिकोण के विकास से है जिसके अनुसार व्यक्ति अपनी निजी संस्कृति के संकीर्ण दृष्टिकोण से ऊपर उठकर अपने देश तथा विश्व की विभिन्न संस्कृतियों के उन समान तत्वों की खोज कर डालता है। जिनके द्वारा किसी देश की विभिन्न संस्कृतियों को एक राष्ट्रीय संस्कृति में बाँधा जा सकता है। ऐसे व्यापक दृष्टिकोण के विकसित हो जाने से व्यक्ति अन्य सभी समूहों एवं सम्प्रदायों के आदर्शों, मूल्य, रीति-रिवाजों तथा परम्पराओं एवं वेश-भूषा और भाषा को समझने का प्रयास करता है। परिणामस्वरूप वह किसी संस्कृति के तुच्छ एवं घ्रणित दृष्टि से देखते हुए सभी संस्कृतियों का आदर और सम्मान करने लगता है। संक्षेप में अन्तर-सांस्कृतिक भावना विकसित हो जाने से व्यक्ति हर प्रकार के सांस्कृतिक भेद-भावों तथा लड़ाई-झगड़ों से ऊपर उठ जाता है, जिससे राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय एकता बनती रहती है।

अन्तर-सांस्कृतिक भावना के विकास की आवश्यकता -हमारा देश एक विशाल देश है। यहां पर विभिन्न समूहों एवं सम्प्रदायों के लोग निवास करते हैं। इन सभी समूहों तथा सम्प्रदायों की वेश-भषा, रहन-सहन, रीति-रिवाज एवं खान-पान के ढंग अलग-अलग हैं। इस सांस्कृतिक विभिन्नता के कारण इन सभी समूहों तथा सम्प्रदायों में परस्पर मत भेद एवं मनमुटाव बना रहता है। यह मन मुटाव राष्ट्रीय एकता के मार्ग में एक बहुत बड़ी बाधा है। इस बाधा से समस्त देश में चारों ओर अशान्ति बनी रहती है जिससे देश की सामाजिक तथा आर्थिक उन्नति नहीं हो पाती।

ऐसी दशा में आवश्यक है कि यहां के सभी समूहों में अन्तर-सांस्कृतिक दृष्टिकोण को विकसित किया जाये जिससे विभिन्न संस्कृतियों के लोगों में परस्पर भेद-भाव, द्वेष तथा कट्टरता समाप्त हो जाये और सबमें परस्पर भाई चारे एवं सहयोग की भावना विकसित हो जाये। अन्तर-सांस्कृतिक भावना का विकास इसलिए भी आवश्यक है कि हमारे देश में अल्प-संख्यकों की भी एक बहुत बड़ी संख्या रहती है। इन सबकी भी संस्कृतियाँ अलग-अलग है जिसके कारण इन सबमें भी आपसी मनमुटाव बना रहता है। यह मनमुटाव जनतंत्र की सफलता के मार्ग में बाधक है।

भारतीय जनतंत्र को सफल बनाने के लिए मन-मुटाव का अन्त करना परम आवश्यक है जो केवल अन्तर-सांस्कृतिक भावना के विकास द्वारा ही सम्भव है। ध्यान देने की बात है कि भारत तथा अन्य राष्ट्रों में केवल सांस्कृतिक भेद-भाव के आधार पर ही झगड़े होते हैं। इन लड़ाई झगड़ों में जहाँ एक ओर हजारों नागरिकों का रक्तपात होता है वहाँ दूसरी ओर राष्ट्रभी उन्नति की दौड़ में पिछड़ जाता है। यदि सभी लोगों में अन्तर-सांस्कृतिक दृष्टिकोण विकसित हो जाये तो राष्ट्र सबल तथा सुदृढ़ बन जायेगा एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना भी विकसित हो जायेगी।

शिक्षा तथा अन्तर-सांस्कृतिक भावना-

अन्तर सांस्कृतिक भावना को विकसित करने के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली साधन है। शिक्षा के द्वारा हम बालक को जैसा चाहें वैसा ही बना सकते हैं। अतः शिक्षा के द्वारा

हमें बालकों के सामने ऐसा वातावरण उपस्थित करना चाहिए जिससे रहते हुए वे दूसरी संस्कृतियों को समझ सकें तथा आदर कर सकें। दूसरे शब्दों में, हमारी शिक्षा को बालकों में ऐसी प्रवृत्तियों का विकास करना चाहिए जिससे वे अन्य सभी समूहों के साथ परस्पर सहयोग के साथ रहते हुए एक नवीन संस्कृति का विकास कर सकें। संक्षेप में, शिक्षा बालकों के व्यवहार में इस प्रकार से परिवर्तन करे कि वे विभिन्न संस्कृतियों को समझकर उनकी सराहना कर सकें।

बालकों अन्तर-सांस्कृतिक भावना को विकसित करने के लिए शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान है। परन्तु ध्यान देने की बात है कि अन्तर-सांस्कृतिक भावना को केवल वही शिक्षक विकसित कर सकते हैं जिनका दृष्टिकोण स्वयं व्यापक हो तथा जिसे अपने विषय के ज्ञान के अतिरिक्त अन्य सभी समूहों की संस्कृति का पूर्ण ज्ञान हो। इस दृष्टि से अन्तर- सांस्कृतिक भावना विकसित करने के लिए शिक्षक ऐसा होना चाहिए जो संकीर्ण विचारों एवं विश्वासों से ऊपर उठकर किसी संस्कृति के प्रति ईर्ष्या तथा द्वेष न रखते हुए सभी संस्कृतियों के प्रति सद्विचार एवं सद्भावना रखता है। उक्त गुणों से ओत-प्रोत शिक्षक इस उद्देश्य को आसानी से प्राप्त कर सकता है।

अन्तर-सांस्कृतिक भावना को विकसित करने के लिए निम्नलिखित शैक्षिक कार्यक्रम होना चाहिए-

1. उस सभी सुझावों को कार्यरूप में परिणत किया जाये जो राष्ट्रीय एकता तथा भावात्मक एकता के लिए दिए गए हैं।
2. पाठ्यक्रम में ऐसे विषयों को सम्मिलित किया जाय जिनके अध्ययन से अन्तर-सांस्कृतिक भावना का विकास हो सके।
3. छात्रों के सामने ऐसा वातावरण प्रस्तुत किया जाये कि उनको विभिन्न संस्कृतियों का ज्ञान हो जाये।
4. राष्ट्र भाषा को अनिवार्य कर दिया जाये। इससे राष्ट्र के सभी बालक एक-दूसरे के विचारों को समझ सकेंगे। परिणामस्वरूप वे अपने आपको एक ही राष्ट्रका अंग समझते हुए भारतीय संस्कृति से प्रेम करने लगेंगे।
5. स्कूलों में सांस्कृतिक गोष्ठियों का आयोजन किया जाये।
6. अपने तथा अन्य देशों के प्रसिद्ध व्यक्तियों के भाषण कराये जायें। इससे बालकों को विभिन्न संस्कृतियों का ज्ञान हो सकेगा।
7. स्कूलों में किसी विशेष धर्म की शिक्षा न दी जाये।
8. शिक्षकों, लेखकों, कलाकारों तथा सांस्कृतिक-मंडलियों को राष्ट्र के विभिन्न भागों एवं विदेशों में भ्रमण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाये।

3. वाणिज्य शिक्षण में विभिन्न चुनौतियाँ (Various Challenges in teaching of commerce):

शिक्षण सहायक सामग्री, पुस्तकों, मूल्यांकन प्रणाली और संकाय विकास कार्यक्रम से संबंधित विभिन्न चुनौतियां हैं जो वाणिज्य शिक्षकों के शिक्षण को प्रभावित करते हैं।

1. शिक्षकों के लिए उचित शिक्षण सहायक सामग्री जैसे वाणिज्य प्रयोगशाला उपलब्ध होनी चाहिए और उनके द्वारा उपयोग की जानी चाहिए।
2. शोध पुस्तकों के अनुसार बिजनेस स्टडी और कॉमर्स से जुड़ी किताबों में और सुधार की जरूरत है।
3. छात्रों की मानसिक क्षमता के अनुसार उनके सीखने और आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए शिक्षकों द्वारा विभिन्न मूल्यांकन पद्धति का उपयोग किया जाना चाहिए।
4. स्कूलों द्वारा वाणिज्य शिक्षकों को फील्ड ट्रिप और किसी बाहरी परियोजना के आयोजन के संबंध में अधिक शक्ति प्रदान की जानी चाहिए।
5. विद्यालयों को शिक्षकों को संकाय विकास कार्यक्रम, संगोष्ठी, कार्यशाला आदि के माध्यम से वाणिज्य क्षेत्र में दिन-प्रतिदिन परिवर्तन के अनुसार अपने ज्ञान में सुधार और वृद्धि के संबंध में विभिन्न सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए।
6. कम्प्यूटर तथा इंटरनेट की सुविधा अध्यापकों तथा विद्यार्थियों हेतु उपलब्ध की जाएताकि शिक्षक छात्रों को बेहतर और नवीनतम जानकारी प्रदान कर सकें।

सन्दर्भ सूची–

1. जैन, डॉ. के. सी. एस. (2008). *वाणिज्य शिक्षण.* जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
2. सक्सेना, डॉ. निर्मल (2007). *अर्थशास्त्र शिक्षण.* जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
3. सुखिया, श्रीमती एस. पी. (1997). *विद्यालय प्रशासन, संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा.* आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. सिंह, डॉ. कर्ण एवं शुक्ल, डॉ. प्रभात (2018). *वाणिज्य शिक्षणविधि.* लखीमपुर खीरीः गोविन्द प्रकाशन।